3 राजधानी
जंतर मंतर पर पहलवानों ने मनाया काला दिवस

6 अभिमत
बेहतर जन विश्वास विधेयक जरूरी

11 राष्ट्रीय
अग्निवीरों को रेलवे की नौकरियों में आरक्षण

12 स्पोर्ट्स
विश्वकप में दिव्या-सरबजोत ने लगाया सोने पर निशाना

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 11 अंक 185
नई दिल्ली, शुक्रवार, 12 मई, 2023
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

व्हाइट हाउस में नई भूमिका को लेकर उत्साहित हूं : नीरा

विदेश-10

शिंदे महाराष्ट्र के सीएम बने रहेंगे: सुप्रीम कोर्ट

● अदालत ने कहा, उद्धव ठाकरे ने बहुमत साबित करने से पहले त्यागपत्र दिया, लिहाजा एमवीए सरकार बहाल नहीं हो सकती

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पत्रकारों को संबोधित करते देवेंद्र फडणवीस और एकनाथ शिंदे

उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली तत्कालीन महा विकास आघाड़ी (एमवीए) सरकार को बहाल नहीं कर सकता क्योंकि उन्होंने पिछले साल जून में शक्ति परीक्षण का सामना किए बिना इस्तीफा दे दिया था। इस फैसले के साथ महाराष्ट्र सरकार पर मंडरा रहा खतरा टल गया है और एकनाथ शिंदे मुख्यमंत्री के रूप में बने रहेंगे।

अदालत ने महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी की भी खिंचाई की और कहा कि उनके पास इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए ऐसी सामग्री नहीं थी कि तत्कालीन मुख्यमंत्री ठाकरे ने सदन का विश्वास खो दिया था। शिवसेना में शिंदे गुट की बगावत के बाद तीन दलों वाली एमवीए सरकार के गिरने के कारण राजनीतिक संकट से संबंधित याचिकाओं पर सर्वसम्मति से फैसले में, प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच-न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने कहा कि महाराष्ट्र विधानसभा में शिंदे गुट के भरत गोगावले को शिवसेना के व्हिप के रूप में नियुक्त करने का तत्कालीन विधानसभाध्यक्ष का निर्णय कानून के विपरीत (शेष पेज 9)

कोर्ट के फैसले पर फडणवीस ने संतोष जताया

मुंबई। महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने महाराष्ट्र में पिछले साल शिवसेना केंद्रित राजनीतिक संकट पर उच्चतम न्यायालय के फैसले पर बृहस्पतिवार को पूर्ण संतोष व्यक्त किया। फडणवीस ने संवाददाताओं से कहा, मैं उच्चतम न्यायालय के फैसले पर पूर्ण संतुष्टि व्यक्त करता हूं। जो लोग अनुमान लगा रहे थे कि यह सरकार आज गिर जाएगी, वे (फैसले से) चुप हो गए हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता ने कहा कि मैं मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के साथ फैसले पर विस्तार से टिप्पणी करूंगा।

शिंदे व फडणवीस में नैतिकता है तो इस्तीफा दें: उद्धव

मुंबई। शिव सेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने बृहस्पतिवार को कहा कि अगर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस में नैतिकता है तो दोनों नेताओं को उसी प्रकार इस्तीफा दे देना चाहिए, जिस प्रकार उन्होंने पिछले साल मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने कहा कि न्यायालय के फैसले से लोकतंत्र में भरोसा बहाल हुआ है। ठाकरे ने उन्हें शक्ति परीक्षण के लिए बुलाने को लेकर तत्कालीन राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी की आलोचना की।

दिल्ली सरकार को मिली नौकरशाहों की कमान

● सुप्रीम कोर्ट का महत्वपूर्ण फैसला, लोक व्यवस्था, पुलिस और भूमि मामलों को छोड़ अन्य सेवाएं सरकार के नियंत्रण में, कैबिनेट की सलाह से काम करेंगे एलजी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली में प्रशासनिक अधिकारों की कानूनी लड़ाई में आम आदमी पार्टी की सरकार को बड़ी राहत मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने बृहस्पतिवार को सर्वसम्मति से फैसला दिया कि लोक व्यवस्था, पुलिस और भूमि जैसे विषयों को छोड़कर अन्य सेवाओं पर दिल्ली सरकार के पास विधाई तथा प्रशासकीय नियंत्रण रहेगा। अदालत ने कहा कि नौकरशाहों की कमान निर्वाचित सरकार के पास होगी।

यानी आईएएस स्तर तक के अधिकारियों की पोस्टिंग-ट्रांसफर से लेकर काम कराने का अधिकार दिल्ली सरकार के पास रहेगा। इस महत्वपूर्ण फैसले के साथ वर्षों से चली आ रही केंद्र बनाम दिल्ली सरकार की आपसी खींचतान समाप्त होने की संभावना है। सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली संविधान पीठ ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली का दर्जा विशेष प्रकार का है। पीठ ने न्यायाधीश अशोक भूषण के 2019 के उस फैसले से असहमति जताई कि दिल्ली सरकार के पास सेवाओं पर कोई अधिकार नहीं है। संविधान पीठ में न्यायमूर्ति एम आर शाह, न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी, न्यायमूर्ति हिमा कोहली और न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा भी शामिल रहे। विशेष यह कि फैसला पांचों जजों ने सर्वसम्मति से सुनाया। शीर्ष न्यायालय ने केंद्र तथा दिल्ली सरकार के बीच सेवाओं पर प्रशासनिक नियंत्रण के विवादित मुद्दे पर अपने फैसले में कहा कि केंद्र की शक्ति का कोई और विस्तार संवैधानिक योजना के प्रतिकूल होगा। दिल्ली अन्य राज्यों की तरह ही है और उसकी भी एक चुनी हुई सरकार की व्यवस्था है। उच्चतम न्यायालय ने 105 पन्ने के अपने आदेश में कहा कि सूची-2 के विशेष उल्लेखों (लोक व्यवस्था, पुलिस और भूमि) को छोड़कर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एनसीटीडी) की विधानसभा के पास सूची-2 और सूची-3 का नियंत्रण है।

शीर्ष अदालत ने कहा कि सहकारी संघवाद की भावना के मद्देनजर केंद्र को संविधान द्वारा तय सीमाओं के भीतर अपनी शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए। एक विशेष प्रकार का संघीय ढांचा होने के नाते एनसीटीडी को संविधान द्वारा इसे प्रदत्त कार्यक्षेत्र में कार्य करने की अनुमति दी जानी चाहिए। केंद्र और एनसीटीडी एक अद्वितीय संघीय संबंध साझा करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि एनसीटीडी को संघ की इकाई में केवल इसलिए शामिल किया गया है, क्योंकि यह राज्य नहीं है। सर्वसम्मति वाले इस फैसले में दिल्ली सरकार की शक्तियों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा गया है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) या संयुक्त कैडर सेवाओं जैसी सेवाओं से जुड़ी विधाई और कार्यकारी शक्तियां दिल्ली सरकार के अधीन हैं, जो कि दिन-प्रतिदिन के प्रशासन के संदर्भ में दिल्ली सरकार की नीतियों और दृष्टिकोण के कार्यान्वयन के लिए प्रासंगिक हैं। आम आदमी पार्टी ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को अपनी जीत बताया है। आप नेता (शेष पेज 9)

बंधे हुए थे हाथ, अब काम में आएगी तेजी: केजरीवाल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिल्ली की सेवाओं का प्रशासन राष्ट्रीय राजधानी सरकार को दिए जाने के फैसले के बाद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बृहस्पतिवार को कहा कि अब यहां काम में तेजी आएगी, क्योंकि पहले उनके हाथ बंधे हुए थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल होगा। उन्होंने चेतावनी दी कि जनता के कार्यों को बाधित करने वाले अधिकारियों को नतीजे भुगतने होंगे। इसी के साथ उन्होंने पहली कार्रवाई करते हुए सेवा विभाग के सचिव आशीष मोरे को पद से हटा दिया। दिल्ली सचिवालय में मंत्रिमंडल की बैठक के बाद आयोजित संवाददाता सम्मेलन में केजरीवाल ने कहा कि जिन अधिकारियों ने जनता के कार्यों को बाधित किया, उन्हें हटाया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि वह शिक्षा और स्वास्थ्य की तरह ही दिल्ली में कुशल प्रशासन का मॉडल पेश करेंगे। दिल्ली जल बोर्ड के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एके सिंह मोरे का स्थान लेंगे। एके सिंह भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के 1995 बैच एजीएमयूटी कैडर के अधिकारी हैं।

उप्र निकाय चुनाव: दूसरे चरण में 53% मतदान

● गौतमबुद्ध नगर में 57 और गाजियाबाद में 45.52 प्रतिशत लोगों ने वोट डाले

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा/लखनऊ

उत्तर प्रदेश में नगरीय निकाय चुनाव के अंतिम चरण में बृहस्पतिवार को नोएडा और गाजियाबाद समेत 38 जिलों में छिटपुट घटनाओं और विपक्षी दलों के फर्जी मतदान की शिकायतों के बीच आमतौर पर चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न हो गया। राज्य में 53 प्रतिशत मतदाताओं ने मतदान किया। गौतमबुद्ध नगर में 57 और गाजियाबाद में 45.52 प्रतिशत लोगों ने वोट डाले। अनेक मतदान केंद्रों पर पांच बजे के बाद भी लंबी लाइनें लगी थीं, इसलिए मतदान प्रतिशत बढ़ सकता है।

राज्य निर्वाचन आयोग के मुताबिक प्रदेश के मेरठ, हापुड़, गौतमबुद्ध नगर, गाजियाबाद, बागपत, बुलन्दशहर, बरेली, बदायूं, शाहजहांपुर, पीलीभीत, अलीगढ़, हाथरस, कासगंज, एटा, कानपुर नगर, कानपुर देहात तथा अमेठी समेत 38 जिलों में बृहस्पतिवार सुबह सात बजे से मतदान शुरू हुआ और शाम पांच बजे के बाद भी केंद्रों पर लंबी लाइनें देखी गईं। गौतमबुद्ध नगर की चार नगर पंचायत और एक नगर पालिका के लिए चुनाव हुए हैं। जिले में मतदान को लेकर लोग काफी जागरूक दिखाई है। सुबह से ही जिले के सभी पोलिंग बूथ पर मतदाताओं की लंबी लाइनें लगी हुई थीं।

दूसरी ओर गाजियाबाद में गाजियाबाद में मतदान की शुरुआत तो तेज हुई, लेकिन तीन बजते-बजते यह गति बहुत मंद पड़ गई। मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी (सपा) ने कई ट्वीट कर कन्नौज के गुरसहायगंज मतदान केंद्र पर सत्तारूढ़ भाजपा के कार्यकर्ताओं द्वारा फर्जी मतदान का आरोप लगाया और चुनाव आयोग से इस पर संज्ञान लेने की अपील की। बुलंदशहर में फर्जी मत डालने पहुंचे 100 से अधिक लोगों को गिरफ्तार (शेष पेज 9)

ईपीएफओ की उच्च पेंशन के लिए सहमति देने को मिलेगा तीन माह का समय

नई दिल्ली(भाषा)। उच्च पेंशन का विकल्प चुनने वाले कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) की पेंशन योजना के अंशधारकों और पेंशनभोगियों को अतिरिक्त योगदान या बकाया देने को लेकर अपनी सहमति जताने के लिए तीन महीने का समय दिया जाएगा। एक आधिकारिक परिपत्र में बृहस्पतिवार को यह कहा गया। इससे पहले, पिछले साल नवंबर में उच्चतम न्यायालय ने सरकार से अंशधारकों को उच्च पेंशन का विकल्प चुनने के लिए चार महीने का समय देने को कहा था। ईपीएफओ ने अंशधारकों को उच्च पेंशन का विकल्प चुनने के लिए नियोक्ताओं के साथ संयुक्त विकल्प फॉर्म भरने के लिए ऑनलाइन सुविधा उपलब्ध कराई है। इसके लिए समयसीमा पहले तीन मई, 2023 थी, जिसे बढ़ाकर 26 जून, 2023 कर दिया गया है। अभी इस बात को लेकर चीजें साफ नहीं है कि उच्च पेंशन का विकल्प चुनने पर कैसे अतिरिक्त योगदान का विकल्प काम करेगा और (शेष पेज 9)

पाक सुप्रीम कोर्ट ने इमरान की गिरफ्तारी को अवैध बताया

● तत्काल रिहाई का आदेश दिया

भाषा। इस्लामाबाद, संरा

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को उच्चतम न्यायालय ने बड़ी राहत देते हुए उनकी गिरफ्तारी को गैर कानूनी करार दिया और उन्हें तत्काल रिहा करने का आदेश दिया। इससे पहले शीर्ष अदालत के निर्देश पर खान को उसके समक्ष पेश किया गया। इस बीच, संयुक्त राष्ट्र ने पाकिस्तान के सुरक्षाबलों से संयम बरतने की अपील की है जबकि पाकिस्तान के राष्ट्रपति आरिफ अल्वी ने पूरे घटनाक्रम पर स्तब्धता जताई है। उच्चतम न्यायालय में प्रधान न्यायाधीश उमर अता बंदियाल, न्यायमूर्ति मुहम्मद अली मजहर और न्यायमूर्ति अतहर मिनल्लाह की तीन सदस्यीय पीठ ने पूर्व प्रधानमंत्री खान को रिहा करने का फैसला उनको इस्लामाबाद उच्च न्यायालय द्वारा गिरफ्तार करने के आदेश के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए सुनाया। पीठ ने अल-कादिर ट्रस्ट मामले में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान की गिरफ्तारी के खिलाफ उनकी याचिका पर सुनवाई करते हुए इस्लामाबाद उच्च न्यायालय परिसर में अर्धसैनिक रेंजर्स द्वारा जिस तरीके से हिरासत में लिया गया उसपर नाराजगी जताई।

इससे पहले, न्यायालय ने भ्रष्टाचार रोधी निगरानी संस्था राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) को इमरान खान को एक घंटे के भीतर शाम साढ़े चार बजे (स्थानीय समयानुसार) पेश करने का निर्देश दिया था। खान को अदालत के समक्ष कड़ी सुरक्षा के बीच पेश किया गया। जैसे ही वह अदालत कक्ष (शेष पेज 9)

पांच करोड़ से अधिक कारोबार वाली कंपनियों को निकालना होगा ई-चालान

नई दिल्ली(भाषा)। पांच करोड़ रुपए से अधिक के कारोबार वाली कंपनियों को आगामी पहली अगस्त से बी2बी लेनदेन के लिए इलेक्ट्रॉनिक या ई-इन्वॉयस (चालान) निकालना होगा। अभी तक 10 करोड़ या अधिक के कारोबार वाली इकाइयों को बी2बी लेनदेन के लिए ई-चालान निकालना होता है। वित्त मंत्रालय की 10 मई को जारी अधिसूचना के अनुसार, बी2बी लेनदेन के लिए ई-चालान निकालने की सीमा को 10 करोड़ से घटाकर पांच करोड़ रुपए कर दिया गया है। यह व्यवस्था एक अगस्त से लागू होगी। डेलॉयट इंडिया के भागीदार, अप्रत्यक्ष कर-लीडर महेश जयसिंह ने कहा कि इस घोषणा के साथ ई-चालान के तहत सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) का दायरा बढ़ जाएगा और उन्हें ई-चालान लागू करने की आवश्यकता होगी। एएमआरजी एंड एसोसिएट्स के वरिष्ठ भागीदार रजत मोहन ने कहा कि ई-चालान के चरणबद्ध क्रियान्वयन से अड़चनें कम हुई हैं, अनुपालन में (शेष पेज 9)

पवार-उद्धव से मिले नीतीश विपक्षी एकता पर चर्चा

पायनियर समाचार सेवा। मुंबई

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के प्रमुख शरद पवार ने अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों की एकता को मजबूत करने के प्रयासों पर बृहस्पतिवार को चर्चा की। दोनों नेताओं ने यह जानकारी दी। कुमार बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के साथ दक्षिण मुंबई स्थित पवार के आवास गए।

उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जो कर रही है, वह देश हित में नहीं है। इससे पहले कुमार ने शिवसेना (यूबीटी) अध्यक्ष उद्धव ठाकरे से उनके बांद्रा स्थित आवास पर जाकर मुलाकात की थी। पवार ने कहा कि यह चर्चा संयक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) के तहत है और हम एकसाथ हैं एवं और पार्टियों को समूह से जोड़ रहे हैं। कुमार ने कहा कि वे देश में वृहद गठबंधन बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, हम सभी हितधारकों से चर्चा करेंगे और इसका नया नाम दे सकते हैं। यह पूछे जाने पर (शेष पेज 9)

तीसरे मोर्चे का अभी सवाल नहीं: पटनायक

नई दिल्ली। ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने बृहस्पतिवार को कहा कि अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में उनकी पार्टी बीजू जनता दल (बीजद) अपने बूते मैदान में उतरेगी जैसा कि उसने हमेशा किया है। अपने राज्य से जुड़े विकास के मुद्दों पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ बैठक के बाद राष्ट्रीय राजधानी में मीडिया से बात करते हुए पटनायक ने कहा कि नीतीश कुमार का भुवनेश्वर आकर उनसे मिलना एक शिष्टाचार भेंट थी। उन्होंने कांग्रेस और भाजपा दोनों से समान दूरी बनाए रखने की अपनी पार्टी की स्थिति को एक बार फिर से दोहराया। कुमार के साथ उनकी बैठक और (शेष पेज 9)

क्विक न्यूज

तिहाड़ जेल के 99 कर्मियों का तबादला

नई दिल्ली। दिल्ली की तिहाड़ जेल के 90 से अधिक अधिकारियों का बृहस्पतिवार को तबादला कर दिया गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। तिहाड़ जेल के अंदर की गैंगस्टर टिल्लू ताजपुरिया की एक कथित प्रतिद्वंद्वी गिरोह के सदस्यों द्वारा हत्या किए जाने के बाद बड़े पैमाने पर अधिकारियों के तबादले किए गए हैं। एक अधिकारी के मुताबिक महानिदेशक (जेल) संजय बेनीवाल ने सहायक अधीक्षक, उपाधीक्षक, प्रधान वार्डर और वार्डर सहित 99 अधिकारियों के तबादले के आदेश दिए हैं। आगामी कुछ दिनों में और अधिक अधिकारियों के तबादले होने का अनुमान है। तिहाड़ जेल के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार ताजपुरिया हत्याकांड को प्रशासन ने गंभीरता से लिया था। इसके परिणामस्वरूप चीजों को सुव्यवस्थित करने और जमीनी स्तर पर बदलाव की आवश्यकता भी महसूस की गई। जेल अधिकारी ने कहा कि यह कदम एक मजबूत संदेश देने के लिए उठाया गया है कि कर्तव्यों का पालन करने में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

भ्रष्टाचार के खिलाफ पदयात्रा पर निकले पायलट

● कांग्रेस ने कार्यक्रम को निजी बताया, कहा, पार्टी पर इससे कोई असर नहीं, गहलोत को बताया जन-जन का मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। जयपुर

राजस्थान विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने पूर्ववर्ती भाजपा सरकार में हुए भ्रष्टाचार की जांच की मांग को लेकर अपनी पांच दिवसीय जन संघर्ष पदयात्रा बृहस्पतिवार दोपहर को अजमेर से शुरू कर दी।

इस यात्रा को चुनाव से ऐन पहले प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और कांग्रेस आलाकमान पर दबाव बढ़ाने के तौर पर देखा जा रहा है। इस बीच, कांग्रेस ने पायलट की पदयात्रा को निजी बताया और कहा कि इससे पार्टी पर कोई असर नहीं पड़ेगा। यही नहीं, पार्टी ने अशोक गहलोत का समर्थन करते हुए कहा कि वह जन-जन के मुख्यमंत्री हैं। यात्रा शुरू करने से पहले पायलट ने अजमेर में जयपुर रोड पर अशोक उद्यान के पास एक सभा की। इसमें उन्होंने कहा कि यात्रा किसी व्यक्ति विशेष के विरोध में नहीं बल्कि भ्रष्टाचार के खिलाफ है।

अपनी आवाज उठाने, आपकी आवाज सुनने और जनता की आवाज बनने के लिए यह यात्रा निकाली जा रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने कर्नाटक विधानसभा चुनाव में भ्रष्टाचार का मुद्दा उठाया, इसलिए उसे वहां बहुमत मिलने वाला है। यह यात्रा अजमेर से शुरू होकर जयपुर की ओर आएगी और लगभग 125 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। पहले दिन रात्रि विश्राम किशनगढ़ के तोलामल गांव में होगा। दिवंगत पिता राजेश पायलट व मां रमा पायलट के राजनीतिक जीवन का जिक्र करते हुए सचिन पायलट ने कहा कि हमारी निष्ठा और ईमानदारी पर हमारे विरोधी भी उंगली नहीं उठा सकते।

पूर्व उपमुख्यमंत्री ने पेपर लीक और राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) के सदस्य बाबूलाल कटारा की गिरफ्तारी के मुद्दे पर भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर निशाना साधा और पूछा कि कटारा की संपत्ति पर बुलडोजर क्यों नहीं चलाया गया, जबकि इसी मामले में एक अन्य आरोपी की जयपुर स्थित संपत्ति पर बुलडोजर चला था। इसके साथ ही पायलट ने पेपर लीक प्रकरण व वसुंधरा राजे के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती भाजपा सरकार के कथित भ्रष्टाचार के मामलों में कार्रवाई नहीं किए जाने का मुद्दा उठाया। पायलट की इस जन संघर्ष यात्रा के पोस्टर में पायलट की मुट्ठी बांधे संबोधित करने की तस्वीर है। पोस्टर के ऊपरी हिस्से में महात्मा गांधी, भीमराव (शेष पेज 9)

प्रौद्योगिकी प्रगति को गति देने का उपकरण: मोदी

● प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री ने 5,800 करोड़ रुपए से अधिक की कई वैज्ञानिक परियोजनाओं की आधारशिला रखी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रौद्योगिकी दिवस पर एक प्रदर्शनी में छात्रा से बातचीत करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पोकरण में 1998 में हुए परमाणु परीक्षण को भारत के इतिहास के सबसे गौरवशाली दिनों में से एक बताते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि देश के लिए प्रौद्योगिकी अपना दबदबा कायम करने का माध्यम नहीं बल्कि देश की प्रगति को गति देने का एक उपकरण है।

पोकरण परीक्षण की वर्षगांठ के मौके पर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर यहां प्रगति मैदान में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि उनकी सरकार ने प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल सशक्तिकरण के स्रोत के रूप में और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए किया है। मोदी ने कहा कि पोकरण परमाणु परीक्षण के जरिए भारत ने ना केवल अपने वैज्ञानिक सामर्थ्य को साबित किया बल्कि इसने भारत के वैश्विक कद को एक नई ऊंचाई भी दी। उन्होंने कहा, अटल जी के शब्दों में ही कहूं तो- अपनी ध्येय-यात्रा में, हम कभी रुके नहीं हैं। किसी चुनौती के समक्ष, कभी झुके नहीं हैं।

इससे पहले, प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर यहां प्रगति मैदान में आयोजित एक कार्यक्रम का उद्घाटन किया और 5,800 करोड़ रुपए से अधिक की कई वैज्ञानिक परियोजनाओं की आधारशिला रखी। प्रधानमंत्री ने जिन परियोजनाओं की आधारशिला रखी, उनमें लेजर टरफेरोमीटर ग्रैविटेशनल वेव ऑब्जर्वेटरी-इंडिया (एलआईजीओ-इंडिया), होमी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र, जतनी, ओडिशा और टाटा मेमोरियल अस्पताल के मुंबई का प्लैटिनम जुबली ब्लॉक शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि चाहे जनधन, आधार और मोबाइल की तिकड़ी हो, कोविन पोर्टल हो या किसानों के लिए डिजिटल बाजार हो, उनकी सरकार ने प्रौद्योगिकी को समावेश के एजेंट के रूप में इस्तेमाल किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर उनकी सरकार के जोर ने एक बड़े बदलाव की शुरुआत की है। उन्होंने कहा, आज भारत, एक नई सोच के साथ, 360 डिग्री समग्र रुख के साथ इस क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। भारत प्रौद्योगिकी पर अपना दबदबा कायम करने का माध्यम नहीं बल्कि देश की प्रगति को गति देने का एक उपकरण मानता है। उन्होंने कहा कि 10 साल पहले सालाना (शेष पेज 9)

गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद में मतदाताओं में दिखा उत्साह

कड़ी सुरक्षा के बीच निकाय चुनाव संपन्न, युवा व महिलाओं की रही लंबी कतारें

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद में नगर निगम चुनाव बृहस्पतिवार को शांतिपूर्वक संपन्न हो गया। दोनों जिलों में मतदाताओं की लंबी कतारें दिखने को मिली। वहीं मतदान के दौरन युवाओं और महिलाओं में खासा उत्साह देखने को मिला।

गौतमबुद्ध नगर में नोएडा, नगर पालिका दादरी और चार नगर पंचायत जेवर, दनकौर, बिलासपुर और जहांगीरपुर में दूसरे चरण के लिए मतदान किया गया। इस मतदान को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद नजर आया। गौतमबुद्ध नगर को जिला और पुलिस प्रशासन द्वारा करीब 16 सेक्टरों में बांटा गया था। सुरक्षा की दृष्टि से पीएसी की चार कंपनियों को भी गौतमबुद्ध नगर में तैनात किया गया। इसके अलावा करीब तीन हजार से अधिक पुलिसकर्मियों को भी मतदान केंद्रों पर पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह के दिशा-निर्देश पर तैनात किया गया। दादरी में मतदान को लेकर मतदाताओं के बीच काफी उत्साह नजर आया।

दादरी में सुबह से ही मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की लंबी कतार देखने को मिल रही थी। दादरी में 35 मतदान केंद्र बनाए गए थे। जबकि 166 मतदान स्थल जिला प्रशासन द्वारा बनाए गए थे। एक नगर पालिका और चार नगर पंचायत में कुल 72 वार्ड में दूसरे चरण का मतदान किया गया। वहीं, रबूपुरा नगर पंचायत में नगर अध्यक्ष और सभी सभासद निर्विरोध पहले ही जिला प्रशासन द्वारा निर्वाचित किए जा चुके हैं।

तीन दर्जन से अधिक बूथों पर ईवीएम खराब

गाजियाबाद। नगर-निकाय चुनाव के लिए सुबह 7 बजे से शुरू तो हो गया था, लेकिन कुछ देर बाद ही कई बूथों पर लगभग 3 दर्जन से अधिक बूथों पर ईवीएम खराब हो गईं। इस कारण मतदान एक से डेढ़ घंटे तक बाधित रहा। दोबारा मतदान शुरू कराने के लिए इंजीनियरों ने मौके पर पहुंचकर ईवीएम मशीनों को ठीक किया। कई जगहों पर तो ईवीएम के रिप्लेसमेंट के बाद भी मतदान शुरू नहीं हो सका, तो कई स्थानों पर 9: 00 बजे के बाद मतदान शुरू हुआ। ईवीएम मशीन खराब होने से मतदाताओं में रोष भी देखने को मिला। यहां कर्मचारी कंट्रोल रूम को फोन लगाते रहे, हालांकि 9 बजे के बाद मतदान पुन: शुरू हो गया। यहां ईवीएम खराब होने से गुस्साएं मतदाता मतदान केंद्रों से वापस लौटते दिखाई दिए।

दिव्यांगजनों को उठानी पड़ी मुसीबतें

गाजियाबाद। मतदान केंद्रों पर नहीं दिल चाहिए मतदान केंद्रों पर दिव्यांग वोटर्स को सबसे अधिक दिक्कतों का सामना करना पड़ा। अधिकतर मतदान केंद्रों पर व्हील चेयर उपलब्ध नहीं थी जिसकी वजह से वोटर्स को काफी परेशानियां हुई। जबकि स्वास्थ्य विभाग को पूर्व में ही व्हील चेयर मतदान केंद्रों पर उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए थे। बावजूद इसके अधिकतर केंद्रों से व्हील चेयर नदारद दिखे ऐसे में दिव्यांगजनों को मुसीबत के साथ वोट डालने जाना पड़ा।लोगों ने प्रशासनिक अव्यवस्था को लेकर नाराजगी जताई। दिव्यांगजनों की समस्याओं को सुनने के लिए कोई तैयार नहीं था।

दादरी में पकड़े गए दो फर्जी वोटर

नोएडा। दादरी नगर पालिका के लिए मतदान करने गए एक फर्जी वोटर को पुलिस ने गिरफ्तार किया। मतदान से पहले पुलिस टीम सभी मतदाताओं के पहचान पत्र की जांच कर रही थी। उसी दौरान पुलिस टीम को एक व्यक्ति संदिग्ध नजर आया। उसके पहचान पत्र की जांच की गयी तो वह फर्जी निकला है। जिसके बाद दादरी थाना पुलिस उसको अपने साथ लेकर चली गयी। दादरी पुलिस ने चेकिंग के दौरान 2 अन्य फर्जी वोटरो को भी गिरफ्तार किया। यह दोनों दादरी में स्थित मिहिर भोज बालिका डिग्री कॉलेज के बूथ नंबर 63 और बूथ 64 में मतदान करने आए थे। दादरी पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, दोनों अरोपियों के पास वोट डालने वाली पर्ची का मिलान किया। लेकिन, पीठासीन अधिकारी की सूची से मिलान नहीं हुआ। दोनों आरोपियों की पहचान राम खिलावन निवासी दादरी और अहमद निवासी दादरी के रूप में की गयी है।

नारेबाजी करने के आरोप में पार्षद का बेटा हिरासत में

गाजियाबाद। नगर निगम के वार्ड नंबर 51 में नारेबाजी करने के मामले में पुलिस ने मौके पर पहुंचकर बीएसपी की निवर्तमान पार्षद विमलादेवी के बेटे राहुल नागर को हिरासत में ले लिया। इसके बाद भी कुछ लोगों ने विवाद किया, लेकिन अतिरिक्त फोर्स मौके पर पहुंच गई और किसी तरह से स्थिति को संभाला। वार्ड-51 लाइनपार में शांतिपूर्ण तरीके से मतदान चल रहा है और काफी लोग वोट डाल रहे थे, लेकिन इसी बीच विवाद हो गया।

आरोप है कि विवाद होने के बाद निवर्तमान बीएसपी पार्षद विमला देवी के बेटे राहुल नागर अपने साथियों के साथ मतदान केन्द्र पर पहुंचे। मतदान केन्द्र पर पहले से ही काफी लोग मतदान करने के लिए खड़े हुए थे और इसी बीच विवाद हो गया। विवाद के बाद आरोप है कि राहुल नागर ने काफी देर तक नारेबाजी की। इसकी सूचना पाकर मतदान केन्द्र पर तैनात पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोका, लेकिन वह फिर भी नारेबाजी करते रहे। सूचना मिलने पर अतिरिक्त पुलिस मौके पर पहुंची। इसके बाद पुलिस ने नागर को हिरासत में ले लिया।

सार्वजनिक सूचना

ICICI Bank

पंजी. कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, लैंडमार्क, रेस कोर्स सर्किल, वडोदरा-390007
कार्पोरेट कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक टावर्स, बान्द्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बान्द्रा (ई), मुम्बई-400051

शाखा कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लि., प्लॉट नंबर 7, कम्युनिटी सेंटर एस.डी. टावर, सेक्टर-8, रोहिणी, नई दिल्ली-110085

एतद्द्वारा सूचना दी जाती है कि निम्नलिखित कर्जदार/रों ने उनके द्वारा बैंक से प्राप्त की गई ऋण सुविधाओं के मूलधन और ब्याज के भुगतान में चूक की है और ये ऋण अनार्जक आस्तियों (एनपीए) के रूप में श्रेणीबद्ध किए गए हैं। उनको, वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 की धारा 13 (2) के अधीन निम्नवर्णित तिथि को एक सूचना उनके द्वारा बैंक को उपलब्ध कराए गए, उनके अंतिम ज्ञात पतों पर प्रेषित की गई थी, तथा कि उसके अतिरिक्त, यहां नीचे वर्णित उक्त कर्जदारों की सूचना के प्रयोजनार्थ, उक्त कर्जदारों को इस सार्वजनिक सूचना द्वारा सूचित किया जा रहा है।

क्र. सं.	कर्जदार/सह-कर्जदार/गारंटर का नाम (ऋण खाता संख्या) एवं पता	प्रवर्तित की जाने वाली प्रत्याभूत आस्ति का वर्णन	प्रेषित सूचना की तिथि/सूचना की तिथि तक बकाया राशि	एनपीए तिथि
1.	LAFDB00044739943/रमा शंकर/मकान नंबर 101, गली नंबर 3, फरीदाबाद-121013	स्कॉर्पियो/स्कॉर्पियो एस11/एचआर51सीएफ3604	30-NOV-22 Rs.16,28,743/-	15.04.2022
2.	LAFDB00041626727/आदर्श भट्ट/राजेश कुमार शर्मा/प्लॉट नंबर 5 ओम एन्क्लेव, फरीदाबाद, फरीदाबाद-121003	इगनिस/इगनिस सिग्मा 1.2 एमटी/एचआर51सीए4131	30-NOV-22 Rs. 2,87,886/-	03.04.2022
3.	LANOD00039192716/शुभम कुमार ठाकुर/ विनय ठाकुर/खसरा नंबर 31 एम ग्राम मामूरा, नोएडा-201301	एलीट आई 20/एलीट आई 20 ऐस्टा 1.2/यूपी16सीई2607	30-Nov-22 Rs.9,89,545/-	31.03.2021
4.	LUGHZ00037614948/कपिल चतरथ/कमल चतरथ/प्लॉट नंबर 820/ए-1, साहिबाबाद, गाजियाबाद-201005	सिटी /सिटी 1.5वी-एमटी/ डीएल2सीएटी3991	30-NOV-22 Rs. 4,94,965/-	04.08.2021
5.	LADEL00039361592/जगदीश कुमार/मकान नंबर 233, ब्लॉक डी, दिल्ली-110076	ईको/ईको 5 एसटीआर मय ए/सी + एवटीआर सीएनजी/ डीएल1सीएबी3328	30-Nov-22 Rs. 2,09,473/-	06.04.2021
6.	LADEL00040751649/गौतम कुमार/349, अपर ग्राउंड फ्लोर, वेस्ट, गुरू अंगद नगर, दिल्ली-110092	अमेज/अमेज एसएमटी डी/यूपी32एलए2510	30-Nov-22 Rs. 3,44,051/-	18.12.2020
7.	LADEL00040177538/मोहम्मद हुसैन/मकान नंबर एच-104, जैतपुर, बदरपुर साउथ दिल्ली, दिल्ली-110044	स्विट/ स्विट एलएक्सआई/ डीएल3सीसीआर4111	30-Nov-22 Rs. 2,96,010/-	03.05.2021
8.	LAGHZ00040716658/इस्तखार/इसरार अली/ बी-1430, गली नंबर 2, साहिबाबाद, गाजियाबाद- 201005	विटरा ब्रेजा/विटरा ब्रेजा जैडडीआई/ डीएल5सीवयू9155	30-NOV-22 Rs. 4,85,835/-	06.11.2021
9.	LUDEL00041760339/वीरेन कुमार/मकान नंबर 147, पाकेट-18, सेक्टर-24, रोहिणी, दिल्ली-110085	बलेनो/बलेनो अल्फा 1.2/ डीएल3सीसीके5592	30-NOV-22 Rs. 5,87,564/-	11.01.2021
10.	LANOD00040812850/नितिन अग्रवाल/मकान नंबर एफ-376, डेल्टा-1, ग्रेटर नोएडा, नोएडा-201308	ऑल्टो के 10/ऑल्टो के 10 वीएक्सआई डीएल9सीएएस3445	30-Nov-22 Rs.3,36,389/-	04.08.2021
11.	LUGUR00041010768/जग मोहन सैनी/ग्राम गढ़ी हरसारू न्यू, गुरूग्राम-122505	ईको/ईको 5 एसटीआर एचआर26डीजे3632	30-NOV-22 Rs.2,25,002/-	09.11.2021
12.	LAGUR00043126867/अभिषेक शर्मा/एम 203, दि ऐज टावर रामप्रस्थ, सेक्टर-37 डी, गुरूग्राम-122002	क्रेटा/क्रेटा 1.6 ईएस/ यूपी11सीए1062	30-Nov-22 Rs.5,45,108/-	24.10.2021
13.	LAGUR00041910330/गुलाब सिंह/खेड़ा खुर्रमपुर खुर्रमपुर (8) खेड़ा, गुरूग्राम-122506	एर्टिगा/एर्टिगा वीएक्सआई सीएनजी/एचआर76एफ3706	30-Nov-22 Rs. 5,25,997/-	08.05.2022
14.	LADEL00044105902/कृष्ण सिंह/बी-3/251, द्वितीय तल, गणेश मंदिर, दिल्ली-110085	स्विट/ स्विट वीएक्सआई/ डीएल8सीबीसी2620	30-Nov-22 Rs.6,16,247/-	31.01.2022
15.	LADEL00041707335/मनोज कुमार/ई-261, 72, महावीर एन्क्लेव, डी.के. मोहन गार्डन, दिल्ली-110059	ऑरा/ऑरा एस एमटी सीएनजी/डीएल9सीएटी3069	30-NOV-22 Rs. 5,24,276/-	17.07.2021
16.	LANOD00042417722/मुकेश/विनोद/ग्राम कोंडली पनगार, नोएडा, नोएडा-201310	विटरा ब्रेजा/विटरा ब्रेजा एलएक्सआई/यूपी16सीएस0210	30-NOV-22 Rs.4,58,526/-	13.07.2021
17.	LANOD00042516516/सविता अवाना/मकान नंबर 105, सेक्टर-5, हरोला, नोएडा-201301	स्विट/ स्विट एलएक्सआई/ यूपी16सीएस4060	30-NOV-22 Rs.3,61,498/-	09.09.2021
18.	LAFDB00044115781/रोहित कुमार प्रजापति/ मकान नंबर 816, पर्वतीय कालोनी, फरीदाबाद-121005	अर्बन क्रूजर/ अर्बन क्रूजर 1.5 प्रीमियम एटी/ एचआर51सीई2239	30-Nov-22 Rs. 10,68,643/-	06.01.2022
19.	LAFDB00041201183/अनवर मोहम्मद खान/ मकान नंबर 1011, शिव कालोनी, फरीदाबाद-121002	वैगन आर 1.0/वैगन आर 1.0 एलएक्सआई/एचआर51बीजे6049	30-Nov-22 Rs.3,44,058.6/-	02.04.2022
20.	LADEL00037156893/ओम प्रकाश/503, दिल्ली-110022	एर्टिगा/एर्टिगा वीडीआई डीएल5सीपी6881	30-NOV-22 Rs. 1,11,779.9/-	27.09.2021
21.	LADEL00038548155/ओम प्रकाश/503, दिल्ली-110022	मराजो/मराजो एम2/डीएल10सीएल8914	30-NOV-22 Rs.4,54,623/-	27.09.2021
22.	LADEL00038242859/पंकज कुमार/240, मयूर विहार फेज-1, दिल्ली-110091	स्विट/ स्विट वीएक्सआई/ डीएल3सीसीपी9527	30-NOV-22 Rs.2,77,524.6/-	08.04.2021
23.	LUDEL00041476670/पंकज कुमार/240, मयूर विहार फेज-1, दिल्ली-110091	स्विट/ स्विट वीएक्सआई/ डीएल3सीसीपी9527	30-NOV-22 Rs.1,68,602.1/-	08.04.2021
24.	LAFDB00036330712/कंचन महाजन/मकान नंबर 9, प्रथम तल, साइड बैक, ब्लॉक-16, फरीदाबाद-121003	ऑल्टो 800/ऑल्टो 800 एलएक्सआई/एचआर51बीक्यू2225	30-Nov-22 Rs.92,603.8/-	31.10.2019
25.	LUFDB00037920573/कंचन महाजन/मकान नंबर 9, प्रथम तल, साइड बैक, ब्लॉक-16, फरीदाबाद-121003	ऑल्टो 800/ऑल्टो 800 एलएक्सआई/एचआर51बीक्यू2225	30-Nov-22 Rs. 1,38,993.8/-	31.10.2019
26.	LAGHZ00038368217/अनिल कुमार/सुनील कुमार/ नाईपुरा कीर्ति विहार, लोनी देहात, गाजियाबाद- 201102	वैगन आर 1.0/वैगन आर एलएक्सआई/डीएल5सीवयू3066	30-Nov-22 Rs. 1,22,557/-	04.08.2021
27.	LUGHZ00041428829/अनिल कुमार/सुनील कुमार/ नाईपुरा कीर्ति विहार, लोनी देहात, गाजियाबाद- 201102	वैगन आर 1.0/वैगन आर एलएक्सआई/डीएल5सीवयू3066	30-Nov-22 Rs.54,175/-	04.08.2021
28.	LUGHZ00041526863/मनोज कुमार जैन/अमन मैन्सन फ्लैट नंबर जी-2, प्लॉट नंबर 6/156, गाजियाबाद, गाजियाबाद, आमगांव- 201005	ऑडी/ऑडी ए4 2.0 टीडीआई मल्टीरोनिक/ एचआर26सीडी0376	30-Nov-22 Rs. 9,83,279/-	16.04.2022
29.	LAGUR00038352983/अविशेख कुमार/मकान नंबर 227 बी/7, प्रथम तल, कमरा नंबर 6, हंस एन्क्लेव, गुरूग्राम-122001	ऑल्टो के 10/ वीएक्सआई एचआर26डीयू4633	31-Dec-22 Rs. 2,67,278/-	29.02.2020
30.	SPGUR00041742577/बनवारी लाल/ग्राम सिकंदरपुर बढ़ा, गुरूग्राम-122001	मारूति सुजुकी/ एर्टिगा स्मार्ट हाईब्रिड वीएक्सआई/एचआर26डीवाई1546	31-Dec-22 Rs. 1,80,227/-	30.09.2021
31.	LAGUR00041709695/जवामित/नरेन्द्र सिंह/ मकान नंबर 80, ग्राम-बघांकी, बघांकी (4), गुरूग्राम-122105	आई-20/वीटीवीटी स्पोर्ट्स/ एचआर26ईएच4978	31-Dec-22 Rs. 3,39,491/-	03.01.2022
32.	LADEL00038284621/धर्मेन्द्र जोशी/360 गली नंबर 5, भोलानाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032	मराजो/एम6/ डीएल12सीक्यू1815	31-Dec-22 Rs.4,06,493/-	11.05.2022
33.	PDEL00041830142/धर्मेन्द्र जोशी/360 गली नंबर 5, भोलानाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032	मराजो/एम6/ डीएल12सीक्यू1815	31-Dec-22 Rs.3,46,064/-	11.05.2022
34.	LADEL00035513890/मोहम्मद शहवाज/बी-16, छोटा विशु विहार भगवती विहार, उत्तम नगर, वेस्ट दिल्ली, दिल्ली-110059	स्विट/एलएक्सआई/ डीएल9सीएएम6334	31-Dec-22 Rs. 31,558/-	31.08.2021
35.	PDEL00041155607/मोहम्मद शहवाज/बी-16, छोटा विशु विहार भगवती विहार, उत्तम नगर, वेस्ट दिल्ली, दिल्ली-110059	स्विट/एलएक्सआई/ डीएल9सीएएम6334	31-Dec-22 Rs. 3,14,679/-	31.08.2021
36.	LADEL00041563445/विपिन कुमार/749/13, ए वेस्ट, रोहताश नगर, दिल्ली-110032	विटरा ब्रेजा/ जैडडीआई/ प्लस/डीएल14सीई8613	08-Mar-23 Rs.8,21,706/-	27.03.2021
37.	LUDEL00037925450/विपिन कुमार/749/13, ए वेस्ट, रोहताश नगर, दिल्ली-110032	स्विट/वीएक्सआई/ डीएल14सीसी3469	08-Mar-23 Rs. 1,86,125/-	27.03.2021

उपरोक्त कर्जदार/रों तथा/अथवा उनके गारंटरों (जैसा लागू है) को बकाया राशि का भुगतान 13(2) के तहत सूचना जारी करने की तिथि से 60 दिन के भीतर करने की सलाह दी जाती है, जिसमें असफल रहने पर 13(2) के तहत सूचना जारी करने की तिथि से 60 दिन के बाद वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002, के प्रावधानों के अनुसार आगे कदम उठाए जाएंगे।

तिथि : 12 मई, 2023
स्थान : दिल्ली/एनसीआर

प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड

मतगणना को लेकर यातायात पुलिस ने किया रूट डायवर्जन

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

आगामी 13 मई को निकाय चुनावों में बने स्ट्रांग रूम परिसर में मतगणना के दिन आस-पास से रूट डायवर्ट रहेंगे। गौतमबुद्ध नगर में 6 निकायों की 13 मई को मतगणना होनी है और सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए रूट डायवर्जन किया गया है।

सभी निकायों की मतगणना संबंधित तहसील क्षेत्रों में जहां स्ट्रांग रूम बनाया गया है। सुबह सात बजे से मतों की गणना शुरू होने के बाद समाप्त होने तक रूट डायवर्जन लागू रहेगा। बुलन्दशहर, सिकन्दराबाद से आकर खेरली नहर तिराहा से दनकौर, बिलासपुर की ओर जाने वाला यातायात खेरली नहर तिराहा से कस्बा कासना होकर गौतमबुद्ध यूनिवर्सिटी के सामने मार्ग से होकर जा सकेगा।दनकौर, बिलासपुर से खेरली नहर होकर बुलन्दशहर, सिकन्दराबाद की ओर जाने वाला यातायात गौतमबुद्ध यूनिवर्सिटी के सामने मार्ग से कस्बा कासना होकर खेरली तिराहा होकर जा सकेगा।

भाजपा प्रत्याशी ने महिलाओं के बुर्के उठाये

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

गौतमबुद्ध नगर में निकाय चुनाव के दूसरे चरण के लिए मतदान किया जा रहा है। दोपहर के समय दादरी नगर पालिका अध्यक्ष पद के लिए भाजप की प्रत्याशी गीता पंडित मतदान केंद्रों पर निरीक्षण के लिए पहुंची। भाजपा प्रत्याशी गीता पंडित ने मुस्लिम महिलाओं के बुर्के उठाकर जांच की।

मत का प्रयोग करने के लिए लाइन में लगी महिलाओं के आधार कार्ड भी भाजपा प्रत्याशी गीता पंडित ने देखे। इस दौरान भाजपा प्रत्याशी गीता पंडित ने जिला प्रशासन पर मतदान को धीमा कराने समेत कई गंभीर आरोप लगाए। भाजपा प्रत्याशी गीता पंडित ने कहा कि मतदान बेहद धीमा चल रहा है। मैं पोलिंग बूथ के भीतर जा रही हूं। वहां पीठासीन अधिकारियों से भी इस संबंध में बातचीत की जाएगी। दादरी में काफी धीमी गति से मतदान का काम किया जा रहा है। जिला प्रशासन को मतदान की रफ्तार तेज करनी चाहिए।

पुलिस की गाड़ी में शराब बांटने का आरोप

मोदीनगर। नगर पालिका के वार्ड-20 से निर्दलीय सभासद प्रत्याशी संजीव चिकारा व तीन पुलिसकर्मियों के खिलाफ अचार संहिता के उल्लंघन समेत कई गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है।

बीती रात करीब दो बजे वार्ड-20 से भाजपा सभासद प्रत्याशी संदीप ने वार्ड के ही एक निर्दलीय प्रत्याशी द्वारा शराब बांटे जाने की जानकारी मिली थी। मोनू ने अपने समर्थकों के साथ वाल्मीकि पार्क के पास पुलिस की एक गाड़ी में सवार उक्त प्रत्याशी व तीन पुलिसकर्मियों को शराब के साथ दबोचकर पुलिस को मामले की सूचना दी।

गाजियाबाद से सांसद व केंद्रीय मंत्री डॉ. वीके सिंह ने सुबह सवा नौ बजे के बाद शिलर इंस्टीट्यूट कक्ष नंबर दो बनाये गए बूथ संख्या-1088 में पहुंचकर अपने मत का प्रयोग किया। इस मौके पर उनकी पत्नी भारती सिंह ने भी वोट डाला।

विकास के लिए ट्रिपल इंजन की सरकार जरूरी : वीके

गाजियाबाद। गाजियाबाद से सांसद व केंद्रीय मंत्री डॉ. वीके सिंह ने सुबह सवा नौ बजे के बाद शिलर इंस्टीट्यूट कक्ष नंबर दो बनाये गये बूथ संख्या-1088 में पहुंचकर अपने मत का प्रयोग किया। इस मौके पर उनकी पत्नी भारती सिंह ने भी वोट डाला।

पत्रकारों के सवालों के उत्तर देते हुए सिंह ने कहा कि प्रदेश के विकास के लिए ट्रिपल इंजन की सरकार जरूरी है। जनता से मिल रहे स्नेह को देखकर ये कहा जा सकता है कि इस बार उत्तर प्रदेश में ट्रिपल इंजन की सरकार बनेगी। इस मौके पर श्री सिंह ने जनपदवासियों से अपील की कि अधिक से अधिक मतदान करें।

18वीं मंजिल से गिरा मजदूर, 12वें फ्लोर पर फंसा, अस्पताल में मौत

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

जिले के थाना बिसरख क्षेत्र में एक निर्माणाधीन इमारत भवन में काम कर रहा एक मजदूर 18वीं मंजिल से गिर कर 12वीं मंजिल पर फंस गया और वहां से उतार कर अस्पताल ले जाने पर उसकी मौत हो गई।

थाना बिसरख के प्रभारी निरीक्षक अनिल कुमार सिंह ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बुधवार की शाम को राइस सिटी के पास निर्माणाधीन वर्मा हाइट्स नामक सोसाइटी में काम करते समय साकिर (35 वर्ष) 18 वीं मंजिल से गिरा और 12वीं मंजिल पर फंस गया। उन्होंने बताया कि पश्चिम बंगाल के मालदा निवासी साकिर को वहां काम कर रहे लोगों ने उतारा और अस्पताल ले गए जहां उसकी मौत हो गई।

सिंह के अनुसार, पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उन्होंने बताया कि मृतक के परिजन की शिकायत पर बिल्डर कंपनी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी गई है। वहीं बिल्डर की तरफ से कोई सफाई नहीं आइ है।

अमृतपुरम मार्केट में हटाया जाएगा अतिक्रमण

पायनियर समचार सेवा। नोएडा

● व्यापारियों के साथ अधिकारियों की बैठक

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों ने अवैध अतिक्रमण को लेकर व्यापारियों के साथ एक बैठक की। इस बैठक के दौरान प्राधिकरण के अधिकारियों ने व्यापारी को साथ लेकर जगत फॉर्म का निरीक्षण किया।

यह बैठक आगामी जी-20 को सफल बनाने के उद्देश्य से आयोजित की गयी। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण वर्क सर्किल 5 के सीनियर मैनेजर विजय कुमार वाजपेई, सहायक प्रबंधक मनोज चौधरी और अर्बन विभाग के मैनेजर दिनेश कुमार ने अमृतपुरम मार्केट (जगत फार्म) के व्यापारियों के साथ बैठक की। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के संबंधित अधिकारियों ने शहर में लग रही अवैध ठेलियों का मौके पर जाकर मुआयना किया। अमृतपुरम मार्केट और जगत फार्म में अवैध ठेलियों और दुकानों के सामने दुकानदारों ने फुटपाथ पर तख्त लगा रखे हैं। जिसकी वजह से बहुत काफी ज्यादा अतिक्रमण बढ़ता जा रहा है। समस्याओं की शिकायत जगत फार्म और अमृतपुरम मार्केट के दुकानदारों ने अधिकारियों से की। जिसको उन्होंने संज्ञान में लिया और अवैध ठेलियों को हटाने के निर्देश भी उन्होंने दिए।

सभी दुकानदार इन अवैध ठेलियों से बहुत परेशान हैं। जिसकी वजह से मार्केट मे जाम लगा रहता है। आने जाने में भी लोगों को असुविधा होती हैं। दुकानदारों का कहना है कि प्राधिकरण कार्यवाही कर इन ठेलियों को हटवा देता है लेकिन अगले दिन फिर यह ठेलियाँ अवैध कब्जा कर लेती हैं। इस मौके पर मनजीत सिंह, मुकेश जैन, सुकेनदर यादव, रोताश सिंगल, गिराज, मीनाक्षी मित्तल, उमेश शर्मा, दीपक, मनोज सिंगल आदि लोग मौजूद रहे।

यीडा ने लखनऊ भेजी पॉड टैक्सी की फाइल, जल्द लगेगी अंतिम मुहर

● 14.6 किमी सबसे लंबी परियोजना, यह नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और फिल्म सिटी को जोड़ेगा

पायियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा में दुनिया के सबसे लंबे रूट वाली पॉड टैक्सी चलाने की योजना तैयार की गयी है। यह 14.6 किमी सबसे लंबी परियोजना होगी। यह सेक्टर 21 स्थित नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और फिल्म सिटी को जोड़ेगा। यमुना प्राधिकरण ने पॉड टैक्सी की संशोधित रिपोर्ट शासन को भेज दी है। इस रिपोर्ट की डीपीआर फाइनल करने के लिए अब शासन स्तर पर बैठक भी होगी। इस बैठक के दौरान रिपोर्ट की स्टडी की जाएगी। जिससे पॉड टैक्सी को लेकर कोई फैसला हो सके। यमुना प्राधिकरण ने शासन के दिशा-निर्देशों के आधार पर दूसरे देशों में चल रही पॉड टैक्सी को लेकर यह रिपोर्ट तैयार की है।

भारतीय पोर्ट रेल और रोपवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईपीआरआरसीएल) की रिपोर्ट के मुताबिक, यमुना एक्सप्रेस-वे क्षेत्र से प्रस्तावित रैपिड ट्रांजिट (पीआरटी) परियोजना संभवत दुनिया में सबसे लंबी होगी। इस प्रोजेक्ट को तैयार करने में 810 करोड़ का खर्च आएगा। पॉड टैक्सी नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से फिल्म सिटी को कनेक्ट किया जाएगा। करीब 30 हजार से अधिक यात्री रोजाना पॉड टैक्सी के लिए सफर कर सकेंगे।

टैक्सी के लिए बनेंगे 12 स्टेशन

यमुना प्राधिकरण पॉड टैक्सी के लिए 12 स्टेशन को बनाने जा रहा है। यमुना सिटी के सेक्टर 29, हैंडीक्राफ्ट पार्क, एमएसएमई पार्क, अपैरल पार्क, सेक्टर 32, सेक्टर 33, टॉय पार्क और सेक्टर 21 समेत कई स्टेशन शामिल हैं। इस कॉरिडोर की लंबाई 14.6 किलोमीटर होगी। पॉड टैक्सी दो चरणों आएंगी। पहले चरण में करीब 146 पॉड टैक्सी खरीदी जाएंगी। दूसरे चरण में 799 पॉड टैक्सी खरीदी जाएंगी। दो साल में यह परियोजना पूरी होगी।

बिना चालक के दौड़ेंगी: सीईओ

यमुना प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. अरुणवीर सिंह ने बताया कि डीपीआर के अनुसार पॉड टैक्सी का संचालन शुरू होने पर रोजाना करीब आठ हजार यात्री सफर कर सकेंगे। अधिकतम 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पॉड टैक्सी दौड़ेगी। पॉड टैक्सी 4 से 6 सीटर वाली ऑटोमेटिक गाड़ी है। इसे बिना ड्राइवर के चलाया जाता है। पॉड टैक्सी में 8 यात्री बैठकर और 13 यात्री खड़े होकर सफर कर सकेंगे। इसका किराया 8 रुपये प्रति किलोमीटर की दर से निर्धारित किया जाएगा। यमुना प्राधिकरण ने फिल्म सिटी और जेवर एयरपोर्ट के बीच पॉड टैक्सी चलाने की योजना तैयार की है। डीपीआर केंद्र सरकार की कंपनी इंडियन पोर्ट रेल एंड रोप-वे कॉरपोरेशन लिमिटेड ने बनायी है।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक नरेन्द्र कुमार द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ऐ, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। कार्यवाहक कार्यकारी संपादक: विजय प्रकाश सिंह, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। पत्रवार्ता ऑफिस- एफ-31, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301, उत्तर प्रदेश, दूरभाष- 120-4879900।

आप का जश्न, केजरीवाल ने कहा- देंगे कुशल प्रशासन का मॉडल

सुप्रीम कोर्ट के फैसले से एक्शन में आए मुख्यमंत्री, राजधानी में प्रशासनिक फेर-बदल शुरू

अरविंद केजरीवाल

● काम रोकने वाले अफसर हटेंगे और योग्य व ईमानदार अफसरों को मिलेगा मौका

सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद आम आदमी पार्टी कार्यालय में जश्न मनाते आप विधायक और उनके समर्थक: फोटो: रंजन डिमरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उपराज्यपाल बनाम दिल्ली की लड़ाई में आम आदमी पार्टी की सरकार को बड़ी राहत मिली है। उच्चतम न्यायालय ने साफ कर दिया कि पब्लिक ऑर्डर, जमीन और पुलिस को छोड़कर अन्य सभी विभागों के अफसरों पर दिल्ली सरकार का नियंत्रण होगा। शीर्ष अदालत के इस फैसले से मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी की बांछें खिल गई हैं।

आप पार्टी कार्यकर्ताओं ने पार्टी कार्यालय और दिल्ली सचिवालय के बाहर जमकर जश्न मनाया। उन्होंने होली दीपावली एक साथ मनाई एक दूसरे को गुलाल लगाए, आतिशबाजी की और ढोल नगाढ़े की थाप पर जमकर थिरके।

खुशी से झूम रहे कार्यकर्ताओं व मंत्रियों ने फूल माला पहनाकर और लड्डू खिलाकर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जोरदार स्वागत किया। केजरीवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उनके पिता के सामान हैं। उन्हें दिल्ली के विकास में उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले से दिल्ली का विकास तेजी से होगा। दूसरी ओर, अफसरों और कर्मचारियों के ट्रांसफर-पोस्टिंग का अधिकार मिलने के बाद केजरीवाल फौरन एक्शन मोड में आ गए और सबसे पहले सर्विसेज सचिव आशीष मोरे को पद से हटा दिया। साथ ही आने वाले दिनों में राष्ट्रीय राजधानी में बड़े पैमाने पर प्रशासनिक फेरबदल के संकेत दिए। उन्होंने कहा कि काम रोकने वाले अफसरों-कर्मचारियों को पदों से हटाया जाएगा।

उनकी जगह योग्य, ईमानदार व जनता के प्रति सहानुभूति रखने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को मौका दिया जाएगा। सर्विसेज पर अधिकार को लेकर सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिल्ली सरकार के पक्ष में फैसला देने के बाद अरविंद केजरीवाल ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि जिस तरह दिल्ली ने देश को शिक्षा और स्वास्थ्य का मॉडल दिया है, उसी तरह अब एक कुशल प्रशासन का मॉडल पेश करेंगे।

इस दौरान उन्होंने लंबे संघर्ष में साथ खड़े रहने के लिए दिल्ली वालों का धन्यवाद किया और कहा कि सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला ऐतिहासिक है और दिल्ली वालों की यह बहुत बड़ी जीत है। उन्होंने कहा कि अब ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था बनाएंगे जो जनता के प्रति जवाबदेह हो और जनता की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी हो। व्यवस्था के अंदर जितनी कमियां हैं, उन सभी को दूर किया जाएगा।

अफसरशाही में भय और आतंक पैदा करना अनुचित : भाजपा

नई दिल्ली। नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ली ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा अफसरों में भय और आतंक पैदा करने की कोशिशों की निंदा की है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद केजरीवाल अफसरों में वैसा ही माहौल बनाने की कोशिश कर रहे हैं जैसा फरवरी 2018 में तत्कालीन मुख्य सचिव पर मुख्यमंत्री निवास में हमले के समय बनाया गया था। वहीं प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि पार्टी शीर्ष अदालत के फैसले का सम्मान करती है। साथ ही दावा किया कि शहर में एक स्थानांतरण-पदस्थापन उद्योग आएगा। भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री ने कहा है कि दिल्ली सरकार में अब बड़े पैमाने पर अधिकारियों का तबादला होगा। जिसका मतलब है कि शहर में ट्रांसफर-पोस्टिंग एक उद्योग बन जाएगा। अधिकारियों को अब उनकी क्षमता के आधार पर नहीं बल्कि वे मुख्यमंत्री के प्रति कितने आज्ञाकारी हैं।

कानूनी लड़ाई का घटनाक्रम

■ **21 मई 2015 :** गजट अधिसूचना जारी, एलजी अपने विवेक से सेवा के मुद्दे पर मुख्यमंत्री से विचार-विमर्श कर सकते हैं।

■ **27 जनवरी 2016 :** केंद्र सरकार ने कहा कि दिल्ली केंद्र के अधीन आती है और उसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त नहीं है।

■ **4 अगस्त 2016 :** उच्च न्यायालय ने कहा कि उप राज्यपाल राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रशासनिक प्रमुख हैं

■ **15 फरवरी 2017:** उच्चतम न्यायालय ने शासन को लेकर दिल्ली-केंद्र विवाद को संविधान पीठ को भेजा।

■ **14 फरवरी 2019 :** दो न्यायाधीशों की पीठ ने अलग-अलग फैसला दिया और तीन न्यायाधीशों की पीठ गठित

■ **6 मई 2022 :** तीन न्यायाधीशों की पीठ ने दिल्ली की सेवाओं के मुद्दे को पांच सदस्यीय संविधान पीठ को भेजा।

■ **18 जनवरी 2023:** उच्चतम न्यायालय ने मामले में फैसला सुरक्षित रखा।

■ **11 मई 2023 :** उच्चतम न्यायालय ने फैसला दिया दिल्ली सरकार का सेवाओं पर विधाई और कार्यकारी अधिकार है।

आप के मंत्री-नेताओं ने बताया दिल्ली की जीत

● मंत्री सौरभ भारद्वाज ने सीजेआई को सबसे बड़ा नायक बताया

प्रेस वार्ता में मंत्री गोपाल राय, सौरभ भारद्वाज और आतिशी।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय के फैसले से आम आदमी पार्टी के मंत्री और नेताओं ने इस फैसले को लोकतंत्र की अपनी जीत बताया है।

आप ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले केंद्र सरकार के लिए तमाचा करार देते हुए सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की जमकर तारीफ की। मंत्री सौरभ भारद्वाज ने सीजेआई को सबसे बड़ा नायक बताते हुए कहा कि आने वाले समय में जजों की भूमिका पर भी फिल्में बनेंगी। दिल्ली सरकार के मंत्री गोपाल राय, सौरभ भारद्वाज और आतिशी ने बृहस्पतिवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि केंद्र सरकार पर जमकर हमला बोला।

उन्होंने कहा कि केंद्र राज्य सरकारों को अस्थिर बनाकर लोकतंत्र को अंधेरे में धकेल रही है। राय ने कहा कि वे दिल्ली सरकार के किए काम को पंगु बनाने की मुहिम चला रहे हैं और यह फैसला अंधेरे में उम्मीद की किरण है। भारद्वाज ने कहा कि केजरीवाल पिछले करीब नौ साल से जो लड़ाई लड़ रहे थे, उसमें दिल्ली के लोगों की जीत हुई है। इस लड़ाई ने देश में एक बात स्थापित कर दी है कि केवल एक ही संस्थान है जो कभी भी खतरा पैदा होने पर खड़ा होगा और व्यवस्था को बहाल करेगा।

यह संस्थान शीर्ष अदालत है। आतिशी ने कहा कि इस फैसले ने देश के संविधान और लोकतंत्र की रक्षा की है। जब कभी भाजपा की हार होती है, वे असंवैधानिक रूप से ऑपरेशन कमल चलाते हैं और वहां विधायकों को अपनी पार्टी में मिलाने की कोशिश करते हैं।

वे जब आप सरकार को इन तरीकों से गिरा नहीं पाए, तो उन्होंने उसकी शक्तियां छीनने की कोशिश कीं। आतिशी ने उच्चतम न्यायालय को धन्यवाद देते कहा कि उसने केवल एक फैसला नहीं सुनाया है, बल्कि देश के लोकतंत्र और संविधान की भी रक्षा की है।

मुख्यमंत्री केजरीवाल अपनी जिम्मेदारी समझें : कांग्रेस

पायनियर समचार सेवा। नई दिल्ली

कांग्रेस ने निर्वाचित सरकार और उप राज्यपाल के अधिकारक्षेत्र को निर्धारित करने वाले उच्चतम न्यायालय के फैसले को दिल्ली वालों की जीत करार देते हुए कहा कि इस निर्णय से उन उद्देश्यों की बहाली हुई जिनको लेकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की स्थापना हुई थी।

पार्टी प्रवक्ता और वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने आरोप लगाया कि केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार असंवैधनिक तरीके से इन उद्देश्यों को नगण्य बनाने का बार-बार प्रयास कर रही थी।

याचिका में जो भी मुद्दे उठाए गए थे उन सभी मुद्दों को उच्चतम न्यायालय ने माना है। सिंघवी ने कहा, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र बनाने के कुछ उद्देश्य थे। केंद्रशासित राज्य के रूप में स्थापना नहीं, बल्कि विधाई शक्ति के साथ। उद्देश्य यह था कि संबंधित अनुच्छेदों के तहत दिल्ली को ज्यादा स्वायत्तता मिले और लोकतांत्रिक चुनाव के आधार पर लोग अपना मत रखें।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के महत्वपूर्ण बिंदु

⏭ लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार के पास अपने प्रशासन का नियंत्रण होना चाहिए।

⏭ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के समान नहीं है और इसे संविधान द्वारा एक विशिष्ट दर्जा दिया गया है।

⏭ उपराज्यपाल राष्ट्रीय राजधानी के विधाई दायरे के भीतर मामलों के संबंध में दिल्ली की मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से बंधे हैं।

⏭ सरकार के लोकतांत्रिक स्वरूप में प्रशासन की वास्तविक शक्ति संविधान की सीमाओं के अधीन राज्य की निर्वाचित शाखा में होनी चाहिए।

⏭ यदि सरकार को अपने कार्यक्षेत्र में तैनात अधिकारियों को नियंत्रित करने की शक्ति नहीं दी गई, तो सामूहिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत बेमानी हो जाएगा।

⏭ आईएएस या संयुक्त कैडर सेवाओं जैसी सेवाओं पर विधाई और कार्यकारी शक्ति दिल्ली सरकार के पास होगी।

⏭ केंद्र और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एनसीटीडी) सरकार विशिष्ट संघीय संबंध साझा करती हैं। दोनों में परस्पर सहयोगी आवश्यक।

⏭ संघ और एनसीटीडी में अद्वितीय संघीय संबंध हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि राज्य न होने के कारण दिल्ली संघ की इकाई में शामिल है।

⏭ एक गैर-जवाबदेह और गैर-जिम्मेदार सिविल सेवा लोकतंत्र में शासन की गंभीर समस्या खड़ी कर सकती है।

कोझिकोड ट्रेन आगजनी मामला

एनआईए ने शाहीन बाग इलाके में ली तलाशी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने पिछले महीने केरल के कोझिकोड में एक रेलगाड़ी में आगजनी के सिलसिले में बृहस्पतिवार को शाहीन बाग और आसपास के इलाकों के 10 स्थानों पर तलाशी ली। तलाशी के दौरान मोबाइल फोन, लैपटॉप सहित कई डिजिटल उपकरण और अन्य दस्तावेज जब्त किए गए हैं। इस घटना में ट्रेन में आगजनी से तीन यात्रियों की मौत हो गई थी और नौ अन्य घायल हुए थे।

एनआईए प्रवक्ता ने बताया कि आरोपी शाहरुख सैफी और अन्य संदिग्धों की संपत्तियों की तलाशी ली गई। उन्होंने बताया कि सैफी शाहीन बाग का निवासी है और ट्रेन में आगजनी की घटना के चार दिन बाद 16 अप्रैल को उसे गिरफ्तार किया गया था। उसके खिलाफ अल्लेप्पी-कन्नूर एक्जीक्यूटिव एक्सप्रेस के डी-1 कोच में आग लगाने का मामला दर्ज किया गया जिसमें एक बच्चे और दो अन्य की मौत हो गई थी।

प्रवक्ता ने बताया कि मामले में केरल के कोझीकोड रेलवे पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई थी और एनआईए ने 17 अप्रैल को जांच अपने हाथ में ली थी।

एनआईए की अबतक की जांच में खुलासा हुआ सैफी, जाकिर नाइक, पाकिस्तान से उपदेश देने वाले तारिक जमील, इसरार अहमद और तैमूर अहमद सहित कई कट्टरपंथी इस्लामिक उपदेशकों का अनुसरण करता था।

जंतर मंतर पर पहलवानों ने मनाया काला दिवस

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

काली पट्टी बांधकर बैठे साक्षी मलिक, बजरंग पुनिया और विनेश।

भारतीय कुश्ती महासंघ के प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे पहलवानों ने गुरुवार को बांहों और सिर पर काली पट्टी बांध कर अपना विरोध जताया। जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन के 18वें दिन विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया, साक्षी मलिक, सत्यव्रत कादियान, जितेंद्र किन्हा के साथ मौजूद अन्य पहलवानों ने अपने सिर और बाहों पर काली पट्टी बांधी।

इस मौके पर पहलवानों के समर्थक भी अपनी बाहों पर काली पट्टी बांधे हुए थे। इन पहलवानों ने भारतीय जनता पार्टी के सांसद बृजभूषण पर महिला पहलवानों के यौन शोषण का आरोप लगाया है और उनकी गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। दिल्ली पुलिस ने 28 अप्रैल को डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष के खिलाफ दो प्राथमिकी दर्ज की थी।बजरंग पूनिया ने कहा, बृजभूषण शरण सिंह के विरोध में बृहस्पतिवार को काला दिवस मना रहे हैं। उन्हें अपनी जीत का पूरा भरोसा है क्योंकि हमारी लड़ाई में पूरा देश हमारे साथ है।

हर दिन पहलवानों का विरोध जोर पकड़ रहा है और वे तब तक लड़ते रहेंगे जब तक हमें न्याय नहीं मिल जाता। भारत किसान यूनियन एकता (आजाद) का एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल गुरुवार को प्रदर्शनकारी पहलवानों के प्रति अपनी एकजुटता दिखाने के लिए यहां जंतर-मंतर पहुंचा। इस प्रतिनिधिमंडल में महिलाओं की संख्या अधिक थी। इसके साथ ही मजदूर अधिकार संगठन (सोनीपत), भगत सिंह यूथ यूनियन (महाराष्ट्र के छात्रों का संगठन) का एक छोटा प्रतिनिधिमंडल भी पहलवानों के समर्थन में यहां पहुंचा था।

बृजभूषण पर आरोप लगाने वाली किशोरी के बयान दर्ज

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली एक नाबालिग का बयान मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज किया गया है। अदालत ने दिल्ली पुलिस से 12 मई तक स्थिति रिपोर्ट मांगी थी। अदालत ने प्रदर्शन कर रहे पहलवानों की याचिका पर दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, नाबालिग महिला पहलवान का बयान दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 164 के तहत मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज किया गया है। शेष छह महिला पहलवानों के बयान भी जल्दी ही मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज किए जाएंगे। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 164 किसी मजिस्ट्रेट के समक्ष बयान दर्ज किए जाने से संबंधित है।

संक्षिप्त समाचार

एनएसयूआई ने राहुल के समर्थन में डीयू में प्रदर्शन

नई दिल्ली। कांग्रेस की छात्र इकाई नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआई) के सदस्यों ने बृहस्पतिवार को दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पुरुष छात्रावास के बाहर प्रदर्शन किया और राहुल गांधी के पिछले सप्ताह छात्रावास में जाने को लेकर उन्हें भेजे गए नोटिस को वापस लेने की मांग की। एनएसयूआई के सदस्यों ने नारेबाजी करते हुए हॉस्टल के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी केपी सिंह का पुतला फूंका। सिंह ने ही कांग्रेस नेता के अचानक दौरे के बाद बुधवार को उन्हें नोटिस भेजा था।

केआर मंगलम विवि में पीएम के भाषण का सीधा प्रसारण

नई दिल्ली। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर केआर मंगलम विश्वविद्यालय ने परिसर में गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उद्घाटन भाषण का सीधा प्रसारण प्रसारित किया। सप्ताह भर चलने वाला यह मेगा कार्यक्रम 11 सरकारी एजेंसियों और मंत्रालयों की सामूहिक भागीदारी के साथ हो रहा है, जो 500 से अधिक प्रौद्योगिकी स्टार्ट-अप और नवाचारों को देखने का इरादा रखता है। पीएम मोदी, रक्षा मंत्री राज नाथ सिंह और विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह के संबोधन में कार्यक्रम के लाइव प्रसारण की व्यवस्था की गई थी।

मासूम से छेड़छाड़ के आरोप में स्कूल कर्मी गिरफ्तार

नई दिल्ली। रोहिणी में एक स्कूल में चार वर्षीय छात्रा के साथ छेड़छाड़ करने के आरोप में स्कूल के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी को गिरफ्तार कर लिया गया। दक्षिणी रोहिणी पुलिस थाने में बुधवार को दर्ज कराई गई शिकायत में बच्ची की मां ने स्कूल के कर्मचारी पर उसकी बेटी के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बच्ची की मां की शिकायत के आधार पर आरोपी व्यक्ति के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 354बी और यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम की धारा 10 के तहत मामला दर्ज किया गया। हमारे पास केवल एक सुराग था कि आरोपी व्यक्ति की मूंछें थीं। छात्रा का एक मई को ही स्कूल में दाखिला कराया गया था। उन्होंने कहा कि अस्पताल में बच्ची की चिकित्सकीय जांच की गई और बाद में उसकी काउंसलिंग की गई। बृहस्पतिवार की सुबह बच्ची द्वारा आरोपी की पहचान किए जाने के बाद सुल्तानपुरी में रहने वाले सुनील कुमार (43) को गिरफ्तार कर लिया गया। वह स्कूल में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के रूप में काम करता है।

पूर्व एमडी अशनीर ग्रोवर व अन्य खिलाफ केस दर्ज

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने भारतपे के भारतपे के पूर्व प्रबंध निदेशक अशनीर ग्रोवर और उनकी पत्नी माधुरी जैन ग्रोवर समेत अन्य के खिलाफ केस दर्ज किया है। प्राथमिकी पर ग्रोवर दंपति के अलावा दीपक गुप्ता, सुरेश जैन और श्वेतांक जैन सहित परिवार के सदस्यों के नाम शामिल है। इन सभी पर 81 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी का आरोप लगा है।दिल्ली पुलिस के अनुसार, प्राथमिकी भारतीय दंड संहिता की धारा 406 (आपराधिक विश्वासघात), धारा 420 (धोखाधड़ी), धारा 467 एवं 468 (जालसाजी) समेत आठ धाराओं में दर्ज की गई है।

सिसोदिया बीमार पत्नी से कर सकेंगे वीडियो कॉल से बात

● अदालत ने तिहाड़ जेल अधीक्षक को हर दूसरे दिन एक घंटे वीडियो कॉन्फ्रेंस कराने के दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया अपनी बीमार पत्नी से वीडियो कॉल से बात कर सकेंगे।

उच्च न्यायालय ने तिहाड़ जेल अधीक्षक को सिसोदिया और उनकी पत्नी के बीच हर दूसरे दिन एक घंटे के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंस करने की अनुमति देने का निर्देश दिया। सिसोदिया दिल्ली आबकारी नीति मामले में जेल में बंद हैं। उच्च न्यायालय ने कहा कि सिसोदिया की नियमित और अंतरिम जमानत याचिकाओं पर फैसला होने तक यह निर्देश लागू रहेगा।

न्यायमूर्ति दिनेश कुमार शर्मा ने कहा कि अदालत जल्द से जल्द याचिकाओं पर फैसला करने का प्रयास करेगी। इस बीच, याचिकाओं पर फैसला होने तक जेल अधीक्षक को निर्देश दिया जाता है कि याचिकाकर्ता (सिसोदिया) की अपनी पत्नी के साथ हर दूसरे दिन अपराह्न तीन से चार बजे के बीच नियमानुसार वीडियो कॉन्फ्रेंस सुनिश्चित करें। सीबीआई ने कई बार पूछताछ के बाद 26 फरवरी को दिल्ली आबकारी नीति 2021-22 को तैयार करने और लागू करने में कथित भ्रष्टाचार के आरोप में सिसोदिया को गिरफ्तार किया था।

मालूम हो कि सीबीआई शराब नीति केस में अनियमितता की जांच कर रही है। एजेंसी ने 8 घंटे की पूछताछ के बाद 26 फरवरी को सिसोदिया को गिरफ्तार किया था।

सिसोदिया के खिलाफ ईडी की चार्जशीट पर सुनवाई 19 मई को

दिल्ली शराब नीति केस में मनीष सिसोदिया के खिलाफ प्रवर्तन निदेशाल की ओर से दाखिल पांचवी चार्जशीट पर बुधवार को होने वाली सुनवाई टल गई। अब राउज एवेन्यु कोर्ट मामले में 19 मई को सुनवाई करेगी। ज्ञात हो कि 4 मई को जांच एजेंसी ने कोर्ट में चौथी सप्लीमेंट्री (पांचवी चार्जशीट) दाखिल की थी। जिसमें ईडी ने सिसोदिया को पहली बार आरोपी बनाते हुए कहा था कि इस मामले में वे मुख्य साजिशकर्ता हैं। इससे पहले जांच एजेंसी ने तीसरी सप्लीमेंट्री चार्जशीट में आरोप लगाया था कि शराब ीति केस में आम आदमी पार्टी के कुछ बड़े नेता और बीआरएस नेता के कविता, वाईएसआर कांग्रेस सांसद वाले तथाकथित साउथ ग्रुप का षड्यंत्र था। ईडी ने कोर्ट में दाखिल दूसरी सप्लीमेंट्री चार्जशीट में दावा किया था कि विजय नायर और आम आदमी पार्टी के कई नेता मनीष सिसोदिया के इशारों पर काम कर रहे थे। इसके बाद से वे एजेंसी की हिरासत में हैं। इससे पहले 31 मार्च को सेशन कोर्ट उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी। तब सिसोदिया ने जमानत के लिए हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था।

ईडी, आयकर विभाग ने हवाला सिंडिकेट के खिलाफ शुरू की जांच

नई दिल्ली। दिल्ली के एक कथित हवाला कारोबारी की गिरफ्तारी के बाद प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और आयकर विभाग ने क्रिप्टोकरेंसी और अन्य अवैध तरीकों से करोड़ों रुपए विदेश भेजने वाले सिंडिकेट की जांच शुरू की है।

आयकर विभाग द्वारा साझा की गई जानकारी के बाद जयप्रकाश सिंघल को ईडी ने पिछले महीने धन शोधन निवारण अधिनियम की आपराधिक धाराओं के तहत हिरासत में लिया था। हवाला कारोबार करने वाले इस गिरोह और सिंघल के खिलाफ 28 अप्रैल को दिल्ली में छापेमारी की थी। सिंघल के खिलाफ दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) द्वारा दायर कुछ मामले हैं और वह आयकर विभाग की जांच के दायरे में भी थे।

देश-दुनिया की नर्सेज को सेल्यूट करने का दिन है नर्सिंग-डे

मरीजों को मानसिक मजबूती, भावुकता से सेवा करने का दूसरा नाम है नर्सिंग

नर्सिंग के पेशे में कठोर नहीं कोमल हृदय वालों का होना होता है उचित

इंसानियत के तौर पर नर्सिंग की ड्यूटी कभी खत्म नहीं होती

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

यह सच है कि कोरोना महामारी में लाखों लोगों की हमारे देश में मौत हुई थी। इससे भी बड़ा सच यह है कि इस दौरान में करोड़ों कोरोना संक्रमितों की जान भी बचाई गई। इसका श्रेय जाता है नर्सिंग ऑफिसर्स को। कोरोना संक्रमितों का उपचार करते-करते नर्सिंग ऑफिसर्स स्वयं भी संक्रमित हुए, लेकिन संक्रमण पर जीत करके उन्होंने फिर से कोरोना संक्रमितों का जीवन बचाने का काम किया।

विश्वभर में 12 मई को मनाए जाने वाले नर्सिज दिवस पर हम ऐसे वॉरियर्स को सेल्यूट करें, जो कि एक गंभीर परिस्थिति के भी मरीज के जीवन को बचाने में उसकी आखिरी सांस तक पूरे समर्पण भाव से काम करते हैं। इस दिवस पर नर्सिज के इंसानियत के प्रति योगदान के लिए उन्हें नमन करना हमारा फर्ज है। नर्सिज दिवस दया, करुणा और सेवा की प्रतिमूर्ति फ्लोरेंस नाइटिंगेल की याद में मनाया जाता है। नर्सिंग को प्रोफेशन से ज्यादा सेवा का माध्यम माना जाता है। आजीविका के लिए वेतन जरूर मिलता है, लेकिन उस वेतन से कहीं अधिक मूल्यवान है नर्सिंग ऑफिसर्स द्वारा मरीज के जीवन को बचाने में योगदान।

समृद्ध परिवार में होकर भी चुना यह प्रोफेशन : 12 मई 1820 को फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जन्म इटली में रह रहे एक समृद्ध ब्रिटिश परिवार में हुआ था। उनका पालन-पोषण इंग्लैंड में हुआ। वह बेहद ही खूबसूरत, शिक्षित और समझदार युवती थीं। मात्र 16 साल की उम्र में ही उनकी अंतरात्मा से उन्हें अहसास हो गया था कि उनका जीवन सेवा कार्यों के लिए बना है। परिवार के साथ यूरोप के सफर पर गई फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने माता-पिता को बताया था कि वह एक ऐसी नर्स बनना चाहती हैं, जो मरीजों की अच्छी तरह से, आत्मीयता से सेवा व देखभाल कर सके। उनकी इस बात पर माता-पिता नाराज भी हुए थे, क्योंकि विक्टोरिया काल में ब्रिटेन में अमीर घरानों की महिलाएं कोई काम नहीं करती थीं। धनी परिवार की लड़कियों के लिए इस पेशे को सही नहीं माना जाता था। इसके बावजूद फ्लोरेंस ने जिद की। वर्ष 1845 में अभावग्रस्त लोगों की सेवा का प्रण लिया। यहां तक कि वर्ष 1849 में उन्होंने शादी के प्रस्ताव तक को ठुकरा दिया था। उन्होंने परिवार को साफ कह दिया था कि वह इंसानियत की सेवा के लिए नर्स ही बनेगी।

1854 में क्रीमिया युद्ध में घायलों की खूब की सेवा : नर्सिंग के क्षेत्र में पहली बार उनका विशेष योगदान वर्ष 1854 में क्रीमिया युद्ध में देखा गया। युद्ध में सैनिकों के जख्मी होने, ठंड, भूख व बीमारी से मरने की खबरें आईं। उनकी देखभाल के लिए कोई नहीं था। ब्रिटिश सरकार ने फ्लोरेंस नाईटिंगेल के नेतृत्व में अक्टूबर 1854 में 38 नर्सों का दल घायल सैनिकों की देखभाल के लिए भेजा। फ्लोरेंस नाइटिंगेल अपनी ड्यूटी के बाद भी रात के गहन अंधेरे में लालटेन लेकर घायलों की सेवा करती रहतीं। उस समय के सेवा कार्यों के दौरान उन्हें लेडी विद द लैंप भी कहा जाने लगा। युद्ध समाप्त होने के बाद जब वे वापस लौटीं तो वे एक नायिका के तौर पर उभरीं। अखबारों में उनकी खूबियों के खूब लेख प्रकाशित हुए। फ्लोरेंस नाईटिंगेल के सुझावों पर ही सैन्य चिकित्सा प्रणाली में बड़े बदलाव व सुधार किए गए।

> **अस्पताल** में उपचार करते समय मरीजों को तकलीफ भी होती है। उन्हें दर्द भी होता है। मरीजों को गुस्सा भी आता है। ऐसे में जरूरी है कि एक नर्सिंग अधिकारी भावनात्मक रूप से काम करे, ना कि मरीज के गुस्से रिएक्शन करे। कई बार मरीज मानसिक रूप से काफी परेशान होते हैं। उन्हें मानसिक मजबूत बनाना नर्सिंग अधिकारी का फर्ज है। नर्सेज कठोरता को त्याग कोमलता से काम करें। ऐसा करके मरीजों की आधी बीमारी बिना दवाई दूर कर सकते हैं।
>
>
>
> **-पूनम सहराय, नर्सिंग अधिकारी नागरिक अस्पताल, गुरुग्राम**
>
> **नर्सिंग** का पेशा अपने आप में बहुत ही संवेदनशील होता है। किसी के जीवन को बचाना ही एक नर्सिंग अधिकारी के जीवन का उद्देश्य होता है। नर्सिंग के प्रोफेशन को चुनने वाले महिला या पुरुष का संवेदनशील होना, भावुक होना बहुत जरूरी है। हर नर्सिंग अधिकारी को यही चाहिए कि वह व्यक्तिगत जीवन की कठिनाइयों को दरकिनार करके अपने प्रोफेशन और मरीजों के साथ इंसाफी करे। हमारे भीतर नि:स्वार्थ सेवा करने की भावना बहुत जरूरी है।
>
>
>
> **-इंदू बाला, नर्सिंग अधिकारी, एम्स दिल्ली**
>
> **बीमारी** में अपने भी साथ छोड़ देते हैं, ऐसे समय में एक नर्सिंग ही है। जो बिना किसी रिश्ते के मरीजों का इंसानियत को सबसे अहम मानती हैं। एक नर्स ही है जो बिना किसी नुस्खे के आराम, करुणा और देखभाल करती है। एक नर्स ही है जो माता-पिता, भाई-बहन की तरह एक मरीज का ख्याल रखती है। सगे-संबंधी एक समय में मरीज से दूर हो जाते हैं, फिर भी एक नर्स उस मरीज की अपनों से बढ़कर देखभाल करती है।
>
>
>
> **-सुमन बाला, नर्सिंग ऑफिसर एम्स, दिल्ली**

संक्षिप्त समाचार

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तहत निकाली जागरुकता रैली

गुरुग्राम। महिला एवं बाल विकास विभाग की तरफ से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के अंतर्गत रैली निकाली गई। इस रैली का शुभारंभ सुपरवाइजर सुषमा द्वारा किया गया। यह रैली शिवाजी नगर सरकारी स्कूल से पटौदी चौक तक निकाली गई। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं क्षेत्र की महिलाओं ने भी शिरकत की। सुपरवाइजर सुषमा ने कहा कि इस जागरूकता रैली का उद्देश्य बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना से पूरे जीवन काल में शिशु में लिंग अनुपात में कमी को रोकने में मदद मिलती है। महिलाओं के सशक्तिकरण से जुड़े मुद्दों का समाधान होता है। ऐसे में बेटियों के प्रति समाज की इस नकारात्मक सोच में बदलाव लाने और उन्हें शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग मिलता है। उन्होंने कहा कि सरकार बालिका के माता-पिता को उसके भविष्य के लिए बचत करने की सुविधा प्रदान करती है। उन्हें आर्थिक सहयोग भी प्रदान करती है, इसके लिए आपकी बेटी हमारी बेटी योजना लागू की गई है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरुआत देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 22 जनवरी 2015 को की गई थी। इसका उद्देश्य लड़कियों के साथ होने वाले भेदभाव को दूर करना है। लिंग अनुपात को सुधारना है और लड़कियों को शिक्षित करना है।

टेक रेस प्रतियोगिता में पीयूष व प्रतीक की टीम ने मारी बाजी

गुरुग्राम। प्रौद्योगिकी के महत्व, समग्र विकास के लिए गुरुग्राम विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर पोस्टर मेकिंग, टेक रेस और तकनीकी विशेषज्ञता विषय पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी विभाग द्वारा ये प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इस मौके पर विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. शैली सचदेवा, एनआईटी दिल्ली व कुलपति प्रो. दिनेश कुमार उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में द्रोणाचार्य कॉलेज, और गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लेते हुए अपने प्रोजेक्ट की प्रदर्शनी लगाकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में ऋषिता ने पहला, चांदनी ने दूसरा एवं अंशिका वर्मा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। टेक रेस प्रतियोगिता में पीयूष गर्ग और प्रतीक सिंह की टीम ने प्रथम, नितिन यादव और रवि कुमार की टीम ने दूसरा, सौरभ सिंह और कनक तंवर की टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस मौके पर कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर आयोजित इन प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने विभिन्न विधाओं में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए बदलावों का बेहतरीन प्रदर्शन किया है। उन्होंने इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी विभाग के डीन प्रो. मुकेश कुमार सहित पूरी टीम को सफल कार्यक्रम की बधाई दी।

फरूखनगर को मिला 50 बेड का नागरिक अस्पताल

गुरुग्राम। गुरुग्राम में स्वास्थ्य सेवाओं को विस्तार देते हुए गुरुवार को मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने फरूखनगर को 50 बेड के नागरिक अस्पताल की सौगात दी। उन्होंने इसका वर्चुअली उद्घाटन किया। वे यमुनानगर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में मौजूद रहे और वहीं से गुरुग्राम समेत प्रदेश के कई जिलों में विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया। फरूखनगर में आयोजित उद्घाटन कार्यक्रम में बादशाहपुर के विधायक राकेश दौलताबाद व डीसी निशांत कुमार यादव सहित आसपास के क्षेत्र से आए अन्य गणमान्य उपस्थित थे। स्थानीय सांसद व केंद्रीय राज्य मंत्री राव इंद्रजीत सिंह नागरिक अस्पताल के लोकार्पण कार्यक्रम में वर्चुअल माध्यम से जुड़े। केंद्रीय राज्यमंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि फरूखनगर का 50 बेड का नागरिक अस्पताल क्षेत्र में स्वास्थ्य विभाग को मजबूत करने में सहायक साबित होगा। पांच एकड़ के पहले नागरिक अस्पताल से फरूखनगर तथा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को इसका लाभ मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार हरियाणावासियों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य क्षेत्र के सेवाओं व सुविधाओं में निरन्तर इजाफा कर रही है। केंद्रीय मंत्री ने अपने शुभकामना संदेश में गुरुग्राम में बनने वाले नागरिक अस्पताल के निर्माण की कार्य प्रगति का जिक्र करते हुए कहा कि नागरिक अस्पताल के संबंध में उन्होंने पिछले दिनों चंडीगढ़ में प्रदेश के मुख्य सचिव व अन्य अधिकारियों के साथ हुई बैठक कर अस्पताल के निर्माण का खाका जल्द तैयार करने के निर्देश दिए हैं।

नवीन गोयल ने बार एसोसिएशन को कैनविन आरोग्य धाम के उद्घाटन समारोह में आने का दिया न्योता

स्वामी धर्मदेवजी, डा. सुधा यादव, प्रांतीय सह-संघचालक प्रताप रहेंगे उपस्थित

14 मई 2023 को द्रोणाचार्य कालेज में ओल्ड रेलवे रोड की तरफ के मैदान पर होगा कार्यक्रम

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में कैनविन फाउंडेशन के आरोग्य धाम के उद्घाटन कार्यक्रम का जिला बार एसोसिएशन के प्रधान व अन्य सदस्यों को न्योता देते नवीन गोयल।

आगामी 14 मई 2023 को गुरुग्राम को कैनविन आरोग्य धाम के रूप में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक नया व बेहतर विकल्प मिलने जा रहा है। इसके उद्घाटन कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए तैयारियां दिन-रात चल रही हैं। शहर में जगह-जगह पर हॉर्डिंग आदि लगा दिए गए हैं। साथ ही लोगों को कार्यक्रम में निमंत्रण देने के लिए कैनविन की टीम, उनसे जुड़े शहर के मौजिज लोग बाजारों, घरों में व्यक्तिगत रूप से न्यौता दे रहे हैं। इसी कड़ी में गुरुवार को कैनविन फाउंडेशन के सह-संस्थापक नवीन गोयल ने बार एसोसिएशन में पदाधिकारियों को कार्यक्रम का निमंत्रण दिया।ओल्ड रेलवे रोड पर द्रोणाचार्य कालेज के खेल मैदान में भव्य उद्घाटन समारोह होगा। समारोह में हरियाणा के महामहिम राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय जी, महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेवजी, भाजपा संसदीय बोर्ड सदस्य एवं केंद्रीय चुनाव समिति की सदस्य डा. सुधा यादव, आरएसएस के प्रांतीय सह-संघचालक प्रताप जी, सिविल सर्जन डा. विरेंद्र यादव, द्रोणाचार्य राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य वीरेंद्र अंतिल की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। नवीन गोयल ने यहां बार एसोसिएशन के प्रधान मीर सिंह यादव, परविंद्र कौशिक, हरप्रीत समेत अनेक वकीलों को इस कार्यक्रम के निमंत्रण पत्र सौंपे। बार एसोसिएशन के प्रधान मीर सिंह यादव ने कार्यक्रम की अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए कहा कि कैनविन फाउंडेशन ने गुरुग्राम शहर में जिस तरह से फ्री के बराबर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं, गुरुग्राम की जनता को लाभ हुआ है।

वर्क इंडिया के सर्वे में सामने आया तथ्य 41 प्रतिशत ब्लू-कॉलर कर्मचारी करते हैं तकनीकी कार्य

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

तकनीकी उन्नयन से रोजगार को नया स्वरूप मिल रहा है और इससे कभी मुख्य तौर पर शारीरिक श्रम से जुड़े रहे ब्लू-कॉलर रोजगार ने एक उल्लेखनीय परिवर्तन का अनुभव किया है। ब्लू-कॉलर की नियुक्ति के लिए भारत के सबसे बड़े टेक प्लेटफॉर्म वर्कइंडिया ने ब्लू-कॉलर क्षेत्र के बदलते डायनामिक्स को समझने के लिए मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे और चेन्नई महानगरों में एक सर्वेक्षण कर रिपोर्ट तैयार की है।

ब्लू-कॉलर श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की बदलती प्रकृति को लेकर सर्वेक्षण में अहम निष्कर्ष सामने आया है। इसके मुताबिक, उनमें से 41 प्रतिशत अब तकनीकी कार्यों से जुड़े हैं, जो ऑटोमेशन और डिजिटलीकरण को अपनाने वाले उद्योगों में कुशल श्रमिकों की बढ़ती मांग को प्रदर्शित करता है। यह बदलाव ब्लू-कॉलर श्रमिकों के लिए नए कौशल हासिल करने और रोजगार की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप ढलने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

कार्यशैली में परिवर्तन के साथ-साथ ब्लू-कॉलर कर्मियों के काम के घंटों में भी व्यापक परिवर्तन आया है। आम धारणा के विपरीत, सर्वेक्षण से पता चला है कि 81 प्रतिशत ब्लू कॉलर कर्मचारियों के काम के घंटे निर्धारित हैं और केवल 19 प्रतिशत के काम के घंटे तय नहीं हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि 20 प्रतिशत कर्मचारी ऐसे हैं, जो निश्चित और बदलते काम के घंटों दोनों के अनुकूल हैं। इससे पता चलता है कि वे पूरे दिन में अलग-अलग नौकरियों से जुड़ने में सक्षम होते हैं। इसमें सामने आया है कि 30 प्रतिशत मैनुअल कर्मचारी दिन के अंत में थकावट महसूस करते हैं, जो दिखाता है कि उनकी नौकरियों में शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है। दिलचस्प बात यह है कि तकनीकी कार्यों से जुड़े 21 प्रतिशत कर्मचारी भी ऐसी ही थकान का अनुभव करते हैं, जो दिखाता है कि तकनीकी कार्य मानसिक और शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण भी हो सकते हैं। तकनीकी और मैनुअल दोनों तरह के काम करने वाले कर्मचारियों में से 25 प्रतिशत ने दिन के अंत तक थकावट अनुभव करने की रिपोर्ट दी। इसके अलावा, सामान्य रूप से 17 प्रतिशत श्रमिकों ने अपने काम के कारण स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव की बात कही।

वर्कइंडिया के सह-संस्थापक और सीईओ कुणाल पाटिल ने कहा, सर्वेक्षण के नतीजे बताते हैं कि मौजूदा परिस्थिति ब्लू-कॉलर कर्मचारियों के बीच चिंता का कारण है। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि 20ब कर्मचारी दिन के आखिर में मानसिक रूप से थक चुके होते हैं। यह समय के साथ उनके उत्पादन को प्रभावित करता है। इन कर्मचारियों को काम पर रखने वाली कंपनियों को उचित काम के घंटे निर्धारित करने चाहिए जो उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में बाधा न बनें।

फिर से जगमग होगी तावडू वाले मार्ग की घाटी

परिषद ने घाटी क्षेत्र में खराब लाइटों को ठीक करने की कवायद शुरू की

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

तावडू जाने वाले मार्ग की घाटी रात के अंधेरे में स्ट्रीट लाइट से जगमग रहेगी। परिषद द्वारा घाटी क्षेत्र में खराब लाइटों को ठीक करने की कवायद शुरू कर दी है। सोहना से तावडू जाने वाले मार्ग के करीब तीन किलोमीटर लंबा घाटी मार्ग को रात के समय जगमग करने के इरादे से नगर परिषद द्वारा स्ट्रीट लाइटें लगाई गई थी। लेकिन यह स्ट्रीट लाइट पिछले करीब एक साल से खराब होने के कारण घाटी में अंधेरा छाया हुआ था। जबकि इस मार्ग 24 घंटा वाहन दौड़ते हैं। दिन की अपेक्षा रात के समय में वाहनों की संख्या दो गुणा होती है। जिसमें 80 फीसदी वाहन भारी मालवाहक वाले होते है। ये वाहन केएमपी समेत रेवाड़ी, नारनौल, भिवाड़ी, महेन्द्रगढ़ और अलवर राजस्थान से आने व जाने वाले होते हैं। इसके अलावा घाटी मार्ग पर सुबह 4 बजे से शहरवासी अपनी मॉर्निंग वॉक के लिए दौड़ लगाते हैं। अरावली पहाड़ी की गोद में बना हरियाणा टूरिज्म निगम का कॉम्पलेक्स पर सुबह चार बजे व शाम 7 बजे से रात करीब 10 बजे तक नागरिकों का आना व जाना लगा रहता है, लेकिन घाटी में छाया अंधकार के कारण नागरिकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था।

सोहना से तावडू जाने वाले मार्ग के घाटी क्षेत्र में खराब स्ट्रीट लाइटों को ठीक करते कर्मचारी।

मार्ग से गुजरते रहते हैं तेंदुए

घाटी मार्ग पर एक ऐसा स्थान है। जहां से हर रात को अरावली में जीवनयापन कर रहे तेंदुए मार्ग को पार करके रात के अंधेरे में अपनी प्यास बुझाने के लिए आते व जाते रहते हैं। यह स्थान घाटी में अंसल मोड़ के पास लगा पुलिस नाका वाला स्थान है। अरावली अंसल के नाके पर तैनात सुरक्षा गार्ड अमरपाल ने बताया कि रात करीब एक से तीन बजे के बीच तेंदुए इस मार्ग से आते व जाते हैं। तेंदुए पहाड़ी में बना तालाब में पानी पीने के लिए जाते है। ऐसे में स्ट्रीट जलने से बाइक व स्कूटी सवार या पैदल चलने वाला नागरिक को तेंदुए नजर आने पर अपने आपको सुरक्षित कर लेता है।

सरसों की सरकारी खरीद बंद, 15 मई तक खरीदा जाएगा गेहूं

सरकारी एजेंसियों ने सरसों की 31 हजार में से 21 हजार क्विंटल खरीद की

हेफेड ने सरकार के लिए करीब 21 हजार क्विंटल गेहूं की खरीद की

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

गेहूं व सरसों की आवक घटने के साथ ही सोहना अनाज मंडी का खाली पड़ा टीन शेड।

स्थानीय अनाज मंडी में सरसों की सरकारी खरीद बंद हो गई। गेहूं की सरकारी खरीद 15 मई तक चलेगी। सरसों की कुल हुई 31 हजार में से 21 हजार क्विंटल सरकार की एजेंसियों द्वारा खरीद की गई। स्थानीय अनाज मंडी में गेहूं व सरसों की आवक दिन प्रति दिन घट रही है।

एक दिन में 2 से 3 हजार क्विंटल गेहूं ही किसान सरकार को बेचने के लिए ला रहा है। जबकि सरसों की सरकारी खरीद एक मई से सरकार के आदेश पर बंद कर दी गई है। इस वर्ष अनाज मंडी में मार्च से लेकर 30 अप्रैल तक 31 हजार 368 क्विंटल सरसों की आवक हुई है। जिसमें से हरियाणा वेयर कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड एजेंसी व हेफेड ने मिलकर 21 हजार क्विंटल सरसों को सरकार के खाते में खरीदा। करीब 10 हजार क्विंटल सरसों बारिश व ओलावृष्टि से खराब हो जाने पर निजी एजेंसियों ने खरीद की। यह खरीद तेल मील के लिए निजी एजेंसी मालिकों ने खरीदकर भेजा। हरियाणा वेयर कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड एजेंसी ने करीब 15 हजार क्विंटल सरसों किसानों से खरीदा तथा हेफेड ने 6 हजार के लगभग सरसों की खरीद की।

गेहूं की आवक : इस वर्ष किसानों द्वारा सरकार को बेचने के लिए अनाज मंडी में कुल 21 हजार 931 क्विंटल गेहूं लाया गया। किसानों के गेहूं को हेफेड ने सरकार के लिए करीब 21 हजार क्विंटल की खरीद की। बारिश व ओलावृष्टि से इस बार गेहूं की फसल खराब हो जाने के कारण किसानों ने निजी स्तर पर ही बेचना अधिक पसंद किया। इसलिए गेहूं इस बार मंडी में कम ही आया।

> **गेहूं** की आवक दिन प्रति दिन घट रही है। गेहूं की सरकारी खरीद 15 तक चलेगी। जबकि सरसों की एक मई को बंद हो चुकी है। अब तक किसानों से खरीदी गई गेहूं व सरसों की फसलों का भुगतान कर दिया है। वर्तमान में जो किसान गेहूं लेकर आ रहे है। उसका भुगतान भी 72 घंटा के अंदर किया जा रहा है।
>
> **मुकेश कुमार**
> **(इंस्पेक्टर हेफेड)**

खगोल लैब में भौतिक, रसायनिक व जीव विज्ञान की पढ़ाई करेंगी छात्राएं

छात्राओं को पाठ्यक्रम के साथ-साथ अब प्रैक्टिकल के माध्यम से पढ़ना होगा आसान

स्कूल में निजी संस्था ने साढ़े तीन लाख रुपये से खगोल लैब स्थापित की

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

सोहना के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में स्थापित की गई खगोल लैब।

शहर के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में साईंस पढ़ने वाली छात्राओं को पाठ्यक्रम की पढ़ाई के साथ-साथ अब प्रैक्टिकल (अभ्यास) के माध्यम से पढ़ना आसान होगा। स्कूल में निजी संस्था द्वारा करीब साढ़े तीन लाख रुपये की लागत से खगोल की लैब स्थापित की। जिसमें आकाशीय पिंड के साथ-साथ भौतिक, रासायनिक और जीव विज्ञान के पाठ्यक्रम की पढ़ाई आसानी से कर सकेंगी।

शिक्षा विभाग के दिशा निर्देश पर जिला गुरुग्राम के चार राजकीय स्कूलों में खगोल की लैब स्थापित की जाएगी। जिले में चुने गए चार स्कूलों में से सोहना का राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल भी शामिल है। इस स्कूल में सबसे पहले निजी संस्था के माध्यम से खगोल की लैब स्थापित की गई।

साइंस का विषय पढ़ने वाली कक्षा-2 से 12वीं की छात्राओं को पाठ्यक्रम को पढ़ना आसान होगा। जिसमें खगोल के साथ-साथ भौतिक, रसायनिक और जीव विज्ञान से संबंधित कार्यरत मॉडल स्थापित किए हैं। जिनका उपयोग करके छात्राओं को अपने पाठ्यक्रम से संबंधित विषय की जानकारी प्राप्त करना आसान होगा।

लैब में है 35 मॉडल समेत चार्ट और दूरबीन

स्कूल परिसर में स्थापित की गई लैब में करीब 35 मॉडल रखे गए हैं। इसके अलावा 40 प्रकार के चार्ट दीवारों पर चस्पा किए गए हैं। लैब प्रभारी प्राध्यापक अनिल शर्मा ने बताया कि इसके अलावा दूरबीन भी रखी गई है। मॉडल कार्यरत होने से छात्राओं को अभ्यास करने व समझने में आसानी होगी।

> **शिक्षा** विभाग के उठाए गए इस कदम से छात्राओं के उज्जवल भविष्य में बहुत ही अच्छा कदम है। वहीं साइंस पाठ्यक्रम से शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं को लैब में पूरा समय दिया जाएगा।
>
> **जयवीर सिंह**
> **(प्रधानाचार्य स्कूल)**

मदर्स-डे पर होंडा इंडिया फाउंडेशन ने किया स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम

होंडा के सीएमओ डॉ. मनोज हांडा ने महिला स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा की

ऑपरेटिंग हेड सत्यप्रकाश पाटिल ने सभी महिलाओं को मातृत्व दिवस की शुभकामनाएं दीं

प्रवीन शर्मा। गुरुग्राम

मदर्स-डे के अवसर पर होंडा इंडिया फाउंडेशन के तत्वावधान में होंडा सामाजिक विकास केंद्र नौरंगपुर में आसपास के गांव की महिलाओं लिए स्वास्थ्य एवं सेहत सम्बन्धी जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर होंडा के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर मनोज हांडा ने महिलाओं को होने वाली विभिन्न स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के बारे में विस्तार से बात की। इनसे बचने के उपायों के बारे में भी बताया। होंडा के मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने यह भी बताया की महिलाओं को अपने स्वास्थय से जुडी समस्याओं को अपने चिकित्सक से अच्छे से डिस्कस करना चाहिए ताकि समय रहते उनका उचित इलाज हो सके अन्यथा छोटी बीमारी भी ध्यान न देने की वजह से गंभीर समस्या बन सकती है। इस खास मौके पर होंडा इंडिया फाउंडेशन के ऑपरेटिंग हेड सत्यप्रकाश पाटिल ने सभी महिलाओं को मातृत्व दिवस की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर होंडा इंडिया फाउंडेशन की पूरी टीम, आसपास के सभी गांव के सरपंच, महिलाएं व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गुरुग्राम के गांव नौरंगपुर में होंडा इंडिया फाउंडेशन की ओर से लगाए गए स्वास्थ्य शिविर में शामिल महिलाएं व ग्रामीण।

अंत्योदय मेले में बडोली ब्लॉक के पात्र परिवारों ने उठाया लाभ

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना का मुख्य उद्देश्य गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों के आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाना है। इसी उद्देश्य से सरकार की ओर से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में योजना के पात्र परिवारों को लाभान्वित करने के लिए मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान मेले का आयोजन किया जा रहा है।

यह बात नगराधीश द्विजा नेचांटहट के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में बडोली खंड के मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना के पात्र परिवारों को लाभ देने के लिए लगाए गए मेले में निरीक्षण के दौरान कही। उन्होंने कहा कि सरकार योजना के पात्र परिवारों को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं, परियोजनाओं व लाभकारी नीतियों से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए तत्पर है। इस मौके पर उन्होंने मेले का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर उनके साथ एससीपीओ पंचायत बडोली ऋषिपाल, जसवंत सिंह, मुख्यमंत्री के सुशासन सहयोगी आश्रय सिंघल, एलडीएम ओमप्रकाश भी मौजूद रहे। सीटीएम द्विजा ने कहा कि सरकार की ओर से योजना को क्रियान्वित करने का मुख्य उद्देश्य यही है कि जिन परिवारों की वार्षिक आमदनी एक लाख 80 हजार रुपये से कम है, उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करके उनकी वार्षिक आय में वृद्धि की जाए। उपायुक्त नेहा सिंह के मार्गदर्शन में जिला पलवल

मेले में शिरकत करते लोग।

के विभिन्न खंडों व शहरी क्षेत्रों में अंत्योदय योजना के चौथे चरण के मेलों का आयोजन 13 मई तक किया जा रहा है।

नगराधीश ने कहा कि जिला प्रशासन ने एक ही छत के नीचे 18 विभागों की हेल्प डेस्क लगाकर सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी देने के साथ-साथ पात्र परिवारों को सरकार की योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है।

मेले में आए पात्र परिवारों को प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से जोडकर उन्हें लाभ प्रदान करना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने बताया कि मेले में योजना का लाभ लेने के लिए लाभपात्र अपने दस्तावेज जमा कराकर लाभ उठा रहे हैं। दस्तावेजों की जांच के उपरांत बैंक द्वारा ऋण प्रदान किया जाएगा, जिसके माध्यम से पात्र व्यक्ति अपना व्यवसाय शुरू कर आर्थिक रूप से मजबूत बन सकेंगे। मेले में स्वास्थ्य विभाग द्वारा निरोगी हरियाणा योजना के तहत आए सभी लाभार्थियों के स्वास्थ्य की जांच कर, उन्हें दवाइयां निशुल्क वितरित की गईं।

मेले में संबंधित विभिन्न विभागों द्वारा अपने स्टॉल स्थापित कर लाभार्थियों को अपने-अपने विभाग की योजनाओं की जानकारी दी। अंत्योदय मेले में हरियाणा अनुसूचित जातियां वित्तीय एवं विकास निगम, रेडक्रॉस सोसायटी, हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद, हरियाणा महिला विकास निगम, हरियाणा कौशल विकास मिशन, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम निदेशालय, सीएससी ई-गवर्नेंस सर्विसेज, रोजगार विभाग, मत्स्य पालन विभाग, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा ग्रामीण आजीविका विकास निगम, स्वास्थ्य विभाग, उद्यान विभाग, हरियाणा पिछड़े वर्ग एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग कल्याण विभाग, हरियाणा डेयरी विकास सहकारी प्रसंघ लिमिटेड, हरियाणा एग्रो इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन लिमिटेड, विकास एवं पंचायत विभाग के अधिकारियों ने पात्र परिवारों को अपने-अपने विभाग तथा बैंक द्वारा प्रदान की जारी योजनाओं, अनुदान व ऋण की जानकारी दी।

सीआईए होडल ने एनसीआर में साइबर ठगी करने के दो आरोपी धरे

आरोपियों से फर्जी आधार कार्ड, 10 लाख 14 हजार रुपये, 14 एटीएम कार्ड व हथियार बरामद

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

प्रेस वार्ता कर जानकारी देते अपराध जांच शाखा होडल प्रभारी अनिल कुमार व अन्य

होडल सीआईए पुलिस ने साइबर ठगी गिरोह के दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनसे 10 लाख कैश, 14 एटीएम कार्ड व अवैध हथियार बरामद किए हैं। सीआईए होडल प्रभारी अनिल ने प्रेसवार्ता कर यह जानकारी देते हुए बताया कि शीघ्र ही अन्य साथी भी गिरफ्त में होंगे।

उन्होंने बताया कि सहायक उपनिरीक्षक महानंद अपनी टीम में शामिल विनोद कुमार, सुरेंद्र, सिपाही नीरज एवं सरकारी गाड़ी चालक सिपाही शंकरलाल के साथ दूधौला मोड़ पर गश्त पर थे। उन्हें सूचना प्राप्त हुई कि दो युवक जो साइबर ठगी करके अलग-अलग एटीएम कार्डों से पैसे निकालते हैं। फरीदाबाद से एटीएम से पैसे निकालकर अपनी गाड़ी से पलवल की तरफ जाएंगे। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने डूंडसा मोड़ नजदीक टोल टैक्स गदपुरी पर पहुंचकर नाकाबंदी शुरू की।

करीब 10/15 मिनट बाद वह गाड़ी फरीदाबाद की तरफ से आती दिखाई दी। गाड़ी में बैठे दो युवकों ने भागने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने दोनों युवकों को काबू कर किया। ड्राइवर सीट पर बैठे युवक की पहचान मोहम्मद इरशाद निवासी खाईका थाना बहीन के रूप में हुई। जिसकी तलाशी के दौरान विभिन्न बैंक के नॉ कार्ड एवं एक देशी कट्टा बरामद हुआ।

कंडेक्टर साइड में बैठे आरोपी की पहचान राहुल निवासी खाइका थाना बहीन के रूप में हुई। जिसकी तलाशी में विभिन्न बैंक के पांच एटीएम कार्ड व दो आधार कार्ड जिनमें आरोपी राहुल के फोटो तथा नाम पता अलग-अलग व एक जिंदा रोंद बरामद हुए। आधार कार्ड के बारे में राहुल ने बताया कि वह पुलिस को चकमा देने के लिए फर्जी आधार कार्ड बनवा रखा है, ताकि पहचान न हो सके। गाड़ी की तलाशी पर उन्हें 10 लाख 14 हजार रुपये कैश बरामद हुए।

वारदात का तरीका : प्रभारी सीआईए होडल के अनुसार गहन पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उनके साथी आसिद व आमिर दिलशाद निवासी बामनी थाना जुरेहडा जिला भरतपुर राजस्थान के रहने वाले हैं, जो साइबर ठगी का काम करते हैं। वे लोगों से साइबर ठगी करके रुपये फर्जी खातो में डालवाते हैं और उन रुपयों को फरीदाबाद, पलवल व गुरूग्राम से एटीएम से पैसे निकालकर आसिद व आमिर को ले जाकर गांव बामनी में दे देते हैं। सभी आपस में अपना-अपना हिस्सा बांट लेते हैं। मामले में आरोपियों के खिलाफ आईपीसी एवं शस्त्र अधिनियम के के तहत थाना गदपुरी में मामला दर्ज किया गया है। आरोपियों से अन्य वारदातों के खुलासे होने की संभावना है। अभी तक अनुमानित करोड़ों रुपए की ठगी की वारदात को अंजाम दिया है।

चुनावी रंजिश में सरपंच परिवार पर हमला, तीन घायल

डॉक्टर को दिखाकर घर लौटते समय की वारदात

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

पलवल में चुनावी रंजिश में विपक्ष ने मौजूद महिला सरपंच व उसके पति पर जानलेवा हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। साथ ही आरोपियों ने उनकी गाड़ी तोड़ दी। गदपुरी थाना पुलिस ने पीड़ित महिला सरपंच के पति की शिकायत पर पांच नामजद के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। फिलहाल पुलिस किसी भी आरोपी को गिरफ्तार नहीं कर पाई है।

गदपुरी थाना प्रभारी राजबीर सिंह के अनुसार, मीरापुर गांव निवासी दिनेश तेवतिया ने दी शिकायत में कहा है कि वर्ष 2022 में हुए ग्राम पंचायत चुनाव में उसकी पत्नी अंशुल सरपंच पद का चुनाव जीती थी। उसके सामने चुनाव लड़ी कुमरपाल की पत्नी अंजू चुनाव हार गई थी। अंजू का परिवार इसी बात पर उनके परिवार से रंजिश रखे हुए था। शिकायत के अनुसार उसकी पत्नी अंशुल आठ माह की गर्भवती है। पेट में दर्द बनने पर पीड़ित अपनी पत्नी को रात के समय अपनी कार से उसे लेकर डॉक्टर के पास गया था। वापस आते समय गांव में श्मशान घाट के पास गांव निवासी सतपाल, भागीरथ, मनोज, बदन सिंह व तरुण ट्रैक्टर लेकर खड़े थे। आरोपी हाथों में तलवार, फरसा, देसी पिस्तौल व कुल्हाड़ी लिए हुए थे। पीड़ित का आरोप है कि आरोपियों ने उसकी गाड़ी को ट्रैक्टर से टक्कर मारकर रोक लिया।

आरोपियों ने उसकी पत्नी व उसे गाड़ी से बाहर खींचने का प्रयास किया। इसी दौरान उसका भाई दीपेश, बुआ का लड़का रविंद्र डागर, जनौली निवासी विकाश व दूसरी गाड़ी में राजेंद्र मौके पर आ गए। आरोपियों ने उन पर भी हथियारों से हमला कर दिया। भागीरथ ने ट्रैक्टर चढ़ाकर पैर तोड़ दिया तथा टक्कर मारकर गाड़ियां तोड़ दीं। हमले में विकास, रविंद्र व राजेंद्र गंभीर रूप से घायल हो गए। गांव के लोगों को आता देख आरोपी जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है। जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

विद्यार्थियों को योग का प्रशिक्षण देते गुरमेश सिंह

पलवल। जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन पलवल व योग समिति हथीन के संयुक्त तत्वावधान में योगाचार्य गुरमेश सिंह आर्य के सानिध्य में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक संस्कृति मॉडल स्कूल हथीन में योग एवं चिकित्सा शिविर का शुभारंभ गायत्री मंत्र से किया गया। जिसमें क्षेत्र के लगभग 600 प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजेश कुमारी ने की, संयोजन संतराम ने किया। शिविर के दौरान योगाचार्य गुरमेश सिंह ने छात्रों को जोगिंग, सूर्य नमस्कार, सूक्ष्म व्यायाम, दंड बैठक के प्रकार, नौली क्रिया तथा आसन में ताड़ासन, त्रिकोणासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, उत्कटासन, पद्मासन, पश्चिमोत्तानासन, सर्वांगासन, हलासन, चक्रासन, धनुरासन, पदममयूरासन, शीर्षासन, धनुरासन, नौकासन के अभ्यास के साथ ही प्राणायाम में भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम विलोम, उज्जाई, आंतरिक उद्यानबंध, भंवरी, उदगीर, ओंकाजाप का अभ्यास कराया गया। उन्होंने बताया कि शिविर की श्रृंखला में 21 जून योग दिवस को लेकर प्रत्येक स्कूल कॉलेज व जिला राज्य स्तर पर कार्यक्रम की तैयारियां चल रही हैं। इस अवसर पर हितेश कुमार, संदीप कुमार, संतराम, जयपाल, चंद्रिका, सुनील कुमार, सोफिक, हुसैन आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

विधवा महिला को खेत में ले जाकर तीन युवकों ने किया दुष्कर्म

पलवल। काम की तलाश में आयी एक विधवा महिला से गैंगरेप किया गया। एक युवक उसे उसे बहका कर खेतों में ले गए थे। बाद में आरोपी ने अपने दो साथियों के साथ मिलकर सामूहिक दुष्कर्म किया। गदपुरी थाना पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर तीन नामजद आरोपियों के खिलाफ गैंग रेप व जान से मारने की धमकी देने का मुकदमा दर्ज कर लिया है। अभी तक पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया है। गदपुरी थाना प्रभारी इंस्पेक्टर राजबीर सिंह के अनुसार बल्लभगढ़ थाना अंतर्गत रहने वाली एक महिला ने शिकायत दर्ज कराई है कि उसके पति की मौत हो गई है। काम की तलाश वह पृथला गई थी। पृथला में उसकी मुलाकात मंडकौला निवासी अशोक से हुई। अशोक उसे काम दिलाने के बहाने खेतों में ले गया, जहां पहले से ही बंचारी निवासी धीरज व माहौली निवासी पवन मौजूद थे। महिला ने बताया कि वहां पर तीनों ने बारी-बारी उसके साथ दुष्कर्म किया। किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। महिला उनके चंगुल से निकलने के बाद पुलिस के पास पहुंची और वारदात की जानकारी दी। पुलिस का कहना है कि आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

कुमारी अमीशा को मिला मिस सरस्वती का खिताब

पलवल। सरस्वती महिला महाविद्यालय पलवल में स्नातकोत्तर विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि निदेशिका, सरस्वती महिला महाविद्यालय, मनीषा मंगला, प्राचार्या डॉ. अनिता कौशिक व समस्त प्राध्यापिकाओं द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में महाविद्यालय की प्राचार्या द्वारा निदेशिका को स्मृति चिन्ह व छात्राओं द्वारा प्राचार्या महोदया को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस अवसर पर प्राचार्या ने आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ व्यवहार कुशलता, हर्ष व विषाद की मिली जुली अनोखी भावनाओं को व्यक्त किया। सभी प्राध्यापिकाओं द्वारा छात्राओं के पठन-पाठन व संरक्षण की प्रशंसा करते हुए उनका अभिनंदन किया। साथ ही छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। समारोह में मिस सरस्वती-2023 प्रतियोगिता का आयोजन ज्योति चावला और सोनिया श्रीधर द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका डोली भारद्वाज, डॉ. श्वेता छाबडा व नीलम रानी की रही। डॉ. प्रोमिला भारद्वाज ने छात्राओं को बधाई देते हुए जीवन में आगे बढने की प्रेरणा दी। प्रतियोगिता में अमीशा को मिस सरस्वती का खिताब मिला, मोहिनी प्रथम रनरअप व निधि द्वितीय रनरअप रही। कार्यक्रम में मंच संचालन का कार्य डॉ. रेखा तेवतिया व डॉ. शुचि दीवान द्वारा किया गया।

हत्यारोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर कमिश्नर से मिले

फरीदाबाद। ग्रेटर फरीदाबाद में पलवली गांव के यादराम की हत्या को एक महीना हो गया। लेकिन इस हत्याकांड के पूरे आरोपी अभी पुलिस की गिरफ्त से दूर हैं। इससे पीड़ित परिवार में रोष है। इसी के चलते पीड़ित पक्ष के लोग गुरुवार को पुलिस कमिश्नर विकास कुमार अरोड़ा से मिलकर फरार आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की। पुलिस कमिश्नर ने डीसीपी क्राइम मुकेश मल्होत्रा से पीड़ित को न्याय दिलाने को कहा। 11 अप्रैल को पलवली गांव में ग्रामीण तुलेराम और विद्या देवी के परिवार में कहासुनी हो गई थी, लेकिन दोनों को शांत करा दिया था। विद्या देवी परिवार ने इस कहासुनी को अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया, जिससे विद्या देवी परिवार ने तुलेराम परिवार पर 12 अप्रैल को बेसबॉल व चाकुओं से हमला कर दिया था। बाइक के साइड स्टैंड से भी वार किया गया और ईंट फेंकी गई। आरोप है कि 38 साल के यादराम को चाकू से चीर दिया था। बीच बचाव कराने आए तुलेराम, यादराम की पत्नी प्रीति, तुलेराम की पत्नी ओमवती चाकू लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि संतराम भी लात-घूसों से घायल हो गए। यादराम की अस्पताल में मौत हो गई थी। हालांकि क्राइम ब्रांच की टीम ने जांच करते हुए सात आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन चार अन्य आरोपी गिरफ्त से बाहर हैं। इस हत्याकांड में ग्रामीण प्रेमचंद, यादराम की पत्नी प्रीति, संतराम, कपिल, जयचंद, प्रकाश, प्रहलाद, डॉ. सुखबीर सैनी, प्रकाश व किरणपाल समेत अन्य लोग पुलिस कमिश्नर से मिले।

महिला स्वागत सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

पलवल। जवाहर नगर कैंप लाइब्रेरी में जिला पलवल भाजपा बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ प्रकोष्ठ ने महिला स्वागत सम्मान समारोह किया गया। जिसमें मुख्य रूप से भाजपा हरियाणा महिला मोर्चा की नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष सुनीता दांगी एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, नवनियुक्त हरियाणा महिला मोर्चा की प्रदेश प्रभारी नंदा डगला तथा जिला पलवल भाजपा महिला मोर्चा की प्रभारी राज राणा बालियान का टीम की सैकड़ों महिलाओं ने एकत्रित होकर बड़े ही निराले अंदाज में नारों के बीच स्वागत किया। सम्मान समारोह के आयोजक संतोष शर्मा ने सभी का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते हुए हरियाणा व केंद्र भाजपा सरकार की द्वारा चलाई गई महिलाओं के हित में योजनाओं की प्रशंसा की। इस अवसर पर भाजपा की वरिष्ठ नेत्री एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ प्रकोष्ठ की पूर्व जिला सह संयोजिका वर्तमान में जिला कार्यकारिणी सदस्य सुनीता सोनी, जिला कार्यकारिणी सदस्य एवं प्रभारी नीरज दहिया, कुसुम गिरी, पलवल सह संयोजिका सविता शर्मा, पलवल कार्यकारिणी सदस्य पूनम ठाकुर, निकिता गौतम, रेनू गिरी, सुषमा कोली, तीनों विधानसभाओं की कानूनी सलाहकार एडवोकेट बृजेश चौधरी, गीता शर्मा, अर्चना ठाकुर, कोमल राजपूत आदि ने अपने-अपने विचार रखे।

वकीलों ने राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन देकर किया विरोध

फरीदाबाद। वकीलों ने राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के नाम एडीसी अपराजिता वरुण को वरिष्ठ अधिवक्ता शिवदत्त वशिष्ठ एडवोकेट के नेतृत्व मे ज्ञापन सौंपा। वशिष्ठ ने कहा कि हमारी समृद्ध भारतीय संस्कृति एवं समाजिक समरसता समलैंगिक विवाह के खिलाफ है। यह सुनिश्चित करने का प्रयास करें कि समलैंगिक विवाह न्याय पालिका द्वारा वैध घोषित न किया जाए, क्योंकि उक्त विषय पूर्ण रूप से विधायिका के क्षेत्राधिकार में आता है।

मनोज पंडित एडवोकेट ने कहा यदि समलैंगिक शादी को मान्यता देंगे तो इसका भविष्य क्या होगा? समलैंगिक विवाह को लेकर पश्चिमी नजरिये के हिसाब से न सोचकर भारतीय संस्कृति और परंपरा के हिसाब से विचार करना चाहिए। इसे लेकर भविष्य में बहुत सी कानूनी जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है। जैसे अगर एक ही जेंडर के लोग शादी करेगें तो गुजारा भत्ता कौन किसको देगा। घरेलू हिंसा में यदि एक ही जेंडर के लोग हैं तो इसमें पीड़ित और अभियुक्त पक्ष कौन होगा। ससुराल, मायका, पितृधन व मातृधन क्या है, इस पर विचार करना होगा। वहीं इनके द्वारा बच्चे गोद लिये जाने पर कौन माता होगा, कौन पिता होगा यह कैसे तय होगा। अगर इसे लागू किया जाता है तो भारत को अपनी पूरी कानूनी संरचना बदलनी पड़ेगी, क्योंकि विवाह के कानून की जड़ में स्त्री, पुरुषों के संबंधों को ही निर्धारित किया गया है।

श्रीविश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय में 15 मई से शुरू होगी दाखिला प्रक्रिया

दसवीं पास छात्रों के लिए कौशल शिक्षा में आगे बढ़ने के अवसर

अर्न वाइल लर्न और ऑन द जॉब ट्रेनिंग पर रहेगा फोकस

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

प्रोस्पेक्ट्स लांच करते श्रीविश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राज नेहरू व अन्य शिक्षक और अधिकारी।

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राज नेहरू ने कहा कि कौशल प्रदान करने का अभियान हमारे लिए राष्ट्रीय दायित्व है। प्रथम कौशल विश्वविद्यायल का यह देश हित में पुनीत संकल्प है। वे बृहस्पतिवार को विश्वविद्यालय का प्रोस्पेक्ट्स लांच करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

इस मौके पर उन्होंने ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रोस्पेक्टस लांच किया। इस बार श्रीविश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय ने कुल 42 कोर्स के लिए दाखिला फार्म खोले हैं। 15 मई से पंजीकरण शुरू होंगे। ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थियों को कौशल के साथ जोड़ने के उद्देश्य से दसवीं के बाद भी डिप्लोमा और डी. वॉक कोर्स शुरू किए गए हैं।

इस सत्र में विद्यार्थियों को अर्न व्हाइल लर्न और ऑन द जॉब ट्रेनिंग के साथ और अधिक प्रभावी तरीके से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। विद्यार्थी पढ़ाई के साथ कमाई भी कर सकेंगे। इसी सत्र में अत्याधुनिक तकनीक से लैस सिमुलेटर लैब, सोलर लैब और इलेक्ट्रिक लैब शुरू होंगी। जर्मन, जापानी और अंग्रेजी सहित कई भाषाई कोर्स आकर्षण होंगे। कुलपति डॉ. राज नेहरू ने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए इस साल विश्व स्तरीय खेल परिसर भी शुरू हो जाएगा। विश्वविद्यालय ने इसको ध्यान में रखते हुए योगा कोर्स को और अधिक प्रभावी बनाया है। उन्होंने कहा कि इस साल कुछ अंतरराष्ट्रीय अनुबंध भी होंगे।

छोटे बच्चों के लिए गर्मी की छुट्टियां बीतेंगी बाल भवन के संग : डीसी

फरीदाबाद। डीसी विक्रम सिंह ने कहा कि छोटे बच्चों के लिए गर्मियों की छुट्टियों के रंग बाल भवन के संग बीतेंगे। डीसी विक्रम ने कहा कि सरकार द्वारा जारी हिदायतों के अनुसार आजादी के अमृत महोत्सव की श्रंखला में एनआईटी स्थित बाल भवन में 12 मई से बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए हॉबी कक्षाओं का शुभारंभ किया जा रहा है।

यह जानकारी देते हुए उपायुक्त एवं अध्यक्ष जिला बाल कल्याण परिषद ने बताया कि हर वर्ष कि भांति इस वर्ष भी जिला बाल कल्याण परिषद द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए हॉबी कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। इसमें बच्चों कि छिपी प्रतिभा को निखारने का अवसर मिलेगा। हॉबी कक्षाएं एनआईटी स्थित बाल भवन में चलाई जाएंगी। ये कक्षाएं बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए चलाई जाती हैं।

गांवों में योग को बढ़ावा दे रहे वेलनेस सेंटर, प्राकृतिक चिकित्सा-खेती की तरफ बढ़ना जरूरी : दीपक मंगला

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जिले में दो हेल्थ सब सेंटर्स का किया उद्घाटन

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

उद्घाटन के अवसर पर मौजूद विधायक दीपक मंगला, डीसी नेहा सिंह व अन्य।

सभी आमजन स्वस्थ रहें, अपने आचार-विचार और व्यवहार को अच्छा रखें, ताकि जीवन सुलभ हो। यह वक्तव्य हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने गुरुवार को यमुनानगर में आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम से प्रदेश के सभी जिलों में वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से स्वास्थ्य विभाग की विभिन्न परियोजनाओं के उद्घाटन व शिलान्यास करने के उपरांत व्यक्त किए।

जिला सचिवालय के सभागार में मुख्यमंत्री हरियाणा के इस लाइव कार्यक्रम का प्रसारण दिखाया व सुनाया गया। पलवल क्षेत्र के हेल्थ सब सेंटर असावटा तथा होडल क्षेत्र के गांव गुलाबद में बने उप स्वास्थ्य केंद्र के उद्घाटन समारोह में विधायक दीपक मंगला ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। इस अवसर पर उनके साथ भाजपा जिलाध्यक्ष चरण सिंह तेवतिया, उपायुक्त नेहा सिंह, सिविल सर्जन डा. लोकवीर भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि आमजन को चिकित्सा सुविधाएं सुलभ तरीके से मिल सकें, इसके लिए स्वास्थ्य सेवाओं के इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तार किया जा रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर करने के लिए हर वर्ष बजट में बढ़ोत्तरी की जाती है, ताकि प्रत्येक मरीज को सही ढंग से इलाज की सुविधा मिल सके। प्रदेश सरकार डॉक्टर्स सहित पैरामेडिकल स्टाफ की संख्या में बढोत्तरी करने का पूरा प्रयास कर रही है। आयुष्मान भारत का और अधिक विस्तार करते हुए प्रदेश सरकार ने चिरायु हरियाणा योजना बनाई, जिससे प्रदेश के लगभग साढे 29 लाख व्यक्तियों को जोड़ा गया। इस योजना के तहत पात्र परिवार अपना पांच लाख रुपए तक का नि:शुल्क वार्षिक इलाज करवा सकता है। उहोंने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए आहार, व्यवहार को अच्छा रखें, प्रतिदिन योग करें। गांवों में योग को बढावा देने के लिए आयुर्वेदिक वैलनेस सेंटर खोले जा रहे हैं। आयुष विभाग को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने विभिन्न योजनाएं बनाई हैं। सभी लोग योग को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लेकर बीमारियों से छुटकारा पाएं। प्राकृतिक चिकित्सा तथा प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर होवें। स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता को जीवन में अपनाना जरूरी है। विधायक दीपक मंगला ने असावटा तथा गुलाबद में बनाए गए हेल्थ सब सेंटर्स का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल विकास से जुड़ी प्रत्येक मांग को तीव्रता से पूरी करते हैं। कोरोना काल के समय में सीएम मनोहर लाल ने स्वयं पलवल के नागरिक अस्पताल का दौरा किया था।

उद्यान विभाग ने किसानों को जागरूक कर उपयोगी योजनाएं बताईं

फरीदाबाद। डीसी विक्रम सिंह के मार्गदर्शन में वीरवार को उद्यान विभाग फरीदाबाद द्वारा गांव-जुन्हैड़ा, टिकरी खेड़ा व ददसिया में ग्राम स्तरीय किसान जागरूकता कैंप आयोजित किये गये। इन जागरूकता कैंप में गांवों के किसान सरपंच/पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

जागरूकता कैंप में मेरी फसल मेरा ब्यौरा, मेरा पानी मेरी विरासत, मुख्यमंत्री बागवानी बीमा योजना, भावांतर भरपाई योजना व विभागीय योजनाओं के पंजीकरण करने के लिए व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने तथा जल शक्ति अभियान के बारे में किसानों को विस्तार से जानकारी देकर जागरूक किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त बागवानी विभाग द्वारा किसानों को योजनाओं के पंपलेट भी वितरित किए गए, ताकि किसान ज्यादा से ज्यादा योजनाओं का लाभ ले सकें।

किसानों को ये धनराशि मिलेगी अनुदान के रूप में : जिला बागवानी अधिकारी डॉक्टर रमेश कुमार ने बताया कि किसान धान की फसल की जगह बाग लगाएंगे उन्हें 32500/- रुपये प्रति एकड़ व जो किसान सामान्य जगह पर बाग लगायेंगे उन्हें 25500/-रुपये प्रति एकड़ अनुदान राशि विभाग द्वारा दी जाएगी। पहले साल जो किसान धान की फसल की जगह बाग लगाएंगे, उन्हें 19500/-रुपये व सामान्य जगह पर बाग लगाने वाले किसानों को 12500 रुपये दिये जायेंगे।

इमरान खान

अपमानजनक गिरफ्तारी

इमरान खान को सुरक्षा बल जिस तरह घसीटते हुए गिरफ्तार कर ले गए, वह अपमानजनक है। लेकिन इमरान खान लोकतंत्र के मित्र नहीं हैं। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने सेना से मुकाबला कर वह काम किया जो उनके देश में कुछ ही राजनेता कर सके। कहा जाता है कि पाकिस्तान पर तीन ए-अल्लाह, आर्मी और अमेरिका का शासन है। उनको तथा उनके समर्थकों को विश्वास था कि अल्लाह उनके साथ हैं, इसलिए वे सारी बाधाओं पर विजय पा लेंगे। वे स्वयं को अनेक बौने लोगों के बीच कद्दावर व्यक्ति की तरह स्थापित करना चाहते थे। लेकिन जिस प्रकार उनकी गिरफ्तारी हुई उससे स्पष्ट हो गया कि सेना व नौकरशाही को शामिल करने वाली अवस्थापना किसी सुलह के मूड में नहीं है। उनको कैमरों के सामने सशस्त्र रेंजर्स ने बुरी तरह धक्का दिया और कालर पकड़ कर घसीटते हुए ले गए। ऐसा इस तथ्य के बावजूद हुआ कि वे अत्यधिक लोकप्रिय नेता हैं। वास्तव में राजनेता बनने के पहले ही वे राष्ट्रीय नायक थे। वे दुनिया के अब तक के एक सबसे अच्छे आल-राउंडर हैं। उन्होंने 1992 में विश्व कप जीतने वाली पाकिस्तानी टीम का नेतृत्व किया था। उस समय पाकिस्तान पहली और अंतिम बार विश्व कप जीता था। लेकिन जब उन्होंने राजनीति में प्रवेश की घोषणा की तो उनको कहीं से भी ज्यादा समर्थन नहीं मिला। उन्होंने अपने दम पर पार्टी पाकिस्तान तहरीके इन्साफ-पीटीआई बनाई और उसे मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में खड़ा किया। वे 2018 में प्रधानमंत्री बने, लेकिन सेना ने इसमें उनकी सहायता की। जनरलों को लगता था कि खान उनके हाथों में आज्ञाकारी

औजार की तरह होंगे और उनका 'कठपुतली' की तरह इस्तेमाल किया जाएगा। लेकिन यह कठपुतली अपने संचालकों के नियंत्रण से बाहर हो गई। मतभेद का मुख्य बिंदु पश्चिमी देशों व खासकर अमेरिका से संबंधों को लेकर था। पहले खान सर्वाधिक पश्चिमी झुकाव वाले सार्वजनिक पाकिस्तानी व्यक्तित्व थे, पर बाद में उनका झुकाव इस्लामवाद की ओर हो गया। वे कट्टर अमेरिका-विरोधी भी सिद्ध हुए। इसे अमेरिका तथा सेना ने पसंद नहीं किया।

आश्चर्य नहीं कि सेना इमरान खान के खिलाफ हो गई। इससे उनको पद से हटाया गया तथा उनके राजनीतिक दुश्मनों का भविष्य पुनर्जीवित हुआ जिसमें शरीफ परिवार व पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी शामिल है। इस प्रकार राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो उनके लिए संकट का कारण बना, जबकि पहले इससे भ्रष्टाचार आरोपों के शिकार इमरान खान के दुश्मन आतंकित रहते थे। पाक में राजनीति इसी रास्ते पर चलती है। इमरान खान की गिरफ्तारी हो जाने के बाद सवाल यह उठता है कि क्या एक पूर्व प्रधानमंत्री की गिरफ्तारी तथा सेना का दबाव बढ़ना लोकतंत्र पर हमला माना जा सकता है? निश्चित रूप से ऐसा नहीं है। उल्लेखनीय है कि इमरान खान प्रधानमंत्री इसलिए बने क्योंकि सेना ऐसा चाहती थी। वे लोकप्रिय थे और हैं, लेकिन वे सेना के समर्थन के बावजूद राष्ट्रीय असेम्बली में इतनी सीटें नहीं प्राप्त कर सके कि सर्वोच्च पद पर पहुंच सकें। दूसरा, वर्तमान समय में भी किसी सैनिक तानाशाह के बजाय सिविलियन सरकार सत्ता में है। तीसरा, हालांकि, खान लोकप्रिय हैं और लोकतंत्र की कसम खाते हैं, पर उनके दिमाग में लोकतंत्र का अर्थ भारत या अन्य उदारवादी लोकतंत्र नहीं हैं। उनका आदर्श इस्लामवादी परिकल्पना 'रियासते मदीना' है जहां गैर-मुसलमानों व उदारवादी मुसलमानों को भी कोई महत्व नहीं मिलेगा। संभवत: इसी कारण उनको 'तालिबान खान' कहा जाता है। आशंका है कि पाकिस्तानी अवस्थापना इमरान खान का राजनीतिक कॅरियर समाप्त करने में सफल होगी।

बेहतर जन विश्वास विधेयक जरूरी

बिजनेस कार्यवाहियों को अपराध के दायरे से बाहर रखने के मामले में जन विश्वास विधेयक अच्छी पहल है। लेकिन इसे ज्यादा प्रभावी व व्यापक बनाना होगा।

ए.एस. मित्तल
(लेखक, उद्योगपति हैं।)

भारत ने दुनिया के सर्वाधिक ऊंचनीच वाले समाज में संविधान में उपलब्ध सकारात्मक स्वतंत्रता के आधार पर दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बनाया है। लेकिन स्वतंत्र भारत की 75 साल की यात्रा में अब भी उद्यमियों के लिए ब्रिटिश नियमों के आधार पर 26,134 जेल के प्राविधान हैं। केन्द्र व राज्यों में भारतीय उद्यमियों को जेल का जोखिम देने वाले 1,536 कानून सात श्रेणियों में हैं। इनमें श्रम, सचिवालयी, पर्यावरण स्वास्थ्य, सुरक्षा, वित्त व कराधान, विशिष्ट उद्योग संबंधी, वाणिज्यिक व सामान्य क्षेत्र शामिल हैं।

इस अत्यधिक 'आपराधीकरण' ने विश्व-स्तरीय ईमानदार पैदा करने के बजाय भ्रष्टाचार, रोजगार सृजन में बाधा तथा न्याय को कमजोर करने वाली स्थितियां पैदा की हैं। हालांकि, इन क्षेत्रों में क्रियान्वयन को अपराध के बजाय 'सिविल गलती' माना जाना चाहिए। बिजनेस कार्यवाहियों को अपराध के दायरे से बाहर रखने के लिए 'जन विश्वास अमेंडमेंट आफ प्रोवीजन्स बिल, 2022' केन्द्र सरकार की महत्वपूर्ण पहल है। लेकिन इसमें 678 बिजनेस कानूनों में से केवल 42 कानूनों को अपराध से बाहर करने का प्राविधान है। 26,134 आपराधिक प्राविधानों में से कुल 3,400 को आर्थिक जुर्मानों के दायरे में लाया गया है।

पंजाब सरकार ने भी 1498 अनिवार्य नियमों को सरल बना कर बिजनेस सुगम बनाया है। लेकिन इसके बावजूद राज्य में 1427 अनिवार्य कानून तथा 1273 आपराधिक प्राविधान हैं। केन्द्र व राज्य सरकारों को सुनिश्चित करना चाहिए कि भावी क्रियान्वयनों को आपराधिक प्राविधानों से अलग रखा जाए। इससे उद्यमियों को गरिमा प्राप्त होगी, लाखों रोजगारों का सृजन होगा, समृद्धि बढ़ेगी तथा अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। इसलिए जन विश्वास विधेयक में और संशोधन कर उन बिजनेस कानूनों को अपराध के दायरे से बाहर करना चाहिए जो तकनीक-संचालित 'न्यू इंडिया' के लिए प्रासांगिक हैं। प्रस्तावित विधेयक में आपराधिक प्राविधानों वाले सैकड़ों बिजनेस कानूनों में से बहुत कम को ही शामिल किया गया है। इनमें से कुछ का उल्लेख प्रासांगिक होगा। फैक्ट्रीज़ एक्ट, 1948 की धारा 11 के अंतर्गत बिजनेस अवस्थापना में कैंटीन, किचन व वाशरूमों की पुताई न करने पर उद्यमी को जेल भेजने का प्राविधान है जो तीन महीने से तीन साल तक हो सकता है। इसके साथ ही दो लाख रुपये तक जुर्माना भी हो सकता है। औद्योगिक विवाद कानून, 1947 की धारा 25यू, 26, 27, 28, 29, 30, 31ए व 33 के अंतर्गत 6 महीने की सजा या 5,000 रुपये तक जुर्माने का प्राविधान है।

धारा 29 के अंतर्गत इस कानून के अंतर्गत बाध्यकारी किसी समझौते या आदेश का पालन न करने पर 6 महीने की सजा या 1,000 रुपये जुर्माने का प्राविधान है। कोड आफ वेजेज़ संबंधी श्रम कानूनों की धारा 54बी के अनुसार उचित पारिश्रमिक से कम देने या कोड के किसी प्राविधान का उल्लंघन करने पर सेवायोजक पर जुर्माने का प्राविधान है। दंड अपराधों की प्रकृति पर निर्भर है तथा अधिकतम दंड तीन महीने की सजा या एक लाख रुपये जुर्माना है। मातृत्व लाभ कानून, 1961 की धारा 6 के अंतर्गत किसी उल्लंघन के लिए तीन महीने की सजा का प्राविधान है जिसका विस्तार एक साल व जुर्माना हो सकता है। कानून के प्राविधानों के अनुसार महिला को अपने सेवायोजक से वास्तविक अनुपस्थिति के लिए औसत दैनिक पारिश्रमिक की दर पर मातृत्व लाभ प्राप्त करने का अधिकार है। इम्प्लाई स्टेट इंश्योरेंस कार्पोरेशन एक्ट, 1948 की धारा 85 के विभिन्न प्राविधान एक साल तक की सजा व 5,000 रुपये जुर्माने तक की व्यवस्था करते हैं। धारा 85ए के अनुसार, सेवायोजक द्वारा कर्मचारियों के पारिश्रमिक से पैसा काट कर उसे कार्पोरेशन में जमा न करने को आपराधिक विश्वास हनन माना गया है जिसके लिए कम से कम 6 महीने व अधिकतम 3 साल सजा का प्राविधान है।

वस्तु एवं सेवा कर कानून, 2017 की धारा 132 के अंतर्गत गलत ढंग से इन्पुट टैक्स क्रेडिट प्राप्त करने या गलत तरीके से रिफंड का प्रयोग करने पर तीन साल तक सजा का प्राविधान है। कंपनी कानून, 2013 की धारा 447 के अंतर्गत कंपनी या कार्पोरेट से संबंधी किसी दस्तावेज में गलत इंट्री करने, फर्जी स्टेटमेंट देने, दस्तावेजों से छेड़छाड़ या उनको नष्ट करने पर दंड का प्राविधान है। यही स्थिति धारा 449 के अंतर्गत झूठे प्रमाण देने तथा लिमिटेड या प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के गलत प्रयोग पर धारा 453 के अंतर्गत दंड का प्राविधान है। जेल की सजा तीन महीने से लेकर 10 साल तक हो सकती है। पेटेंट कानून, 1970 की धारा 124ए अपने द्वारा बेची गई किसी वस्तु का गलत ढंग से भारत में पेटेंट बताने पर दंड का प्राविधान है, भले ही इसके लिए पेटेंट प्रार्थना की गई हो। कानून का पालन न करने पर एक साल तक सजा या 25,000 रुपये जुर्माने का प्राविधान है जिसे पांच लाख रुपये तक बढ़ाया जा सकता है। एयर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल आफ पल्यूशन एक्ट, 1981 की धारा 39उी के अंतर्गत नियम का पालन न करने या जुर्माना न भरने पर दो साल तक सजा का प्राविधान है जिसे सात साल तक बढ़ाया जा सकता है तथा जुर्माना भी लगाया जा सकता है। पर्यावरण संरक्षण कानून, 1986 की धारा 15एफ के अंतर्गत नब्बे दिन के भीतर जुर्माना या अतिरिक्त जुर्माना अदा न करने पर तीन साल तक की सजा हो सकती है। सजा की अवधि बढ़ा कर दूनी की जा सकती है तथा जुर्माना भी दूना किया जा सकता है।

ट्रेडमार्क कानून, 1999 की धारा 112ए के अंतर्गत नब्बे दिन के भीतर आदेश का पालन न करने वाले व्यक्ति पर एक लाख रुपये जुर्माना या एक साल तक की सजा अथवा दोनों किए जा सकते हैं। मोटर वाहन कानून, 1988 की धारा 192ए के अंतर्गत बिना परमिट वाहन प्रयोग करने पर पहली बार 6 महीने की सजा या 10,000 रुपये जुर्माना या दोनों तथा बाद में अपराध करने पर एक साल तक जेल की सजा, जुर्माना या दोनों हो सकते हैं। पब्लिक लायबेलिटी इंश्योरेंस एक्ट, 1991 के अंतर्गत खतरनाक वस्तुओं के स्वामी या उसका परिवहन करने वाले को एक बीमा पालिसी लेना जरूरी है। इसके साथ ही उसे उचित धनराशि पर्यावरण राहत फंड में देना जरूरी होगा। कानून की धारा 17बी के अंतर्गत यदि कोई व्यक्ति लगाया गया जुर्माना नहीं अदा करता है अथवा निर्देशों का पालन नहीं करता है तो उसे तीन साल कैद की सजा या 15 लाख रुपये तक जुर्माना या दोनों का दंड मिल सकता है। ज्योग्राफिकल इंडिकेशन्स आफ गुड्स रजिस्ट्रेशन एंड प्रोटेक्शन एक्ट, 1999 की धारा 37ए के अंतर्गत नब्बे दिन के भीतर आदेश का पालन न करने वाले व्यक्ति को एक साल तक की सजा या 25,000 रुपये तक जुर्माना किया जा सकता है या दोनों दंड मिल सकते हैं। जुर्माना बढ़ा कर 5 लाख तक किया जा सकता है। सूचना तकनीक एक्ट, 2000 की धारा 70 बी के अंतर्गत मांगी गई सूचना न देने या निर्देश का पालन न करने पर किसी सेवा प्रदाता, मध्यस्थ, डेटा सेंटर, बाडी कार्पोरेट या व्यक्ति को एक साल तक की सजा या जुर्माना या दोनों दंड दिए जा सकते हैं। जुर्माना बढ़ा कर एक करोड़ रुपये तक किया जा सकता है।

उपरोक्त तथा अनेकानेक अन्य बिजनेस संबंधी कानूनों का पालन न करने पर दंड के प्राविधानों को देखते हुए सवाल उठता है कि इन स्थितियों में आगे बढ़ने का क्या रास्ता है। जेल की सजा केवल ऐसे मामलों में होनी चाहिए जहां जानबूझ कर पर्यावरण विनाश किया गया हो, भोजन अथवा कार्यबल की सुरक्षा में जानबूझ कर लापरवाही की गई हो अथवा जानबूझ कर कर्ज न अदा किया गया हो या कर अदा न किए गए हों। बिजनेस संबंधी कार्यवाहियों का अनुपालन न करने का आपराधीकरण समाप्त करने के लिए एक समन्वित संस्थागत नियामक का गठन किया जाना चाहिए। इससे क्रियान्वयन सुनिश्चित करने तथा भ्रष्टाचार घटाने में सहायता मिलेगी। 'जन विश्वास अमेंडमेंट आफ प्रावीजन्स बिल, 2022' को मंजूर करने के पहले 'बिजनेस सुगमता' पर बहस तेज करने की जरूरत है। दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुके तथा 2030 तक दुनिया की सबसे बड़ी तीसरी अर्थव्यवस्था बनने वाले भारत के लिए बिजनेस सुधार जरूरी हैं।

पोर्न की विचलनकारी दुनिया

"ऐसी छवियां हमारे सोचने के तरीके पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं जो अपराध की ओर ले जाती हैं।"

राजयोगी ब्रह्मकुमार निकुंज
(लेखक, आध्यात्मिक उपदेशक हैं)

पोर्न- जब कोई मित्र मंडली में इसकी चर्चा करता है तो यह शब्द अपने आप में लहर पैदा कर देता है। परिभाषा के अनुसार, पोर्नोग्राफ़ी का अर्थ कामुक व्यवहार का चित्रण है जिसका उद्देश्य यौन उत्तेजना पैदा करना है। हालांकि यह आश्चर्यजनक लग सकता है, लेकिन कुछ लोगों के लिए पोर्नोग्राफी के उपयोग का कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है और यह यौन हिंसा को भी रोक सकता है। अजीब लगता है !!!। अतीत में, कई देशों की सरकारों ने आईएसपी (इंटरनेट सेवा प्रदाताओं) के माध्यम से इंटरनेट पर अश्लील साहित्य पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया। हालांकि, कानूनी या ढांचागत ढांचे के समर्थन के अभाव में वे इसे हासिल करने में विफल रहे। इस प्रतिबंध के पीछे सरकार का मुख्य तर्क यह डर था कि पोर्न महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा को बढ़ावा देता है और युवा दिमाग पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। हालांकि, मन में यह सवाल आता है कि कहीं देर तो नहीं हो गई?? क्योंकि हाल ही में एक एनजीओ द्वारा जारी रिपोर्ट में साफ तौर पर कहा गया है कि भारत में एक युवा औसतन 9 मिनट 55 सेकेंड का समय अश्लील साइट्स पर बिताता है जो कि दुनिया के औसत से कहीं ज्यादा है।

कुछ साल पहले जब इंटरनेट एक किफायती माध्यम नहीं था, तो पोर्न प्राप्त करना कठिन हुआ करता था। लेकिन, अब भारत भर में 824.89 मिलियन सेलुलर इंटरनेट उपयोगकर्ताओं (ट्राई रिपोर्ट) के साथ, पोर्नोग्राफ़ी केवल एक त्वश्वद्दद्द खोज की दूरी पर है, और इसमें से अधिकांश मुफ़्त है। साथ ही, आयु प्रतिबंध भी अब अर्थहीन हो गए हैं, क्योंकि सोशल मीडिया के आगमन के साथ 5 में से 1 ने अपनी नग्न तस्वीरें ऑनलाइन भेजी या पोस्ट की हैं। यह एक ऐसा तथ्य है जिससे

इनकार नहीं किया जा सकता है कि संचार और मीडिया में लगभग सभी तकनीकी प्रगति विकृत दिमागों द्वारा पाठ, ध्वनि और छवियों सहित यौन उत्तेजक सामग्री बनाने और बेचने के लिए उपयोग की जाती है, जो वर्षों से उत्तरोत्तर स्पष्ट हो गई हैं।

पोर्नोग्राफी, जो अब तक केवल साक्षर लोगों तक ही पहुंचती थी, जो उपन्यासों में इसे एक्सेस कर सकते थे, अब सभी के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है। वर्षों से, अशिक्षित और गरीब, जिनके पास शिक्षा प्राप्त करने का लाभ नहीं है, और उनका दिमाग बौद्धिक या रचनात्मक कार्यों के लिए चैनलबद्ध है, पोर्न फिल्मों द्वारा दिखाए गए कामुक चित्रों के पतित प्रभाव के लिए सबसे कमजोर हो गए हैं। इंटरनेट को विकसित करने का मूल विचार भूगोल और आर्थिक पिछड़ेपन की बाधाओं की परवाह किए बिना ज्ञान को सभी के लिए सुलभ बनाने के लिए एक उपकरण बनाना था।

पोर्न के सौदागरों ने इंटरनेट को नैतिक रूप से भ्रष्ट सामग्री के लिए एक माध्यम में बदल दिया है। आज इंटरनेट पर पोर्न इतना व्यापक हो गया है कि यह बच्चों के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है, जो अनजाने में इसके संपर्क में आ जाते हैं। इंटरनेट, अपने स्वभाव से ही, नियमन से परे है और इसलिए नेट पर अश्लील सामग्री की मुफ्त उपलब्धता की जांच करने का कोई तरीका नहीं है। यह सोचना वाजिब होगा कि नैतिक रूप से अपमानजनक छवियों का यह विस्फोट सिर्फ विकृत मनोरंजन प्रदान करता है। नहीं!

ऐसी छवियां हमारे सोचने के तरीके को प्रभावित करती हैं और अस्वास्थ्यकर व्यवहार बनाने में मदद करती हैं जो आसानी से अपराध का कारण बन सकती हैं। ज़रा खुद से पूछिए, 'क्या पोर्नोग्राफी देखने में मज़ा लेने वाले इंसान से यह उम्मीद की जा सकती है कि वह औरतों को साफ नज़रिए से देखे?' नहीं! यह अब घरों में बड़े पैमाने पर होने की सूचना है, अपराधियों के साथ ज्यादातर मामलों में पीड़ितों को जाना जाता है। आप कभी नहीं जान सकते कि आपका कोई बहुत करीबी व्यक्ति क्या कर सकता है। इसलिए, अगर हम इस अस्वस्थता की ओर आंखें मूंदते रहे, तो जल्द ही एक समय आएगा जब हममें से जो खुद को इससे प्रतिरक्षित मानते हैं, वे भी इसके शिकार बन जाएंगे। तो, क्या इस लत का कोई वास्तविक समाधान है? हां बिल्कुल!

केवल इस चेतना में बने रहने से कि हम एक शाश्वत आत्मा हैं और शरीर नहीं हैं, कोई व्यक्ति अपनी वासना की भावनाओं को प्रेम की भावनाओं में बदलकर आसानी से मानव प्रेम को आध्यात्मिक ऊर्जा में बदल सकता है, जिससे किसी भी प्रकार के दमन के बिना वासना स्वत: ही विलीन हो जाती है। विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि ऊर्जा को एक रूप से दूसरे रूप में बदला जा सकता है, फिर हम भौतिक ऊर्जा को आध्यात्मिक ऊर्जा में बदलकर स्वयं को मुक्त क्यों नहीं कर सकते? याद करना!! हर तरह की ख्वाहिशें मन का खेल हैं, बस उन्हें स्वीकार कर लो! फिर परिवर्तन करना बहुत सहज हो जायेगा।

आप की बात

संकट में ट्रंप

डोनाल्ड ट्रम्प संकट में फंस गए हैं। छह पुरुषों और तीन महिलाओं की एक जूरी ने लेखक ई. जीन कैरोल को मुवावजे के रूप में 5 मिलियन देने का आदेश जारी किया है। भले ही उनके कट्टर एवं उग्र विभाजनकारी विचारों वाले समर्थक उन्हें 2024 में एक बार फिर व्हाइट हाउस में देखना चाहते हों। मगर लगता है कि अब उनका असली घर जेल होगा। यौन उत्पीड़न वाला मामला तो शुरुआत है। इसके बाद कई आपराधिक, दीवानी एवं आर्थिक घोटाले एवं आयकर से संबंधित मामले तो सुनवाई के लिए तैयार हैं। मेरी ट्रम्प धोखाधड़ी मामला, जनवरी 6 कैपिटल हमले के लिए उकसाने का मुकदमा, 6 जनवरी के दंगों के लिए एरिक स्वेलवेल इंसीमेंट सूट, फर्जी रियल एस्टेट प्रथाओं पर एनवाई सिविल सूट, कैपिटल हिल पर हमले के लिए महान्यायवादी उकसावे की जांच, वेस्टचेस्टर न्यूयॉर्क ट्रम्प संगठन गोल्फ कोर्स मामले की आपराधिक जांच, राष्ट्रीय अभिलेखागार रेफरल गलत तरीके से वर्गीकृत सामग्री के लिए आदि मुक़दमे उनके खिलाफ लंबित है। आशा करनी चाहिए अमेरिकी न्याय व्यवस्था सबको बराबरी के नजरिये से देखती है और ट्रम्प महोदय को हर हाल में अपने कर्मों की सजा मिलेगी।

-**जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

कांग्रेस की दशा

राहुल गांधी की कल्पना का भारत भारतीय संस्कृति व हिंदू धर्म से परे लगता है। कर्नाटक विधानसभा प्रचार में कांग्रेस ने बजरंग दल को पीएफआई की तर्ज पर बैन करने की बात कही है। बजरंग दल की विचारधारा से असहमति तो समझ में आ सकती है लेकिन उसे पीएफआई की श्रेणी में रखना समझ से परे है। गांधी परिवार दिशा भ्रम का शिकार है वह हिंदुत्व के विरुद्ध हैं मगर हिंदूवादी दिखने का स्वांग करते हैं वह मुसलमानों का वोट चाहते हैं पर उनके लिए कोई नीति निर्धारण उनके पास नहीं है। यही कारण है मुसलमान पसंद से नहीं बल्कि मजबूरी में कांग्रेस के साथ है, इसलिए जहां कांग्रेस के अलावा किसी और पार्टी का विकल्प मिलता है तो उधर चले जाते हैं। नेहरु एक सशक्त केंद्र के समर्थक थे लेकिन उसी परिवार के वारिस राहुल गांधी ऐसे मुद्दे उठाते हैं जिन पर अपनी ही पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को सहमत नहीं कर पाते। लगता है कि गांधी परिवार की वोट दिलाने की क्षमता तो पहले ही जा चुकी है और अब अंदरूनी विवाद सुलझाने की शक्ति भी नहीं बची राजस्थान में पायलट-गहलोत टकराव इसका उदाहरण है।

- **परमवीर केसरी,** मेरठ

पाकिस्तान में दंगे

पाकिस्तान में इमरान खान को जिस तरीके से गिरफ्तार किया गया उससे जनता सड़कों पर उतर आई है। पहले से ही महा कंगाली से जूझ रहे पाकिस्तान में दंगे भड़कने से गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई है। पाकिस्तान की वर्तमान सरकार व सेना इमरान का पत्ता साफ करना चाहते हैं, पर जनता उनकी रिहाई के लिए सड़कों पर उतर आई है! पाकिस्तान की जनता भी अच्छी तरह जानती है कि भले ही वे वोट से सरकार चुनें, पर अंतत: सत्ता के सूत्र सेना के हाथ में ही होते हैं। यदि अब भी पाकिस्तान की सड़कों पर अराजकता जारी रही तो सत्ता सेना हथियाने और मार्शल ला लागू करने में तनिक भी देर नहीं करेगी। ऐसे में पाकिस्तान एक बार फिर सेना के बूटों तले रौंदा जाएगा। यह भी संभावना है कि जनता का ध्यान हटाने के लिए पाकिस्तानी सेना भारतीय सीमा पर युद्ध छेड़ दे। पाकिस्तान में अस्थिरता और अराजकता भारत के लिए भी किसी सर दर्द से कम नहीं है। भारत की सेना सीमा पर एलर्ट है तथा विदेश मंत्रालय पूरी स्थिति पर गहरी नजर बनाए हुए हैं। भारतीय लोकतंत्र को विफल बताने वालों को भी पाकिस्तान से सबक लेना चाहिए।

-**सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

खैरात की लत

कुछ समय से चुनाव घोषणापत्र में मुफ्त चीजें बांटने की राजनीतिक दलों में होड़ मच जाती है। हैरानी की बात यह है कि सुप्रीम कोर्ट व चुनाव आयोग द्वारा इस पर बार-बार आपत्ति उठाए जाने के बावजूद राजनीतिक दलों के कान पर जूं तक नहीं रेंगती। मुफ्त की रेवड़ियां बांटने की घोषणा धड़ल्ले से जारी है। देश की अनेक राज्य सरकारें अपनी कर्ज लेने की अधिकतम सीमा को लांघ चुकी है। उसके बावजूद मुफ्त की घोषणायें सरकारी खजाने से पूरी की जाती है। इसका खामियाजा अन्य अत्यावश्यक आवश्यकताओ की बलि चढ़ा कर पूरा किया जाता है। हमारे देश के लोग मुफ्त की वस्तुओं के प्रति इस कदर आकर्षित है कि उन्हें बाकी के अन्य तथ्य व तर्क नजर नहीं आते। अब वक्त आ गया है कि सुप्रीम कोर्ट व चुनाव आयोग मिलकर मुफ्त घोषणा पार्टीफंड से पूरी करने का नियम लागू करें। बचे धन का उपयोग लोगों को स्थाई रोजगार में लगाने में किया जाए तो वह लोग खैरात के बजाय खुद की कमाई पर कमा कर जीना सीख जाएंगे। खैरात की लत से मुक्ति जरूरी है।

- **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते है।

अभियोजन निदेशालय की प्रभावी पैरवी रंग लाई

तीन साल में 30 हजार मामलों में अपराधियों को मिली सजा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

यूपी पुलिस जहां एक तरफ सीधा मुकाबला करते हुए अब तक 184 बदमाशों को ढेर कर चुकी है, वहीं एक बहुत बड़ी संख्या ऐसे अपराधियों की भी है जिन्हें न्यायालय में पुलिस की प्रभावी पैरवी से बेदम कर दिया गया है। यूपी पुलिस का अभियोजन निदेशालय इसमें अहम रोल अदा कर रहा है। पिछली सरकारों में जहां अभियोजन निदेशालय हाशिये पर रहता था, वहीं योगी सरकार ने इसे खास तरजीह दी है। इसी का नतीजा है कि प्रदेश के विभिन्न न्यायालयों में अभियोजन निदेशालय की प्रभावी पैरवी से पिछले तीन साल के अंदर तकरीबन 30 हजार मामलों में अपराधियों को उनके गुनाहों की सजा मिल चुकी है।

अभियोजन निदेशालय के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2020 से 2022 तक पॉक्सो एक्ट में 4078, रेप के केस में 1218, क्राइम अगेंस्ट वूमेन एंड चिल्ड्रेन केस में 8646, हत्या के केस में 2387, दहेज हत्या के केस में 1152, लूट के केस में 1141, गोवंश हत्या के केस में 279 और आर्म्स एक्ट के केस में 10520 मामलों में सजा दिलाई गई है। अभियोजन निदेशालय की ओर से रिकॉर्ड स्तर पर अपराधियों को उनके किउ की सजा दिलाने के लिए कई अवार्ड भी मिल चुके हैं।

अभियोजन निदेशालय के एडीजी आशुतोष पांडेय ने बताया कि पिछले तीन साल में कोर्ट में प्रभावी पैरवी और शत-प्रतिशत गवाहों की गवाही कराकर अपराधियों को सजा दिलाने में शानदार प्रदर्शन किया है। निदेशालय ने कोर्ट में प्रभावी पैरवी के जरिउए वर्ष 2020 में पॉक्सो के तहत जहां 535 मामलों में सजा दिलाई, वहीं वर्ष 2022 में 2313 मामलों में सजा दिलाई गई, जिसका रेशियो वर्ष 2020 के मुकाबले वर्ष 2022 में 332 प्रतिशत अधिक रहा। इसी तरह रेप के मामले में वर्ष 2020 में 177 मामलों में सजा दिलाई गई, तो वहीं वर्ष 2022 में 671 मामलों में सजा दिलाई गई। जिसका रेशियो वर्ष 2020 के मुकाबले 2022 में 280 प्रतिशत अधिक रहा है। इसी प्रकार क्राइम अगेंस्ट वूमेन एंड चिल्ड्रेन के मामलों में वर्ष 2020 में 1048 मामलों में सजा दिलाई गई जबकि वर्ष 2022 में 5351 मामलों में सजा दिलायी गई। जिसका रेशियो वर्ष 2020 के मुकाबले वर्ष 2022 में 411 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई। हत्या के केस में वर्ष 2020 में 420 मामलों जबकि 2022 में 1180 मामलों में सजा दिलायी गई, जिसका रेशियो वर्ष 2020 के मुकाबले वर्ष 2022 में अपराधियों को सजा दिलाने में 181 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

अभियोजन निदेशालय ने दहेज हत्या के केस में वर्ष 2020 में 182 मामलों जबकि वर्ष 2022 में 572 मामलों में सजा दिलायी गई। इसी तरह लूट के केस में वर्ष 2020 में 177 मामलों जबकि वर्ष 2022 में 745 मामलों में सजा दिलायी गई। जिसका रेशियो वर्ष 2020 के मुकाबले वर्ष 2022 में 321 प्रतिशत अधिक रहा। वहीं गोवंश के मामले में जहां वर्ष 2020 में 29 मामलों तो वर्ष 2022 में 200 मामलों में सजा दिलायी गई। वहीं सबसे अधिक पिछले तीन वर्ष में सबसे अधिक आर्म्स एक्ट के मामलों में सजा दिलायी गई। आर्म्स एक्ट के मामले में वर्ष 2020 में 1960 मामलों जबकि वर्ष 2022 में 6373 मामलों में सजा दिलायी गई, जिसका रेशियो वर्ष 2020 के मुकाबले वर्ष 2022 में 225 प्रतिशत अधिक रहा।

अभियोजन निदेशालय को पूरे देश में कम समय में अपराधियों को सजा दिलाने, ई ऑफि स और ई प्रॉसीक्यूशन पोर्टल पर देश में अच्छा प्रदर्शन करने पर अवार्ड, प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया है। एडीजी आशुतोष पांडेय ने बताया कि वर्ष 2021 में भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने आईसीजेएस सिस्टम के तहत नेशनल क्राइम रिपोर्ट ब्यूरो की ओर से देश में उत्तर प्रदेश को अभियोजन कार्य के लिए अवार्ड दिया था। यह अवार्ड वर्ष 2022 में भी उत्तर प्रदेश के अभियोजन निदेशालय को दिया गया। इसी तरह ई प्रॉसीक्यूशन के लिए वर्ष 2022 में स्कॉच अवार्ड से सम्मानित किया गया।

32 और छात्र मणिपुर से लौटे घर 12 को आज लाया जाएगा वापस

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मणिपुर में छिड़ी हिंसा के बीच उत्तर प्रदेश के छात्रों को वहां से तेजी से निकालने का काम युद्धस्तर पर जारी है। योगी सरकार इसे लेकर सभी जरूरी एहतियात बरतने के साथ ही अब तक 130 छात्रों को सकुशल वापस ला चुकी है। बृहस्पतिवार को भी 32 छात्रों को यूपी लाया गया है। वहीं शुक्रवार को 12 छात्र यूपी वापस लाए जाने वाले हैं। ये सभी छात्र अलग-अलग रूट से दिल्ली लाए जा रहे हैं। वहीं बृहस्पतिवार को सभी 32 छात्र सीधे लखनऊ एयरपोर्ट पहुंचे हैं। इससे पहले मंगलवार और बुधवार को योगी सरकार ने विशेष अभियान चलाकर 98 छात्रों को वापस लाने में कामयाब रही है। ये सभी छात्र मणिपुर के अलग-अलग शिक्षण संस्थानों में अध्ययन कर रहे थे और वहां उपजे हिंसा के हालातों के चलते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उन्हें तत्काल वापस लाने का निर्देश दिया था।

प्रदेश के राहत आयुक्त प्रभु नारायण सिंह ने बताया कि ज्यादातर छात्रों को मणिपुर से निकाल लिया गया है। बृहस्पतिवार को 32 छात्रों के आने के बाद अब शुक्रवार को 12 छात्रों को वापस लाने की कवायद चल रही है। अब वहां केवल 16 बच्चे रह जाएंगे। जिनमें से 5 ने वापस आने से मना कर दिया है जबकि 11 छात्र अपने स्तर से ही वापस आ रहे हैं। राहत आयुक्त ने बताया कि हमारी प्राथमिकता है कि यूपी के जो भी छात्र मणिपुर में पढ़ाई कर रहे हैं, उन्हें जल्द से जल्द सुरक्षित ढंग से वापस लाना है। पहले हमें 136 छात्रों के मणिपुर में होने की जानकारी मिली थी, जिस पर अभियान चलाकर उन्हें वापस लाने की कार्रवाई शुरू की गई। इसके बाद 22 और छात्रों के बारे में पता लगा। अब उन्हें भी वापस लाने के लिए एक्शन मोड में टीमें जुटी हुई हैं।

राहत आयुक्त ने बताया कि प्रदेश सरकार की ओर से लग्जरी बसों और कारों से सुरक्षित उनके घरों के लिए रवाना किया जा रहा है। इस अभियान के तहत मणिपुर से आने वाले सभी छात्रों की उचित देखभाल की जा रही है। दिल्ली उतरने वाले छात्रों को पहले एयरपोर्ट से आरसी ऑफिस और फिर यूपी भवन पहुंचाया जा रहा है, जहां इनके खाने-पीने और सोने की व्यवस्था है। इसके बाद छात्रों को उनके घरों के लिए भेजने की व्यवस्था की गई है। वहीं लखनऊ एयरपोर्ट पर उतरे छात्रों को वोल्वो बसों द्वारा उनके घरों तक भेजा जा रहा है जबकि जो छात्र पास के इलाकों से हैं उनके लिए कार का प्रबंध किया गया है।

नगर निकाय चुनाव में एक बार फिर खिलेगा कमलः भूपेंद्र चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा है कि उत्तर प्रदेश सबका साथ-सबका विकास व सबका विश्वास की नीति के साथ चल रहा है। प्रदेश की जनता ने नगरीय निकायों में फिर एक बार कमल खिलाने के लिए निर्णय कर लिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा की नगरीय निकाय सरकार दिन दोगुने-रात चौगुने परिश्रम के साथ जनाकाक्षांओं के अनुरूप कार्य करते हुए शुद्ध पेयजल, स्वच्छ-सुन्दर व आधुनिक शहरों के निर्माण की प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेगी।

चौधरी ने निकाय चुनाव के अंतिम चरण के मतदान के बाद प्रदेश की जनता तथा पार्टी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद तथा आभार व्यक्त किया है। चौधरी ने निकाय चुनाव में लगे प्रदेश चुनाव आयोग के अधिकारी, कर्मचारी तथा राज्य कर्मियों का परिश्रम व निष्ठा के साथ लोकतंत्र के उत्सव को सफल बनाने के लिए भी आभार जताया है। भूपेंद्र चौधरी ने कहा कि पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ताओं ने बिना थके, बिना रुके, पूर्ण समर्पण के साथ परिश्रम किया है। यही कारण है कि निकाय के चुनाव में भी भाजपा की विजय से विकास की गति बढ़ाने के लिए तीसरा इंजन जुड़ने जा रहा है। उन्होंने कहा कि शहरों के विकास और लोगों को सुविधाएं देने के लिए मोदी-योगी सरकार के कार्यों को प्रदेश की जनता ने सराहा भी और भरपूर समर्थन भी दिया।

सीएम आज लविवि के विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित करेंगे

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को सैमसंग इनोवेशन कैम्पस कार्यक्रम के अन्तर्गत लखनऊ विश्वविद्यालय से आर्टिफि शियल इंटेलिजेंस, इण्टरनेट ऑफथिंग्स, बिग डेटा तथा कोडिंग एवं प्रोग्रामिंग में प्रशिक्षण पूरा करने वाले लखनऊ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित करेंगे। ज्ञातव्य है कि सैमसंग इनोवेशन कैम्पस, सैमसंग इंडिया की कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) पहल है।

योगी आज लोकभवन में मंत्रिमंडल सदस्यों के साथ देखेंगे 'द केरला स्टोरी' फिल्म

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को मंत्रिमंडल के सदस्यों के साथ लोकभवन में आयोजित 'द केरला स्टोरी' की विशेष स्क्रीनिंग में फिल्म को देखेंगे। यह विशेष स्क्रीनिंग यूएफ ओ सिने मीडिया नेटवर्क के सहयोग से आयोजित की जाएगी। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने इस फिल्म को यूपी में टैक्स फ्री करने के निर्देश दिए हैं। फिल्म की टीम ने बीते बुधवार को मुख्यमंत्री से मिलकर चर्चा की थी। साथ ही टीम ने लव जेहाद व धर्मांतरण को रोकने को लेकर यूपी में बने कानून व की गई कार्रवाइयों की सराहना भी की थी।

कलाकारों को प्रोत्साहित करें: जयवीर सिंह

कलाकारों को अनुबंधित करने को लेकर विस्तृत दिशा-निर्देश जारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

संस्कृति विभाग उप्र के अधीन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण के लिए कलाकारों को अनुबंधित किए जाने के संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किये गये हैं। प्रमुख सचिव संस्कृति एवं पर्यटन मुकेश मेश्राम की ओर से इस संबंध में आवश्यक शासनादेश जारी करा दिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रकार की लोक कलाओं को संरक्षित एवं संवर्धित करते हुए कलाकारों को रोजगार के अवसर भी प्रदान करना है।

प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि उप्र संस्कृति विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार की लोक कलाओं को संरक्षित किया जाता है। जिससे भावी पीढ़ी इन लोक विरासत से परिचित हो सके। इन लोक कलाओं का प्रदर्शन विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कराकर प्रदेश स्तर पर कराया जाता है। इन लोक कलाओं में शास्त्रीय गायन, शास्त्रीय वादन, लोक गायन, लोक नृत्य, नाटक, रामलीला, नौटंकी के कलाकरों को अपनी प्रस्तुतियां देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

जयवीर सिंह ने बताया कि इन कलाकारों की विभिन्न श्रेणियों के अनुसार संस्कृति विभाग की कलाकार ई-डायरेक्ट्री में पंजीकृत किया जाता है।

इसके संबंध में विस्तार से जानकारी विभाग की वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है। यदि कोई कलाकार ई-डायरेक्ट्री में पंजीकृत नहीं है तो पंजीकरण के उपरान्त ही उसे कार्यक्रम के लिए अनुबंधित कराये जाने की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही पंजीकृत कलाकारों को प्राथमिकता देते हुए आमंत्रित कर अनुबंधित किये जाने के निर्देश दिए गए हैं।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि विगत 27 दिसम्बर 2022 को संस्कृति निदेशालय द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने वाले कलाकरों को देय मानदेय एवं अन्य सुविधाओं के संबंध में विस्तार से दिशा-निर्देश जारी किए गए थे। इस शासनादेश के अनुसार ही प्रदेश में होने वाले कार्यक्रमों के लिए कलाकारों को मानदेय एवं अन्य सुविधाएं प्रदान की जाए। इसके अलावा शासनादेश में भी निर्देश दिए गए हैं कि वालपेटिंग, म्यूरल्स, स्कल्पचर्स, फ्रे स्को मूर्ति निर्माण आदि से संबंधित कार्यों को उप्र संस्कृति विभाग के अधीन कार्यरत संस्थाओं में पंजीकृत कलाकारों के माध्यम से कराए जाने का प्रयास किया जाए ताकि स्थानीय कलाकारों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके। पर्यटन मंत्री ने यह भी बताया कि उप्र राज्य ललित कला अकादमी के कलाकारों द्वारा बनाई गयी पेटिंग को कार्यालय के व्यय मद से क्रय किया जा सकता है। यह कलाकृतियां प्रदेश की संस्कृति प्रदर्शित करने के साथ ही कम मूल्य पर विक्रय के लिए उपलब्ध हैं। पूर्व में प्रदेश के कतिपय मेलों, त्योहारों आदि के अवसर पर जनता अथवा विशिष्ट व्यक्तियों के अनुरोध पर विभिन्न स्वशैक्षिक संस्थाओं,विभागों, जिला प्रशासन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने की मांग पर संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित किए जाने का प्राविधान है। इस तरह के समस्त प्रस्तावों को जिलाधिकारी-अध्यक्ष जिला पर्यटन एवं संस्कृति परिषद के माध्यम से निदेशक संस्कृति निदेशालय को प्रस्तुत किए जाएं।

परिषदीय विद्यालयों को स्मार्ट बनाने में यूपीईसीएल देगा तकनीकी मदद

लखनऊ। प्रदेश के परिषदीय से लेकर कम्पोजिट एवं कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में स्मार्ट क्लास सेटअप किए जाने को लेकर यूपी इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन लिमिटेड (यूपीईसीएल) तकनीकी रूप से मदद करेगा। इस बावत महानिदेशक स्कूली शिक्षा विजय किरन आनंद ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देश जारी कर दिया है।

स्कूल शिक्षा महानिदेशक विजय किरन आनन्द की ओर से सभी जिलाधिकारियों को भेजे पत्र में कहा गया है कि स्मार्ट क्लास सेटअप के क्रियान्वयन के लिए यूपीएलसी के माध्यम से स्मार्ट क्लास सेटअप की कार्यवाही जारी है और जल्द ही सभी जिलों में स्मार्ट क्लास सेटअप लगाने का कार्य शुरू किया जाएगा। लिहाजा जिलो में चयनित परिषदी उच्च प्राथमिक, कम्पोजिट एवं कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में स्मार्ट क्लास स्थापित किए जाने के लिए पूर्व की तैयारियां शुरू कर दी जाए।

दूसरे चरण के मतदान में हुई जमकर धांधलीः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि निकाय चुनाव के दूसरे चरण के मतदान में सत्तापक्ष भाजपा ने सरकार के संरक्षण में जमकर धांधली की है। शासन-प्रशासन और चुनाव आयोग मूकदर्शक की भूमिका निभाते रहें। स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनावों में व्यवधान डालना लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आघात करना है। प्रदेश में जहां भी आज मतदान हुआ, हर जगह से शिकायतें मिल रही हैं।

अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने जनता को सामान्य सुविधाएं देने से वंचित रखा। इसलिए जनता में भाजपा के प्रति भारी आक्रोश है। निकाय चुनावों में मतदान से भाजपा को शिकस्त देने और समाजवादी पार्टी को विजयी बनाने का मन बनाए मतदाताओं ने जमकर समाजवादी पार्टी के पक्ष में वोटिंग की वहीं भाजपाई बौखलाहट में भाजपा ने असामाजिक तत्वों के सहयोग से हर जगह भय और आतंक का माहौल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। भाजपा लोकतंत्र और संविधान में जरा भी विश्वास नहीं रखती है। कन्नौज जनपद में मुस्लिम मतदाताओं के साथ मारपीट कर उन्हें मतदान से वंचित किया गया ताकि समाजवादी पार्टी के समर्थक मतदाता अपना वोट न डाल पाए। यहां भाजपा सांसद खुलेआम आदर्श चुनाव आचार संहिता का खुला उल्लंघन करते दिखे। बूथ कैप्चरिंग की भी शिकायतें मिली हैं। भाजपा का लोकतंत्र और संविधान पर भरोसा नहीं है। वह संविधान की परवाह नहीं करती है। सत्ता की भूखी भाजपा येनकेन प्रकारेण चुनाव जीतने के लिए हर तरह के हथकंडे अपना रही है। लोकतंत्र में पहली बार हो रहा है कि जब पुलिस खुद मतदाताओं को वोट डालने से रोक रही है। सत्तापक्ष द्वारा गांव-मोहल्लों में पुलिस लगाकर मतदाताओं को डराया धमकाया गया है। रामपुर के स्वार और मिर्जापुर के छानबे उपचुनाव में निष्पक्ष चुनाव नहीं होने दिया। नगर निकाय चुनाव में भी भाजपा सरकार ने यही हथकंडे अपनाए हैं। भाजपा लगातार लोकतंत्र को कुचल रही है। सपा के पूर्व राज्यसभा सांसद अरविंद कुमार सिंह ने नगर निकाय चुनाव से सम्बन्धित तमाम शिकायतें निर्वाचन आयुक्त, राज्य निर्वाचन आयोग, उत्तर प्रदेश को प्रेषित कर उन पर तत्काल कार्रवाई की अपेक्षा की है।

बसों में आग लगने की घटनाओं को रोकने के किए जाएं पुख्ता इंतजामः दयाशंकर सिंह

- बस संचालन सुरक्षा मानकों को पूर्ण करने पर ही डिपो से करें रवाना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के परिवहन राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार दयाशंकर सिंह ने परिवहन निगम की बसों में आग लगने एवं उनके दुर्घटनाग्रस्त होने को गम्भीरता से लिया है। उन्होंने परिवहन निगम के अधिकारियों को निर्देश दिया है कि बसों का संचालन पूर्णत: जांच-पड़ताल के पश्चात ही हो जिससे कि लोगों को सुरक्षित उनके गंतव्य तक पहुंचाया जा सके। उन्होंने कहा कि बस डिपो में कार्यरत मैकेनिकों से बस में लगे सभी उपकरणों की भलीभांति जांच की जाए और तय फिटनेस मानक पूर्ण करने पर ही बसों को ऑन रोड किया जाय।

परिवहन मंत्री ने निर्देश दिए हैं कि बसों को कार्यशाला से बाहर करते समय आरएम-एसएम-एआरएम किसी एक की उपस्थिति होना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि बसों को तकनीकी रूप से ठीक एवं साफ सुथरी करके ही मार्ग पर भेजा जाय, जिससे कि यात्रियों को एक सुखद, आरामदायक यात्रा उपलब्ध हो। उन्होंने कहा कि गोरखपुर क्षेत्र में घटित घटना की पुनरावृत्ति न हो अधिकारी इस बात का विशेष ध्यान दें। उन्होंने कहा कि आग लगने एवं दुर्घटना होने की घटनाओं की पुनरावृत्ति होने पर सम्बंधित अधिकारी-कर्मचारी की जवाबदेही तय करते हुए कड़ी कार्रवाई की जाएगी। परिवहन मंत्री ने कहा कि ग्रीष्म ऋतु में विशेष ध्यान रखने की जरूरत है। ग्रीष्मकाल में शार्ट-सर्किट की घटनाएं ज्यादा होती हैं।

कार्यशाला प्रबंधक इस सम्बंध में सभी आवश्यक कदम उठाते हुए ही बसों को डिपो से ऑन रोड भेजें साथ ही उन्होंने यह भी निर्देश दिए हैं कि बस स्टेशनों पर यात्रियों के बैठने की व्यवस्था उत्तम हो। बैठने वाले जगह पर पंखे, शौचालय के साथ ही पेयजल की व्यवस्था दुरूस्त रखा जाए जिससे कि यात्रियों को यात्रा के दौरान या बसों के रवाना होने से पहले किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने बस अड्डों पर एवं बसों में साफ-सफाई के विशेष ध्यान दिए जाने के भी निर्देश दिए हैं।

डीजीपी ने दिया पुलिस मॉडर्न स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने पर बल

- अच्छा प्रदर्शन न करने वाले पांच स्कूलों को वर्गीकृत कर जिम्मेदार प्रतिसार निरीक्षकों के खिलाफ की जाए कार्रवाई

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के डीजीपी डॉ. आरके विश्वकर्मा द्वारा पुलिस मॉडर्न स्कूलों के बुनियादी ढांचे व शिक्षा को उच्च स्तर पर पहुंचाने पर बल देते हुए विभिन्न जनपदीय पुलिस लाइन्स एवं पीएसी वाहिनियों में स्थापित पुलिस मॉडर्न स्कूलों की समीक्षा की गयी। जिसमें स्कूलों के शैक्षिक स्तर, भवन की गुणवत्ता, कम्प्यूटर सुविधा, स्मार्ट क्लासेज, स्पोर्टस एवं स्कूल परिसर, क्लासरूम, वॉशरूम आदि स्थानों पर साफ-सफाई सहित वेलफेयर का स्थलीय निरीक्षण कर अपेक्षित सुधार लाने के लिए उच्चाधिकारियों को पर्यवेक्षण अधिकारी नियुक्त किए जाने के निर्देश दिए गए। जिसके क्रम में पर्यवेक्षण अधिकारियों द्वारा पुलिस मॉडर्न स्कूल का स्थलीय निरीक्षण किया जा रहा है। डीजीपी द्वारा पुलिस मॉडर्न स्कूल के छात्र--छात्राओं को स्मार्ट क्लासेज सहित अध्यापन सम्बन्धित मूलभूत संसाधनों को उपलब्ध कराने एवं शिक्षा की गुणवत्ता में और बढोत्तरी करने की दिशा में कार्रवाई करने पर विशेष बल देते हुए निरीक्षण में विभिन्न कार्रवाई के निर्देश दिए गए।

डीजीपी ने कहा है कि छात्र-छात्राओं को स्वस्थ्य वातावरण प्रदान करने के लिए विद्यालय परिसर, क्लासरूम एवं वॉशरूम के अन्दर एवं बाहर की साफ-सफाई आदि पर विशेष ध्यान दिया जाए। विद्यालय के सभी कक्षाओं में स्मार्ट क्लासेज चलाए जाने के लिए उससे सम्बन्धित सहवर्ती उपकरणों के उपलब्धता की समीक्षा कर आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराने की कार्रवाई की जाए। छात्र-छात्राओं के शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के दृष्टिगत योगाभ्यास, खेल का मैदान एवं खेल उपकरणों की उपलब्धता का निरीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई की जाए। पुलिस मॉडर्न स्कूल के निरीक्षण में शैक्षिक स्तर, स्कूल की साफ-सफाई, भवन की गुणवत्ता आदि में अच्छा प्रदर्शन न करने वाले पांच स्कूलों को वर्गीकृत कर प्रतिसार निरीक्षक/शिविरपाल के विरुद्ध कार्रवाई की जाए।

आरक्षी पद पर कुशल खिलाड़ियों की भर्ती के तहत 234 अभ्यर्थियों के चयन परिणाम तैयार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड ने जानकारी दी है कि प्रदेश पुलिस में आरक्षी नागरिक पुलिस के पदों पर कुशल खिलाड़ियों की सीधी भर्ती-2022 के अन्तर्गत 534 (335 पुरुष व 199 महिला) रिक्त पदों का अधियाचन प्राप्त हुआ था। जिसके सापेक्ष 10 पुरुष खेल विधाओं एवं 9 महिला खेल विधाओं के सापेक्ष कुशल खिलाड़ी कोटे में खेल विधा एवं उसकी विशिष्टता के अन्तर्गत कुल 234 अभ्यर्थियों का चयन किया जा चुका है। शेष खेल विधाओं के सापेक्ष 180 अभ्यर्थियों के चयन परिणाम तैयार हो गए हैं तथा 76 अभ्यर्थियों के चयन की कार्रवाई उनके खेल प्रमाण पत्र सत्यापन के चरण पर है। भर्ती बोर्ड के अनुसार उक्त के अतिरिक्त आरक्षी नागरिक पुलिस के पद पर कुशल खिलाड़ियों के 318 पदों तथा विशेष सुरक्षा बल में आरक्षी के पद पर कुशल खिलाड़ियों के 27 पदों अर्थात कुल 345 पदों पर भर्ती के लिए अधियाचन प्राप्त हो चुका है। जिस पर कार्रवाई प्रचलित है। आगामी माह से आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाने की कार्रवाई की जाएगी।

यूपीपीएससी ने शुरू की डेंटल सर्जन की भर्ती प्रक्रिया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश में डेंटल सर्जन की कमी को दूर करने के लिए प्रदेश सरकार की तरफ से उत्तर प्रदेश संघ लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) को भेजे गये प्रस्ताव पर आयोग ने प्रक्रिया शुरू कर दी है। जल्द ही प्रदेश को 174 डेंटल सर्जन मिल जायेंगे। प्रदेश के सरकारी अस्पतालों में जल्द दंत चिकित्सकों की कमी दूर होगी। यूपीपीएससी के जरिए 174 डेंटल सर्जन की भर्ती होने जा रही है। आयोग ने अभ्यर्थियों की आयु सहित अन्य अर्हताएं तय कर दी हैं। आवेदन करने वालों की न्यूनतम आयु 22 वर्ष होनी चाहिए। इस संबंध में विस्तृत जानकारी आयोग की वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग ने 2382 विशेषज्ञ चिकित्सकों की भर्ती के लिए अधियाचन भी राज्य संघ लोक सेवा आयोग को भेजा जा चुका है।

गोरखपुर में वाटर स्पोर्ट्स को बढ़ावा देने का शानदार मौकाः सहगल

- रामगढ़ताल में होने वाली रोइंग प्रतियोगिता की तैयारियों को लेकर एसीएस खेल ने की ऑनलाइन समीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के अंतर्गत गोरखपुर की मेजबानी में रामगढ़ताल में 27 से 31 मई तक होने वाली रोइंग प्रतियोगिता में प्रतिभागी खिलाड़ियों व टीम स्टाफ के लिए शहर के होटलों में 190 कमरे बुक कराए जाएंगे। आयोजन ऐसा होगा कि इसके बाद यहां जल क्रीड़ा की प्रतियोगिताओं की श्रृंखला शुरू हो जाए।

आयोजन से जुड़े विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ बृहस्पतिवार को अपर मुख्य सचिव खेल नवनीत सहगल ने ऑनलाइन समीक्षा बैठक की। जिसमें गोरखपुर के कमिश्नर रवि कुमार एनजी व अन्य अधिकारी गोरखपुर में शामिल रहे। सहगल ने कहा कि खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के अंतर्गत रोइंग प्रतियोगिता गोरखपुर में वाटर स्पोर्ट्स (जल क्रीड़ा) को बढ़ावा देने का शानदार अवसर है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप इस प्रतियोगिता से स्थानीय स्तर पर भी रुझान बढ़ाकर जल क्रीड़ा के क्षेत्र में खिलाड़ियों की नई पौध तैयार की जा सकेगी। उन्होंने कहा कि आयोजन ऐसा होना चाहिए कि हर प्रतिभागी व टीम स्टाफ के लिए अविस्मरणीय रहे। कमिश्नर रवि कुमार एनजी ने उन्हें बताया कि प्रतियोगिता को अभूतपूर्व बनाने के लिए कई विभागों की तरफ से पूरी प्रतिबद्धता के साथ समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं। कमिश्नर ने आयोजन के दौरान खिलाड़ियों की सुरक्षा, आवागमन, खानपान, स्वास्थ्य व अन्य सभी सुविधाओं को लेकर अलग-अलग विभागों द्वारा की जा रही तैयारियों की बिंदुवार समीक्षा की। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी संजय मीना, नगर आयुक्त गौरव सिंह सोगरवाल, अपर जिलाधिकारी (नगर) विनीत सिंह, एसपी ट्रैफिक डॉ. एमपी सिंह, क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारी आले हैदर, जिला सूचना अधिकारी प्रशांत श्रीवास्तव समेत पर्यटन, जीडीए, परिवहन, शिक्षा आदि विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

रोइंग प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में दर्शकों के आने की उम्मीद है। दर्शकों को प्रतियोगिता के अवलोकन में कोई असुविधा न हो, इसके लिए रामगढ़ताल मार्ग पर एक लेन को प्रतियोगिता अवधि के दौरान आरक्षित रखा जाएगा। यानी इस लेन पर वाहनों का आवागमन नहीं होगा, सिर्फ दर्शक मौजूद रहेंगे।

पायनियर
नई दिल्ली, शुक्रवार, 12 मई, 2023

फैक्ट्री में आग से चार की मौत, कई झुलसे

संवाददाता। बरेली

● फोम के गद्दे बनाने वाली फेक्ट्री में धमाके के साथ आग लगी, 4 शवों की शिनाख्त हुई, अनेक की हालत नाजुक, बचाव और राहत का काम दूसरे दिन भी जारी

फॉम के गद्दे बनाने वाली एक फैक्ट्री में बुधवार की शाम हुए धमाके के बाद लगी आग से कई मजदूर मलबे में दब गए और बुरी तरह झुलस कर उनकी मौत हो गई राहत और बचाव के कार्य के बाद 4 शवों को बाहर निकाला गया जिनकी आज शिनाख्त कर ली गई, वहीं बचाव और राहत का काम दूसरे दिन भी जारी रहा।फरीदपुर थाना क्षेत्र के गांव जेड में लखनऊ हाईवे के पास स्थित अशोका फोम फैक्ट्री में बुधवार की शाम जब बड़ी संख्या में मजदूर काम कर रहे थे इसी दौरान लोहे के एंगल पर बनी टिन शेड की छत तेज धमाके के साथ उड़ गई और फैक्ट्री में आग लग गई धमाके की तेज आवाज दूर तक सुनाई दी और धमाके के चलते ही टिन शेड से बनी छत धराशाई हो गई उसके नीचे काम कर रहे अधिकांश मजदूर शेड के नीचे दब गए और खुद को बचाने में कामयाब नहीं हो सके वह बुरी तरह आग से झुलस गए उनकी मौके पर ही मौत हो गई घटना के बाद बड़ी संख्या में ग्रामीण की भीड़ मौके पर लग गई और घटना की सूचना फायर ब्रिगेड को दी गई फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां तुरंत मौके पर पहुंची और राहत व बचाव का काम शुरू कर दिया घटना की सूचना मिलते ही फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूरों के परिजन भी मौके पर पहुंच गए शासन के अधिकारियों को घटना की जानकारी मिली तब नायब तहसीलदार दिव्यांशी सिंह भी मौके पर पहुंची और उनकी देखरेख में राहत व बचाव का कार्य शुरू कर दिया गया काफी देर मेहनत के बाद मलबे मे दबे चार मजदूरों के शव बाहर निकाले गए। इसके अलावा आधा दर्जन झुलसे हुए मजदूरों को इलाज के लिए अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया। नायब तहसीलदार की देखरेख में रात लगभग 2 बजे तक चले अभियान में फरीदपुर थाने के गांव सरकडा निवासी 38 वर्षीय राकेश पुत्र भूप राम फरीदपुर के ही गांव हरहर पुर निवासी अरविंद पुत्र ओमप्रकाश फरीदपुर के परा मोहल्ला निवासी अखिलेश शुक्ला पुत्र राम प्रकाश शुक्ला और फरीदपुर के गांव फर्रख पुर निवासी अनूप गंगवार पुत्र ओमप्रकाश गंगवार के शव बाहर निकाल लिए गए और उन्हें पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया जहां घरवालों ने शवों की शिनाख्त कर ली मृतकों के परिजनों ने बताया कि कल दिन में सभी मजदूर रोजाना की तरह काम पर आए थे और दुर्घटना का शिकार हो गए वही अनूप गंगवार के घर वालों ने बताया कि अनूप रोजाना की तरह आज सुबह जब घर वापस नहीं लौटा और उन्हें समाचारों पत्र के माध्यम से ज्ञात हुआ कि अशोका फोम फैक्ट्री में आग लगी है और उसमें कई मजदूर झुलस गए हैं तब वह आज पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे जहां उन्होंने शव की शिनाख्त कर ली वह एक बेटी का पिता था उसकी पत्नी का नाम पूजा है जबकि अखिलेश की पत्नी सोनी 5 बच्चों की मां है वहीं अरविंद का विवाह पिछले साल 7 मई को हुआ था और उसकी पत्नी नीलम गर्भवती है राकेश की पत्नी शारदा दो बच्चों की मां है आज सुबह फिर से फैक्ट्री में राहत और बचाव का काम शुरू कर दिया गया आशंका जताई जा रही है कि अभी कई मजदूरों के शव मलबे में दबे हो सकते हैं फैक्ट्री में मजदूरों की आपूर्ति करने वाले फरीदपुर के गांव केसरपुर निवासी ठेकेदार सत्यपाल के अनुसार उसने 43 मजदूरों को 500 रुपए की मजदूरी पर फैक्ट्री में काम करने के लिए बुलाया था लेकिन वह मजदूरों का नाम पता नहीं बता सका पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है झुलसे हुए कई मजदूरों की हालत भी नाजुक बनी हुई है।

किसान होंगे पीएम किसान सम्मान निधि से लाभान्वित

● पीएम किसान संतृप्तिकरण अभियान 22 मई से 10 जून तकः जिलाधिकारी

● वंचित पात्र किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि का लाभ दिलाने के लिए चलेगा अभियान

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

गुरुवार को डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने कलेक्ट्रेट में अफसरों के साथ पीएम किसान योजना की वृहद समीक्षा की संबंधित को जरूरी निर्देश दिए। समीक्षा के दौरान डीडी कृषि से योजना में वंचित पात्र किसानों का आंकड़ा जाना, नाराजगी जाहिर करते हुए निर्देश दिए कि सभी वंचित पात्र किसानों को योजना से संतृप्त कराते हुए लाभान्वित किया जाए। डीएम ने निर्देश दिए कि पीएम किसान संतृष्तिकरण अभियान के तहत 22 मई से 10 जून के मध्य जिले की सभी ग्राम पंचायतों में बैठके कर किसान सम्मान निधि से वंचित पात्र कृषकों को योजना से लाभान्वित किया जाए। डीएम ने राजस्वए कृषिए पंचायत के क्षेत्रीय कर्मचारियों को निर्देशित किया कि 22 मई से 10 जून के मध्य आयोजित कार्यक्रम में ग्राम पंचायत के पात्र कृषकों को योजना का लाभ दिलानें के लिए आवश्यक कार्यवाही करना सुनिश्चत करें। इसमें किसी भी स्तर पर हीला हवाली बर्दाश्त नहीं की जाएगी। डीएम ने कृषक भाइयों से अपील करते हुए कहा कि जिन किसान भाइयों को योजना का लाभ नही मिल रहा है वह अपनी ग्राम पंचायत के पंचायत सहायक को अपना विवरण नोट करा दें। जिससे उनकी समस्या का समाधान तहसीलए कृषि विभाग द्वारा किया जा सके। जिन किसान भाइयों ने अभी तक अपन ई.केवाईसी नही कराया है वह जनसुविधा केन्द्र के माध्यम से अपने पंजीकरण का ई.केवाईसी अवश्य करा लें। जिससे उन्हे निरन्तर योजना का लाभ प्राप्त होता रहे। जिन किसान भाइयों का आधार बैंक खाते से लिंक नही हैए वह अपनी बैंक शाखा में जाकर अपना आधार बैंक खाते से तथा खाता को एनपीसीआई से लिंक करा लें अथवा निकटतम पोस्ट ऑफिस से रू0 100 से नया खाता खुलवाकर आधार सीडिंग तथा एनपीसीआई से लिंक करा लें।जिससे उन्हे निरन्तर योजना का लाभ प्राप्त होता रहे। डीएम ने बताया कि ऐसे पात्र कृषक जिन्होने अभी तक योजना के लिए अपना पंजीकरण नहीं कराया। उनसे अनुरोध है कि जनसेवा केन्द्र से पीएम पोर्टल पर अपना पंजीकरण अवश्य करा लें।

सीएमओ ने लेखा प्रमुख को दिया कारण बताओ नोटिस

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

प्रदेश के 100 आकांक्षात्मक ब्लाकों में जनपद के 4 ब्लाक आकाक्षात्मक ब्लाक के रुप में चिन्हित किये गए हैं। जिनकी मरीजों को दी जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं के मद्देनजर सीएमओ डॉ.संतोष गुप्ता के नेतृत्व में जिला स्तरीय टीम समीक्षा कर रही है। शुक्रवार को सीएचसी धौराहरा का निरीक्षण किया गया। जिसमें सीएमओ ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग के 16 हेल्थ इण्डीकेटर जिनमें गर्भवती महिलाओं का शीघ्र पंजीकरण, गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्ण 04 जांच, गर्भावस्था में 04 बार खून की जांच, संस्थागत प्रसव, बच्चे का जन्म के समय वजन, क्षयरोग के मरीजों का चिन्हीकरण, चिन्हित लाभार्थियों को गोल्डेन कार्ड बनाने की स्थिति, अत्यन्त जोखिम महिलाओं का ट्रीटमेंट करना, बच्चों का पूर्ण प्रतिरक्षण कियाशील हेल्थ वेलनेस सेन्टर, जन्म के एक घंण्टे के अन्दर स्तनपान आदि संकेतांको पर समीक्षा की गई। बैठक के दौरान संज्ञान में आया कि जननी सुरक्षा योजना के अन्तर्गत लाभार्थियों को दिए जाने वाले 1400 रुपए की धनराशि का भुगतान ब्लाक लेखा प्रबंधक के लापरवाही के कारण लंबे समय से लम्बित है। इस सम्बन्ध में ब्लाक लेखा प्रबंधक मधुकर श्रीवास्तव को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा दिए गए। साथ ही अधीक्षक डा. पंकज शुक्ला को जेएसवाई लाभार्थियों के भुगतान त्वरित करने के निर्देश दिए गये। कम प्रगति करने वाले स्वास्थ्य उपकेन्द्र के कार्यकत्रियों की कड़ी चेतावनी जारी की गई। साथ ही पीएचसी के प्रभारी चिकित्साधिकारी को क्षेत्रान्तर्गत आने वाले आशा क्लस्टर बैठक दिवस पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर प्रतिभाग करने एवं सम्पूर्ण पीएचसी क्षेत्र का सघन भ्रमण व आयुष्मान गोल्डेन कार्ड 10 मई से 25 मई तक चलने वाले अभियान के सम्बन्ध में बताया गया कि अधिक से अधिक गोल्डेन कार्ड बनाए जाए। समीक्षा बैठक के दौरान जिन आशाओं एएनएम द्वारा संतोषजनक कार्य नहीं किया गया उन्हें चेतावनी जारी की गई। इसी क्रम में 16 मई को ईसानगर व 18 मई को ब्लाक रमियाबेहड़ में उपरोक्त इण्डीकेटर समीक्षा बैठक आहूत की जायेगी। निरीक्षण के दौरान जनपद स्तरीय टीम में एसीएमओ डॉ अश्वनी कुमार, एसीएमओ एनएचएम डॉ बीसी पंत, डीपीएम अनिल कुमार यादव, एनएचएम के साथ-साथ हेल्थ पार्टनर एजेन्सी के प्रतिनिधी डब्ल्यूएचओ एसएमओ डॉ. विकास सिंह, डीएमसी मुकेश चौहान सहित अधीक्षक डा. पंकज शुक्ला, संदीप मिश्रा, अरविन्द मौजूद रहे।

शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ मतदान

संवाददाता। शाहजहांपुर

नगर निगम चुनाव में शाहजहांपुर छूट पुट घटनाओं को छोड़कर शांति पूर्ण मतदान संपन्न हुआ मतदान के समय की समाप्ति तक जिले की 12 निकायों में 55 प्रतिशत मतदान हुआ । सबसे अधिक वोट खुटार नगर पंचायत में पड़े। मतदान के बाद ईवीएम व बकसिया जमा करने के लिए पोलिंग पार्टियां रवाना हो गई हैं। काउंटिंग 13 मई को होगी। सुबह से मतदान की गति धीमी रही फिर मतदातों में घर से निकल कर मतदान केंद्रों का रूख किया जिसके बाद मतदान का प्रतिशत बढ़ने लगा डीएम और एसपी भारी पुलिस के साथ बूथों का निरीक्षण करने पहुंच गए। रोड पर भीड़ देखकर डीएम नाराजगी नाराजगी जताई। बूथ पर वोट डालने आए मतदाताओं की आईडी खुद डीएम चेक करने लगे। आईडी पर लगे फोटो से मतदाता के चेहरे का मिल भी करते नजर आए।

गुडवर्क के लिए सीडीओ को मिली शाबाशी

संवाददाता। लखीमपुर-खीरी

आयुक्त लखनऊ डॉ. रोशन जैकब ने सरकार द्वारा संचालित विकासपरक एवं कल्याणकारी योजनाओं के निरीक्षण के उद्देश्य से विगत 19 अप्रैल 2023 को जनपद लखीमपुर-खीरी का भ्रमण किया गया था। जिले में प्रवास के दौरान किये गये स्थलीय निरीक्षण के दौरान ग्राम्य विकास, बेसिक शिक्षा के अन्तर्गत संचालित योजनाएं ग्राम पनगीखुर्द में कस्तूरबा गांधी विद्यालय, ग्राम पंचायत जगसड़ में उच्च प्राथमिक विद्यालय, टीएचआर प्लान्ट, पेयजल परियोजना, हाट बाजार, अमृत सरोवरों के निर्माण, एफ डीआर तकनीक से निर्माणाधीन सड़क के अनुश्रवण तथा गोवंश/ गो आश्रय स्थल प्रबन्धन इत्यादि के क्षेत्र में हुए सराहनीय कार्यों को देखते हुए आयुक्त द्वारा मुख्य विकास अधिकारी अनिल कुमार सिंह के प्रयासों एवं कार्यों की भूरि-भूरि सराहना व प्रशंसा की गई है। डीएम महेन्द्र बहादुर सिंह को प्रेषित किये गये प्रशस्ति पत्र में आयुक्त डा जैकब ने विभिन्न विभागों से समन्वय स्थापित कर अधीनस्थों को उचित मार्गदर्शन देकर योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में उल्लेखनीय योगदान के लिए सीडीओ की विशेष सराहना की गई है। प्रशस्ति पत्र में आयुक्त ने कहा कि उन्हें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आप इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमता का परिचय देते हुए अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते रहेंगे। कलेक्ट्रेट स्थित अपने चैम्बर में डीएम ने सीडीओ अनिल कुमार सिंह को आयुक्त द्वारा प्रेषित किये गये प्रशस्ति पत्र को सौपते हुए कहा कि इससे जिले के अधिकारियों की हौसला अफज़ाई होगी और उन्हें भी अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की प्रेरणा मिलेगी।

क्विक न्यूज

डॉक्टर आईएस तोमर को मिली ईवीएम मशीन में गड़बड़ी

बरेली। निकाय चुनाव के दूसरे चरण से पूर्व मेयर प्रत्याशी डॉ आईएस तोमर को ईवीएम मशीन में भारी गड़बड़ी मिली है उन्होंने इस पर जिला अध्यक्ष शिव चरन ने हंगामा करते हुए जिला प्रशासन से ईवीएम मशीनों के बदलने की मांग की है और कहां की प्रशासन की मिलीभगत से ही सब किया जा रहा है । प्रशासन को यदि कमल का फूल को जिताना है तो बाकी प्रत्याशियों का नाम हटा दें ऐसा जानबूझकर किया जा रहा है । ईवीएम मशीन में वटन दबाने में हो रही दिक्कत को लेकर पोलिंग पार्टी रवानगी स्थल पर समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष ने हंगामा किया ईवीएम मशीन में खराबी का आरोप लगाया प्रेक्षक सयुंक्ता समद्दार , जिला अधिकारी शिवाकांत द्विवेदी व एसएसपी प्रभाकर चौधरी के सामने हंगामा किया। हंगामे के बाद तत्काल बदलवाई ईवीएम मशीन प्रेक्षक संयुक्ता समद्दार ने घूम घूम कर चेक कराई ईवीएम मशीन लापरवाही पर एडीएम ई की लगाई फटकार जाँच के बाद ईवीएम मशीन पोलिंग पार्टियों को निर्देश दिए हैं निर्दलीय सपा समर्थक प्रत्याशी डॉक्टर आईएस तोमर ने बताया कि ईवीएम मशीन में कमल का बटन एक बार में दब रहा है बाकी बटन कई बार दबाने पर दब रहे है। इस बात को लेकर विरोध किया है। और अधिकारियों से शिकायत की है पोलिंग पार्टियां आज बरेली कॉलेज स्थल से मतदान के लिए रवाना हो गई।

मतगणना में धांधली की चुनाव आयोग से शिकायत

संडीला(हरदोई)। नगर पालिका परिषद के निवर्तमान चेयरमैन एवं सपा प्रत्याशी मो0 रईस अंसारी ने चुनाव आयोग को पत्र भेजकर मतगणना में धांधली की आशंका व्यक्त करते हुए सीसी टीवी कैमरे लगवाने की निगरानी में मतगणना की मांग की है। चुनाव आयोग को भेजे गए अपने पत्र में श्री अंसारी ने आरोप लगाया के क्षेत्रीय जन प्रतिनिधि द्वारा लोगों के बीच घूम घूमकर यह कहा जा रहा है कि चुनाव भाजपा ही जीतेगी चाहे बेईमानी कराना पड़े या मतपेटी बदलनी पड़े। हर हाल में चुनाव भाजपा ही जीतेगी। सतारूण जनप्रतिनिधि के इस प्रकार के आचरण और घोषणाओं से स्वतः स्पष्ट होता है कि किसी भी दशा में चुनाव में विजय पाने की रणनीति तैयार की गयी है। श्री अंसारी ने चुनाव आयोग को भेजे गए पत्र में यह मांग की है कि समस्त मतगणना कार्य क्लोज़ सर्किट टीवी कैमरों की देखरेख में कराई जाए। उन्होंनें पत्र की प्रति जिलाधिकारी हरदोई, उपजिलाधिकारी संडीला, क्षेत्राधिकारी एवं प्रभारी निरीक्षक को भी सौंपी है।

पीस कमेटी की बैठक का हुआ आयोजन

सिंगाही खीरी। क़स्बे में नगर निकाय चुनाव के नतीजे शांतिपूर्वक संपन्न कराने को लेकर अध्यक्ष व सदस्यों के बीच शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। वहीं उन्होंने चुनाव परिणाम के बाद भी क़स्बे मे शांति बनाए रखने में सहयोग मांगा। इस अवसर पर थानाध्यक्ष दिनेश कुमार ने आगामी 13 मई को नगर निकाय चुनाव के नतीजों को लेकर शांति बनाए रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि चुनाव के नतीजे चाहें जो भी आएंए चाहे कोई जीते या हारे आप सबका दायित्व है कि कस्बे एवं क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखें। इस मौके पर थानाध्यक्ष ने सभी को आश्वस्त करते हुए बोले कि आप लोग पुलिस का सहयोग करें। यदि शांति व्यवस्था को बिगाड़ने में किसी ने शरारत किया तो पुलिस उसके खिलाफत्वरित कड़ी कार्रवाई करेगी।

नए सीज़न का प्रमोशन

लखनऊ। ज़ी 5 की ओरिजनल सीरीज श्ताजरू डिवाइडेड बाय ब्लड सबसे ज्यादा देखी जाने वाली ओरिजनल सीरीज़ बन गई है। सलीम और मेहरुन्निसा के चरित्रों को दिखाते हुए आशिम और सौरसेनी ने ताज . रीन ऑफरिवेंज के नए सीज़न को प्रमोट करने के लिए गुलाबी शहर . लखनऊ का दौरा किया । इस सीरीज में नसीरुद्दीन शाह अकबर की भूमिका निभाई है। 8 पार्ट की यह सीरीज़ 2 सीरीज़ 1 समाप्त होने के 15 साल बाद के समय से शुरू होती है। इसमें देशनिकाले से लेकर अगला मुग़ल सम्राट बनने के लिए खून बहाने और बदला लेने की सलीम की यात्रा का चित्रण है। अभिनेता आशिम गुलाटी उर्फराजकुमार सलीम ने कहाए श्समय.समय पर होने वाले नाटकों से मैं हमेशा प्रभावित हुआ हूं और इस नाटक में अभिनय करना मेरे लिए रोमांच से भरी यात्रा रही है। मुझे खुशी है कि दर्शकों ने सीरीज के पहले सीजन को बहुत पसंद किया है। मैं सिर्फइतना कह सकता हूं कि एस 2 में सलीम का किरदार देखने लायक है। एस 2 मेरे लिए ज्यादा गंभीरए गहराए साहसी और व्यक्तिगत रूप से अभी तक का मेरा सबसे पसंदीदा और बेहतरीन रोल है।ष

सिधौली बार एसोसिएशन के वकीलों ने डीएम और एसपी को दिया ज्ञापन

सीतापुर। सिधौली बार एसोसिएशन के अधिवक्ताओ द्वारा बार अध्यक्ष जय करन सिंह यादव और महामंत्री मुनेंद्र सिंह के नेतृत्व में डीएम और एसपी को संबोधित ज्ञापन एसडीएम के माध्यम से दिया गया। इस ज्ञापन में महमूदबाद तहसील के वकीलों और राजस्व निरीक्षक के मध्य हुए विवाद में वकीलों की तरफ से हुई मुकदमा दर्ज किए जाने और दोषियों के विरूद्ध कार्रवाई किए जाने की मांग की गई है। इसके अलावा सयुंक्त मंत्री सुखलेश सिंह राजवंशी, संजय सिंह, संजय दीक्षित, नील कमल मिश्र के द्वारा सिधौली बार एसोसिएशन का एक समर्थन पत्र महमूदाबाद लॉयर्स एसोसिशन के पदाधिकारियों को महमूदाबाद जाकर दिया गया।

निकाय चुनाव की मतगणना 13 मई को होगी

सीतापुर। 13 मई को निकाय चुनाव के लिए पड़े मतों की मतगणना होनी है, इसे देखते हुए सीतापुर जिलाधिकारी अनुज सिंह और पुलिस अधीक्षक घुले सुशील चंद्रभान ने कई निकायों में भ्रमण कर मतगणना स्थल और स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया। इस क्रम में डीएम और एसपी ने सीतापुर शहर के मतगणना स्थल गल्ला मंडी, मिश्रिख के मतगणना स्थल राजकीय बालिका इंटर कालेज और महोली के मतगणना स्थल कृषक इंटर कालेज का निरीक्षण कर सुरक्षा व अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

घर में घुसकर महिला के साथ की मारपीट

बरेली। थाना सुभाषनगर क्षेत्र की तिलक कालोनी गंगासागर हॉस्पिटल वाली गली निवासी 65 बर्षीय महिला रामवती पत्नी स्वर्गीय हेमराज ने एसएसपी ऑफिस पहुंच कर एक तहरीर दी है। कि मेरा पुत्र संजीव कुमार, देवरानी का भाई राकेश , देवरानी का पुत्र आकाश उपरोक्त दिनांक 04 मई को शादी में बारात घर दया पैसेल बदायूँ रोड, गये थे, घर वापस आते समय लगभग 10रू30 बजे रात्रि अभियुक्तगण रोहित पुत्र संजू निवासी मोहल्ला सुभाषनगर तिलक कालोनी थाना सुभाषनगर, जिला बरेली व तीन अज्ञात लोगो द्वारा तीनों लोगों को रास्ते में रोक कर गाली गलौज करने लगे एवं मारपीट की , जिसमें प्रार्थिनी के पुत्र संजीव, राकेश व आकाश तीनों के गुम चोटे आयी, शोर-शराबा सुनकर राहगीरों ने बीच बचाव करा दिया तब उपरोक्त सभी अभियुक्तगण मौके पर जान से मारने की धमकी देते हुये चले गये।

गेहूं खरीद की धीमी गति पर डीएम नाराज

● कमजोर प्रदर्शन वाले केंद्रों पर विशेष प्रयास की जरूरत, गेहूं खरीद के लिए चलाएं विशेष अभियान, ग्राम प्रधानों का ले सहयोगः डीएम

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

गुरुवार को डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने कलेक्ट्रेट में गेहूं खरीद की गहन समीक्षा की एवं निर्देश दिए कि सभी खरीद एजेंसियां अधिक से अधिक किसानों से गेहूं खरीद के लिए अभियान चलाएं। गेहूं की खरीद कम होने पर डीएम ने नाराजगी जताई। कहा कि वर्तमान समय में गेहूं का बाजार भाव समर्थन मूल्य के आसपास होने के कारण केंद्रों पर आवक कम है, इसलिए गेहूं खरीद के लिए युद्ध स्तर पर सार्थक प्रयास की आवश्यकता है। गेहूं खरीद की समीक्षा करते हुए डीएम ने कम खरीद करने वाले केंद्रों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत बताई। डीएम के पूछने पर जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी संतोष पटेल ने बताया कि अब तक जिले के 232 किसानों से 988.99 मीट्रिक टन की खरीद की गई है। डीएम ने केंद्रवार दैनिक लक्ष्य निर्धारित करते हुए गेहूं खरीद में तेजी लाने के लिए कहा। इसमें ग्राम प्रधानों का सहयोग लेने पर जोर दिया है। मंडी सचिव को निर्देश दिए कि मंडी में आने वाले किसानों से संवाद कर उन्हें सरकारी क्रय केंद्रों पर गेहूं बेचने हेतु प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। एडीएम संजय कुमार सिंह ने कहा कि किसानों से सुविधाजनक उनकी उपज गेहूं को खरीदने के लिए मोबाइल क्रय केन्द्र के माध्यम से गांव-गांव जाकर गेहूं की खरीद की जाए। जिसके लिए ग्राम प्रधान व कोटदार की मदद ली जाएगी। बैठक में सहायक निबंधक एवं आयुक्त सहकारिता पीके शुक्ला, सभी क्रय एजेंसियों के जिला स्तरीय प्रतिनिधि, डीएसओ अंजनी कुमार सिंह डीपीआरओ सौम्य शील सिंह, जिला कृषि अधिकारी अरविंद चौधरी सहित सभी क्षेत्रीय विपणन अधिकारी, विपणन निरीक्षक, एडीओ, एडीसीओ मौजूद रहे।

बेरोजगारों को मिलेगा दस लाख तक का कम ब्याज पर लोन

संवाददाता। सीतापुर

सीतापुर के जिला खादी ग्रामोद्योग अधिकारी आनन्द कुमार शुक्ला ने बताया कि उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के बेरोजगार नवयुवकों को स्वरोजगार के माध्यम से रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना संचालित कर रही है। ग्रामीण क्षेत्र के बेरोजगार नवयुवक-नवयुवतियां व परम्परागत कारीगर जिनकी आयु 18 से 50 वर्ष के बीच है, वह अपने गांव में स्वरोजगार के लिए 10 लाख रुपये तक का ऋण बैंक के माध्यम से कम ब्याज दर पर हासिल कर सकते हैं। सामान्य वर्ग के पुरुष आवेदक को परियोजना लागत का 10 प्रतिशत एवं सामान्य महिला अथवा किसी भी आरक्षित वर्ग के पुरुष या महिला आवेदक को परियोजना लागत का 5 प्रतिशत निजी अंशदान लगाना होगा। आरक्षित वर्ग के आवेदक को टर्मलोन का कोई भी ब्याज नहीं देना होगा जबकि सामान्य वर्ग के पुरुष आवेदक को टर्मलोन पर 4 प्रतिशत न्यूनतम वार्षिक ब्याज दर पर ऋण देय होगा। इच्छुक अभ्यर्थी अपना आवेदन पर आनलाइन कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए कमरा नंबर 126, 127 विकास भवन सीतापुर से सम्पर्क कर सकते हैं।

डीएम ने खुद चेक की मतदाता की वोटर आईडी

● डीएम ने मतदान केंद्रों का जायजा लिया

संवाददाता। शाहजहांपुर

नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने सुबह से ही गश्त का दौर प्रारम्भ कर दिया एक दर्जन से अधिक मतदान केंद्रों पर जाकर व्यवस्था अपनी नजर से देखी इस दौरान जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने मतदान केंद्रों पर मतदान करने आए मतदाताओं की आई डी चेक की इस के साथ ही मतदान केंद्रों के करीब भीड़ न लगने के लिए पुलिस को हिदायत भी दी। मतदान के दिन सुबह जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने मतदान केंद्र इस्लामिया इंटर कालेज, राजकीय पशु चिकित्सालय सदर, कंपोजिट विद्यालय किला, कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय किला, प्राथमिक पाठशाला चिनौर, पूर्व माध्यमिक विद्यालय चिनौर, प्राथमिक विद्यालय बाडूजई प्रथम, प्राथमिक विद्यालय लालपुर, रेलवे सेटिलमेंट नोटिफाइड एरिया जूनियर हाईस्कूल, नेव इंस्टीट्यूट इंटर कालेज, प्राथमिक विद्यालय ककरा, न्यू प्रभा मांटेसरी स्कूल, सरस्वती शिशु मंदिर, ए जेड खान इंटर कालेज, श्री चेतराम एम0एस0एस0 जूनियर हाईस्कूल आदि मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक श्री एस आनन्द ने पुलिस बल को शांतिपूर्ण एवं सकुशल निर्वाचन सम्पन्न कराये जाने हेतु आवश्यक निर्देश भी दिए। वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने मतदान केंद्र पर सबसे पहले वोट डाला। शाहजहांपुर में पहली बार नगर निगम के लिए वोट डाले जा रहे हैं। वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने प्रताप इंकलेव स्थित बूथ पर पहला वोट डाला। हालांकि हर चुनाव में सुरेश खन्ना अपने बूथ पर पहला वोट डालते हैं। मतदान दिवस पर हनुमतधाम पर दर्शन करने के बाद वित्त मंत्री सात मिनट पहले बूथ पर पहुंच गए। इस दौरान उन्होंने ईवीएम मशीन पर गर्दा होने को लेकर मतदान अधिकारी से कड़ी नाराजगी जताई। मतदान अधिकारी से मशीन पर लगी धूल को साफकराया। ईवीएम मशीन को थोड़ी उंचाई पर भी रखवाया। ठीक सात बजे मंत्री ने पहला वोट डाला।

कम उपस्थिति पर महानिदेशक ने दिखाई सख्त नाराजगी

● निदेशक स्कूल शिक्षा कई स्कूलों के निरीक्षण किया रसोइयों ने की मानदेय अत्यंत कम होने समेत समय पर न मिलने की फरियाद

संवाददाता। संडीला(हरदोई)

महानिदेशक स्कूल शिक्षा विजय किरन आनंद ने अंग्रेजी माध्यम उच्च प्राथमिक विद्यालय तिलुइयां कलां पहुंचे। यहां उनसे रसोइयों ने अपनी फरियाद करते हुए कहा कि उन्हें जो मानदेय दिया जा रहा है वो अत्यंत कम है। इसके अलावा उक्त मानदेय उन्हें समय पर मिलता भी नहीं है इससे उनके सामने गंभीर वित्तीय समस्या उत्पन्न होती है। इस पर महानिदेशक ने कहा कि उनकी यह समस्या सरकार के संज्ञान में हैं और इस पर साशन स्तर पर कार्य चल रहा है। उन्होंने बताया कि रसोइयों को भी आयुषमान भारत योजना के अंतर्गत जोड़ा जाएगा और उनकी समस्याओं का निराकरण कराया जाएगा। उन्होंनें विभिन्न कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों की बेहद कम संख्या देखी। इसके बाद उन्होंनें प्राथमिक विद्यालय जलालपुर के बाद राजकीय इंटर कॉलेज बेगमगंज का भी निरीक्षण किया। यहां भी छात्राओं की संख्या काफी कम थी। उन्होंने छात्राओं से कक्षा में बातें कीं। उनसे छोटे मोटे सवाल किए। साथ ही अध्यापकों से शिक्षा सत्र से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों के साथ स्मार्ट क्लास के बारे में भी जानकारी ली। इसको लेकर वे बेहद नाराज हुए और उन्होंनें बंद कमरे में तीनों विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाओं को निर्देश दिए। चूंकि मीडिया को वहां नहीं जाने दिया गया इसलिए उसका विवरण प्राप्त नहीं हो सका। महानिदेशक ने बीआरसी संडीला का भी निरीक्षण किया। यहां भी उनकी मीडिया से दूरी बनी रही। यहां तक कि वे फोटो खीचने से भी बचते दिखाई दिए। इसके बाद वे प्राथमिक विद्यालय मलेहरा को देखते हुए हरदोई चले गए। इस बहुचर्चित निरीक्षण को देखकर निरीक्षण के नाम पर मात्र रसम अदायगी होती दिखाई दी। अलबत्ता इस निरीक्षण के कारण संबंधित विद्यालयों और बीआरसी पर सारी व्यवस्थाएं चाक चौबंद अवश्य हो गईं।

डीएम बने डीसीबी बैंक के प्रशासक, कार्यभार संभाला

लखीमपुर खीरी। गुरुवार को जिला अधिकारी महेंद्र बहादुर सिंह ने जिला सहकारी बैंक प्रधान कार्यालय में प्रशासक का कार्यभार संभाला। डीएम ने मुख्य विकास अधिकारी अनिल कुमार सिंहए सहायक आयुक्त एव निबंधक प्रमोद कुमार शुक्ला के साथ बैंक कार्यालय का निरीक्षण किया। बैंक पहुंचने पर बैंक के सचिवए मुख्य कार्यपालक अधिकारी राहुल रोज सिंह ने उनको गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया। इस दौरान बैंक चेयरमैन कार्यालय में प्रशासकए डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने बैंक अधिकारियों के साथ बैठक कर बैंक की वित्तीय स्थिति जमा व अन्य योजनाओं पर चर्चा कीए संबंधित को जरूरी निर्देश दिए। बताते चलें कि जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष विनीत मनार के कार्यकाल समाप्त होने के बाद डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने प्रशासक के रूप में कार्यभार संभाला।

मतदान के दिन कांट में तीन गिरफ्तार

संवाददाता। शाहजहांपुर

पुलिस ने मतदान के दिन तीन लोगो को किया गिरफ्तार ,जिनके कब्जे से एक अदद लैपटाप, प्रिन्टर, तीन अदद मोबाईल फोन, 44 असली आधार कार्ड व 55 फर्जी आधार कार्ड , वोटर लिस्ट, वोट की पर्चिया, लैमिनेशन मशीन बरामद फर्जी आधार कार्ड बरामद किया। बकौल पुलिस हिरासत में आए मुबीन व एहसान और जफर ने पूछताछ में बताया कि हम लोगो को यह वोटर लिस्ट कांग्रेस अध्यक्ष पद के प्रत्याशी के कहने पर नवी पुर वार्ड के मेम्बर प्रत्याशी पप्पू खालिद ने लाकर दिया था। वोटर लिस्ट भी उन्होने ही दिया था व पप्पू खालिद और आधार कार्ड की व्यवस्था करने गये है । कुछ आधार कार्ड हम लोगो ने अपने मोबाइल पर मंगाये थे । ये आधार कार्ड कांट जनपद शाहजहांपुर व अन्य प्रान्तो के थे । हम अपनी इसी मशीन से एक ही आधार कार्ड नम्बर पर कई नाम पते बदलकर आधार कार्ड बना रहे है। इन फर्जी आधार कार्डो से फर्जी वोट डलवाकर यह अपने प्रत्याशी को जिताना चाहते है । पुलिस के अनुसार गिरोह एक व्यक्ति के असली आधार कार्ड को चुनाव प्रभावित कई वार्डो के गलत नाम पते के आधार कार्ड बनवाते हैं और एक ही असली आधार कार्ड पर कई वार्डो के फर्जी आधार कार्ड तैयार कर अपने प्रत्याशी के पक्ष में वोट डलवाने का तरीका हैं। हालांकि पुलिस की कहानी से पहले पुलिस अधीक्षक एस आनंद ने गुड़ वर्क के सम्बन्ध में जो बाइट जारी की उसमे फर्जी आधार बनाने वाले गैंग का जिक्र किया था मगर फर्जी वोट डलवाकर यह अपने प्रत्याशी को जिताने के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं दी थी।

जिले के चारों निकायों में लहरायेगा भाजपा का परचम : आर के सिंह पटेल

चित्रकूट में दूसरे चरण के निकाय चुनाव का मतदान शान्तिपूर्वक सम्पन्न

●सांसद ने परिवार के साथ किया मतदान

● जिले में 60.47 प्रतिशत हुआ मतदान

संवाददाता। चित्रकूट

बांदा-चित्रकूट सांसद आर के सिंह पटेल ने गुरुवार को बीआरसी कर्वी में बने बूथ पर पहुंचकर सपरिवार मतदान किया। इस मौके पर सांसद ने कहा कि प्रदेश की जनता ट्रिपल इंजन की सरकार बनाने का मन बना चुकी है। चित्रकूट जिले की चारों निकायों में भाजपा का परचम लहरायेगा।

गुरूवार को सांसद श्री पटेल ने अपने परिवार के साथ मुख्यालय के बीआरसी परिसर में बने बूथ पर मतदान किया। उन्होंने कहा कि निकाय चुनाव को लेकर मतदाताओं में खासा उत्साह है। मोदी-योगी की डबल इंजन की सरकार की योजनाओं को धरातल पर उतारने के लिए जनता निकायों में ट्रिपल इंजन की सरकार बनाने जा रही है।

दूसरे चरण के निकाय चुनाव का मतदान शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो गया। जिले की चारों सीटों में 141 बूथो पर 137913 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। जिले में मतदान प्रतिशत के मामले में सबसे आगे नवसृजित मऊ नगर पंचायत रही जहां लगभग 69.70 फीसदी मतदान हुआ। वोट डालने में कर्वी नगर पालिका के मतदाता पीछे रहे।यहां मतदान प्रतिशत 50.9 रहा। वही राजापुर नगर पंचायत का मतदान प्रतिशत 62.20 प्रतिशत रहा। जबकि मानिकपुर नगर पंचायत का मतदान प्रतिशत 59.10 रहा ।

मतदान की व्यवस्था का डीएम अभिषेक आनन्द व एसपी वृन्दा शुक्ला भारी पुलिस बल व प्रशासनिक अमले के साथ पूरे दिन जायजा लेते रहे। डीएम अभिषेक आनन्द व एसपी वृंदा शुक्ला ने नगर पालिका कर्वी के प्राथमिक विद्यालय इस्लामिया तरौहा, इंग्लिश मीडियम प्राथमिक विद्यालय चितरागोकुलपुर, उच्च प्राथमिक विद्यालय खोही, कम्पोजिट विद्यालय डिलौरा के पोलिंग बूंथों तथा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन जूहा स्कूल स्थित पिंक/सखी बूथ का निरीक्षण किया। डीएम-एसपी ने बूथ में लगे अधिकारी-कर्मचारियों को सतर्कता से ड्यूटी करने एवं निष्पक्ष मतदान करवाने को दिशा-निर्देश दिये।

भाजपा व निर्दलीय प्रत्याशी के बीच मारपीट, मामला दर्ज

चित्रकूट। नगर पंचायत मऊ क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी अमित द्विवेदी व निर्दलीय प्रत्याशी अंशुल के बीच मऊ चौराहे पर मारपीट हो गई। पहले दोनों प्रत्याशियों की तू-तू मैं-मैं हुई और दोनों के समर्थक एक-दूसरे पर लात-घूंसे बरसाने लगे। गुरुवार को इस बारे में एसपी वृंदा शुक्ला ने बताया कि दोनों पार्टियों के खिलाफ मुकदमा दर्जकर कार्रवाई की जा रही है। एसपी ने कहा कि ये मारपीट मऊ चौराहे पर हुई है। किसी पोलिंग बूथ पर मारपीट और दंगा नहीं हुआ है। जिले में सकुशल मतदान चल रहा है। नगर निकाय चुनाव को सकुशल संपन्न कराने को लेकर जिला प्रशासन बेहद सख्त है। जिले में नगर निकाय चुनाव को सवेरे सात बजे से मतदान शुरू हुआ। जिले में एक नगर पालिका समेत तीन नगर पंचायत हैं।

नगर निकाय चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराने को डीएम अभिषेक आनंद व एसपी वृंदा शुक्ला लगातार हर बूथों का निरीक्षण कर रहे थे। मतदाताओं को निर्भीक होकर मतदान की अपील कर रहे थे।

नगर पंचायत राजापुर का मतदान के प्रति रहा खासा उत्साह

●राजापुर में 62.33 प्रतिशत हुआ मतदान

●संवेदनशील बूथों में रहा सुरक्षाकर्मियों का कड़ा पहरा

संवाददाता। राजापुर, चित्रकूट

नगरीय सामान्य निर्वाचन के द्वितीय चरण में नगर पंचायत सहित विस्तारित क्षेत्रों में मतदान को लेकर लोगो में खासा उत्साह रहा। चिलचिलाती धूप में बूथों में मतदान करने के लिए मतदाताओं की लम्बी-लम्बी कतारें लगी रहीं। तुलसी तीर्थ राजापुर में निकाय चुनाव को लेकर मतदाताओं में गजब का उत्साह देखने को मिला। वृद्ध, दिव्यांग तथा नवयुगल जोड़ा ने विदाई से पहले मतदान किया। इसके साथ ही जिला प्रशासन द्वारा राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज तथा कम्पोजिट विद्यालय में बनाये गये पिंक बूथ तथा आदर्श बूथ के सेल्फी प्वाइंट में फोटो खिचवाने को मतदाता खासे उत्साहित नजर आये। उधर आईएएस विशेष सचिव नमामि गंगे, जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, उपजिलाधिकारी, क्षेत्राधिकारी, तहसीलदार पोलिंग बूथों का बराबर जायजा लेते रहे। शाम 6बजे तक शान्तिपूर्ण मतदान सम्पन्न हुआ।

अति संवेदनशील 13 बूथों में व संवेदनशील 15 बूथों में सीआईएफव पुलिस के जवानों को तैनात किया गया था। जिससे स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न हो सका। पूरे क्षेत्र में किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना नहीं हुई है। 9 मतदेय स्थलों तथा 28 बूथों में चिलचिलाती धूप होने के बावजूद भी दोपहर 12 बजे तक कतारें लगी रहीं।

जला जज व अपर जिला सचिव ने जेल व संप्रेक्षण गृह का किया निरीक्षण

चित्रकूट। उप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ से प्राप्त निर्देशों के क्रम में जिला जज/विधिक सेवा प्राधिकारण अध्यक्ष विष्णु कुमार शर्मा की अगुवाई में अपर जिला सचिव पूर्णकालिक जिला विधिक सेवा प्राधिकरण फारुख इनाम सिद्दीकी ने जिला कारागार रगौली का निरीक्षण कर दोषसिद्ध बन्दियों की समस्यायें जानी। बुधवार को जिला जज व अपर जिला सचिव ने जिला जेल की पाकशाला, जेल अस्पताल का निरीक्षण किया। दोषसिद्ध बन्दियों से समस्याओं के बारे में जानकारी ली। जिला कारागार में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर में बन्दियों को लैंगिक अपराधों के विरुद्ध बच्चों के अधिनियम 2012 (पाक्सो एक्ट), पशु क्रूरता तथा पशु संरक्षण अधिनियम के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर जेल अधीक्षक जिला कारागार शशांक पाण्डेय, जेलर राजीव कुमार सिंह, उपकारापाल रजनीश कुमार सिंह, रवि आनन्द, सुशील कुमार, ज्ञानेन्द्र स्वरूप दुबे मौजूद रहे।

साथी को जेल भेजे जाने पर अधिवक्ताओं का फूटा गुस्सा

फतेहपुर। व्यवस्था परिवर्तन अधिवक्ता संगठन की बैठक में साथी अधिवक्ता को जेल भेजे जाने पर अधिवक्ताओं का गुस्सा फूट पड़ा। हुसैनगंज पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए अधिवक्ताओं ने कहा कि यदि साथी पर दर्ज मुकदमा समाप्त न किया गया तो संघर्ष करके साथी धनंजय सिंह लोधी को न्याय दिलाया जायेगा। बैठक की अध्यक्षता अध्यक्ष श्रीराम पटेल एडवोकेट ने की। बैठक में बताया गया कि साथी अधिवक्ता धनंजय सिंह लोधी हुसैनगंज थानाध्यक्ष से मिलने गये तो पुलिस ने बिना सही तथ्यों के जांच किए अधिवक्ता साथी को हत्या के

●दर्ज मुकदमा समाप्त न हुआ तो संघर्ष का ऐलान

अपराध में जेल भेज दिया। अधिवक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए पुलिस प्रशासन व हुसैनगंज थानाध्यक्ष की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए मांग किया कि धनंजय सिंह लोधी एडवोकेट के विरूद्ध लगाये गये झूठे आरोपों के आधार पर मुकदमे को समाप्त किया जाये। यदि साथी के विरूद्ध दर्ज मुकदमे को समाप्त नहीं किया जाता है तो सभी अधिवक्ता प्रकरण को लेकर संघर्ष करके धनंजय सिंह लोधी को न्याय दिलायेंगे।

लिल्स बगिया व पटेल इंटर कालेज में धूमधाम से मनाया गया मदर्स डे

फतेहपुर। पटेल इंटर कालेज में मदर्स डे का आयोजन धूमधाम से किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं की माताओं ने जहां जमकर नृत्य किया वहीं अपने-अपने विचार भी साझा किए। मदर्स आफ द ईयर का ताज भी मुख्य अतिथि ने पहनाया। मां के महत्व पर विस्तार से चर्चा भी की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सीओ सिटी वीर सिंह की पत्नी सरिता सिंह ने शिरकत की। शिवाजी ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशन के निदेशक अतुल सिंह सचान व लिल्स बगिया की मैनेजर नेहा सिंह सचान ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सभी बच्चों व माताओं ने हर्षोल्लास के साथ कार्यक्रम में हिस्सा लेकर नृत्य किया और अपने-अपने विचार भी साझा किए। मुख्य अतिथि ने मदर्स आफ द ईयर का ताज सृष्टि उमराव को पहनाकर प्रथम पुरस्कार दिया। उन्होने कहा कि मां अपने बच्चे की पहली शिक्षक व पहली मित्र भी होती है। वह बिना किसी स्वार्थ के अपने बच्चे से खुद से ज्यादा प्रेम करती है।

सपा-भाजपा में दिखी कांटे की टक्कर निर्दलीय प्रत्याशी ने बिगाड़े समीकरण

हमीरपुर। नगर निकाय चुनाव शांतिपूर्वक निपट गया,चुनाव में कई बूथों में मतदाताओं के बोट गायब मिले जिससे लोगो में रोष व्यक्त किया। वही दलों के छुटभैया नेताओं को पुलिस ने हिरासत में लेकर पुलिस स्टेशन में बैठायी रही। जिले में महिला मतदाताओ ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। ज्यादातर बूथों में भाजपा व सायकिल की टक्कर रही वही निर्दलीय प्रत्याशी संजय साहू ने कई स्थानों में कांटे की टक्कर देकर चुनावी समीकरण बिगाड़ने का भी काम किया।

जानकारी के मुताबिक आज सुबह से ही मतदान करने

●महिला मतदाताओं ने लिया बढ़ चढ़कर हिस्सा

●नगर पंचायत गोहांड में 84 फीसदी मतदान

●आईजी ने मतदान केंद्रों का किया निरीक्षण

के लिये मतदाताओं में उत्साह नजर आ रहा था हालाकि एक बजे तक 37 फीसदी मतदान हुआ इसके बाद मतदान ने तेजी पकड़ी और तीन बजे तक 49 फीसदी मतदान हुआ। पांच बजे तक 61 फीसदी मतदान हुआ। जिसमे नगर पंचायत गोहांड में 84 फीसदी मतदान हुआ। इस पंचायत में जिले में सबसे ज्यादा मतदान हुआ जो चर्चा का विषय बना रहा। इसके बाद नगर पंचायत सरीला नें 68 फीसदी बोट डाल कर दूसरा स्थान प्राप्त किया। शहर में सबसे ज्यादा सपा व निर्दलीय प्रत्याशी संजय साहू की जबरदस्त टक्कर रही।

दोपहर आईजी जोन प्रयागराज चंद्रप्रकाश ने जीजीआईसी सहित अन्य बूथों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने एडीएम,एएसपी मायाराम वर्मा से जानकारी हासिल की। प्रेक्षक ने भी कई बूथों का निरीक्षण किया।

राज्य प्रशासनिक सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा के लिए प्रशासन ने कसी कमर

●14 मई को जिले के 12 परीक्षा केंद्रों पर होगी परीक्षा

फतेहपुर। लोक सेवा आयोग की सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारंभिक परीक्षा को सकुशल, पारदर्शिता, नकलविहीन एवं शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने हेतु अपर जिलाधिकारी (वित्त/राजस्व) विनय कुमार पाठक की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित महात्मा गांधी सभागार में बैठक सम्पन्न हुई। उन्होंने कहा कि लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारंभिक परीक्षा 14 मई रविवार को जनपद में 12 परीक्षा केंद्रों पर दो पालियों में पूर्वान्ह 9:30 से 11:30 तक सामान्य अध्ययन प्रथम प्रश्न पत्र तथा अपरान्ह 2:30 बजे से 4:30 बजे तक सामान्य अध्ययन द्वितीय प्रश्न पत्र में संपन्न होगी।

उन्होंने स्टैटिक/सेक्टर मजिस्ट्रेट को निर्देश दिए कि अपने-अपने परीक्षा केंद्रों का भ्रमण कर मूलभूत सुविधाओं को देख लें। साथ ही सीसीटीवी कैमरे की क्रियाशीलता को अवश्य देख लें। समय से सभी प्रकार की तैयारियां पूर्ण करा लें। परीक्षा केंद्रों में परीक्षा से पूर्व परीक्षार्थियों की सघन तलाशी ली जाए। परीक्षा केन्द्र में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को ले जाना पूर्णतया वर्जित है। आयोग के निर्देशों का अक्षरश: पालन कराया जाए।

सिपाही हत्याकांड की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में चौंकाने वाला खुलासा

संवाददाता। उरई, जालौन

●हमलावरों ने गोली से नहीं चाकुओं से गोद कर की थी हत्या

बीती रात्रि सदर कोतवाली क्षेत्र के नेशनल हाइवे पर स्थित पुलिस चौकी में तैनात आरक्षी भेदजीत सिंह की हत्या के मामले में उस दौरान चौंकाने वाला खुलासा आमने आया जब पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सिपाही की हत्या गोली से नहीं बल्कि चाकुओं से गोदकर करने का प्रकाश में आया। इसी के साथ सिपाही हत्याकांड के वास्तविक बदमाशों की धरपकड़ के लिये बनायी गयी चार टीमों के सामने भी एक नई चुनौती होगी। सवाल यह उठता है कि सिपाही की किन कारणों के चलते बदमाशों ने हत्या जैसी घटना को अंजाम दिया यह तो तभी स्पष्ट हो सकेगा जब हत्यारोपी पुलिस की पकड़ में आयेंगे। वहीं इस घटना को लेकर लोगों में चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है जो अपने तरीके से सिपाही हत्याकांड को लेकर अपनी राय रखते देखे जा रहे हैं।

गौरतलब हो कि सिपाही भेदजीत सिंह की हत्या होने के बाद अपर पुलिस महानिदेशक, कानपुर जोन, कानपुर एवं पुलिस उप महानिरीक्षक झांसी परिक्षेत्र, झांसी के साथ डॉग स्कॉट सहित कई बिंगों ने घटना स्थल का निरीक्षण कर सिपाही को मौत के घाट उतारने वाले बदमाशों द्वारा मौके पर छोड़े गये साक्ष्य भी संकलित किये गये थे।

जब मीडिया को सिपाही की पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बारे में जानकारी मिली तो उसमें सिपाही की हत्या गोली से नहीं बल्कि चाकुओं से गोंदकर करने का चौंकाने वाला मामला प्रकाश में आया तो पुलिस टीमें भी दंग रह गयी। अब पुलिस टीमों के सामने हत्या की जांच का दायरा बढ़ाने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा।

मवेशी काटकर बेचने वाला गिरफ्तार, औजार बरामद

उरई, जालौन। आटा थानाध्यक्ष ने अपनी टीम के साथ शक के आधार पर एक लग्जरी कार को रोक लिया। तलाशी लेने पर उसमें रखा बांका न छुरी बरामद कर चालक को गिरफ्तार कर लिया। मामले का खुलासा क्षेत्राधिकारी कालपी ने किया। सीओ कालपी ने मामले का खुलासा करते हुए बताया कि पकड़े गए आरोपी ने बताया कि वह प्रतिबंधित मवेशी के मांस का व्यापार करता है। मांग बढ़ती है तो जहा भी मवेशी मिलते है उन्हें सुनसान जगह पर काटकर मांस बेच देते है। 20 मार्च को उसने अपने भाई के साथ प्रतिबंधित मवेशी काटकर उसके अवशेष चलती गाड़ी से फेंक दिए थे।

अनियंत्रित बस पलटने से परिचालक की मौत, दो दर्जन से अधिक यात्री घायल

कालपी, जालौन। कालपी कोतवाली क्षेत्र के झांसी-कानपुर नेशनल हाईवे पर उस समय चीख-पुकार मच गई, जब यात्रियों को लेकर अहमदाबाद से कानपुर जा रही एक बस अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में परिचालक की मौत हो गई, जबकि दो दर्जन से अधिक सवारियां घायल हो गईं। सूचना मिलते ही सीओ, कोतवाल दल बल के साथ मौके पर पहुंचे, उन्होंने घायलों को मेडिकल कॉलेज उरई तथा सीएचसी कालपी में भर्ती कराया।

फर्रुखाबाद निकाय चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न, 62.84 रहा मतदान प्रतिशत

फर्रुखाबाद। जिले की प्रशासनिक व्यवस्था दुरुस्त होने के कारण जिले का निकाय चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। निकाय चुनाव शुरू होने से पहले ही जिलाधिकारी संजय कुमार सिंह व पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा की दुरुस्त प्रशासनिक व्यवस्था के चलते नगर निकाय चुनाव जिले में शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। संवेदनशील अति संवेदनशील बूथों पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई। जिससे कोई बात विवाद नहीं हुआ। लोगों ने कार्रवाई होने के भय से बूथो पर कोई लड़ाई झगड़ा नहीं किया। जिले के आला अधिकारी नगर निकाय चुनाव का जिले भर में भ्रमण कर जायजा लेते रहे और अधीनस्थ अधिकारियों को समय-समय पर दिशा निर्देश देते रहे। फर्रुखाबाद में सबसे कम और नगर पंचायत नवाबगंज में सर्वाधिक मतदान हुआ।

पेज एक का शेष

शिंदे महाराष्ट्र...

था। मुख्यमंत्री शिंदे समेत 16 बागी सेना विधायकों को अयोग्य साबित करने से इनकार करते हुए पीठ ने कहा कि दल बदल विरोधी कानून के तहत अयोग्यता अर्जी पर कोर्ट फैसला नहीं कर सकता। अदालत ने इसके लिए विधानसभा स्पीकर राहुल नार्वेकर निर्देश दिया कि वे एक तार्किक अवधि के भीतर लंबित मामले पर फैसला लें। पीठ ने कहा, सदन में बहुमत साबित करने के लिए राज्यपाल का ठाकरे को बुलाना उचित नहीं था क्योंकि उनके पास मौजूद सामग्री से इस निष्कर्ष पर पहुंचने का कोई कारण नहीं था कि ठाकरे सदन में बहुमत खो चुके हैं। पीठ ने कहा, हालांकि, पूर्व स्थिति बहाल नहीं की जा सकती क्योंकि ठाकरे ने विश्वास मत का सामना नहीं किया और इस्तीफा दे दिया था। पीठ में न्यायमूर्ति एम आर शाह, न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी, न्यायमूर्ति हिमा कोहली और न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा शामिल थे। पीठ ने कहा, राज्यपाल के पास ऐसी कोई सामग्री नहीं थी जिसके आधार पर वह सरकार के भरोसे पर संदेह करते। जिस प्रस्ताव पर राज्यपाल ने भरोसा जताया, उसमें ऐसा कोई संकेत नहीं था कि विधायक एमवीए सरकार से बाहर निकलना चाहते हैं। कुछ विधायकों की ओर से असंतोष व्यक्त करने वाला पत्र राज्यपाल द्वारा शक्ति परीक्षण के आह्वान के लिए पर्याप्त नहीं है। पीठ ने कहा कि राज्यपाल को अपने सामने मौजूद पत्र (या किसी अन्य सामग्री) पर अपनी समझदारी दिखानी चाहिए थी ताकि यह आकलन किया जा सके कि सरकार ने सदन का विश्वास खो दिया है या नहीं। अदालत ने कहा, हम राय शब्द का इस्तेमाल वस्तुनिष्ठ मानदंडों के आधार पर संतुष्टि के लिए करते हैं कि क्या उनके पास प्रासंगिक सामग्री है, और इसका मतलब राज्यपाल की व्यक्तिपरक संतुष्टि से नहीं है। एक बार जब कोई सरकार कानून के अनुसार लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित होती है, तो यह माना जाता है कि उसे सदन का विश्वास प्राप्त है। इस धारणा को खत्म करने के लिए कुछ वस्तुनिष्ठ सामग्री मौजूद होनी चाहिए। पीठ ने कहा कि विधायकों ने 21 जून, 2022 के प्रस्ताव में एमवीए सरकार से समर्थन वापस लेने की अपनी इच्छा व्यक्त नहीं की और यहां तक कि अगर यह मान भी लिया जाए कि वे सरकार से बाहर निकलने का इरादा रखते थे, तो उन्होंने शिवसेना विधानमंडल दल (एसएसएलपी) से अलग होकर केवल एक गुट का गठन किया तथा अपनी पार्टी के कदमों के प्रति अपने असंतोष का संकेत दे रहे थे।

दिल्ली सरकार...

और राज्यसभा के सदस्य राघव चड्ढा ने इस फैसले को ऐतिहासिक निर्णय बताया और कहा कि यह एक कड़ा संदेश देता है। अभी तक अरविंद केजरीवाल सरकार आरोप लगाती रही है कि अखिल भारतीय सेवाओं और दानिक्स (दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार, लक्षद्वीप, दमन एवं दीव और दादरा एवं नगर हवेली, सिविल सेवा) जैसे संयुक्त यूटी कैडर के नौकरशाह निर्वाचित सरकार के प्रशासनिक निर्देशों का पालन नहीं कर रहे हैं। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि प्रशासनिक मुद्दों में केंद्र की प्रधानता, संघीय व्यवस्था तथा प्रतिनिधित्व लोकतंत्र के सिद्धांत को खत्म कर देगी। उसने कहा कि अगर सेवाओं को विधाई, कार्यकारी अधिकार क्षेत्र से बाहर किया जाता है तो मंत्रियों को सरकारी अधिकारियों पर नियंत्रण से बाहर कर दिया जाएगा। प्रधान न्यायाधीश ने खचाखच भरे अदालत कक्ष में फैसला पढ़ते हुए कहा कि लोकतंत्र और संघवाद संविधान की मूल संरचना का हिस्सा हैं। आदेश में यह भी कहा गया है कि अगर अधिकारियों को मंत्रियों को रिपोर्ट करने से रोका जाता है तो सामूहिक जिम्मेदारी के सिद्धांत पर असर पड़ता है। इसमें कहा गया है कि शासन के लोकतांत्रिक स्वरूप में प्रशासन की वास्तविक शक्ति निर्वाचित सरकार के पास होनी चाहिए। न्यायालय ने यह भी स्पष्ट किया कि उपराज्यपाल प्रदेश की सरकार के विधाई दायरे से जुड़े मामलों के संबंध में दिल्ली सरकार के मंत्रियों की सलाह मानने तथा उनके साथ सहयोग करने के लिए बाध्य हैं। पीठ ने कहा कि जिन मामलों में केंद्र तथा राज्य दोनों कानून बना सकते हैं, उनमें केंद्र सरकार की शक्ति यह सुनिश्चित करने के लिए सीमित है कि शासन केंद्र सरकार के नियंत्रण में न चला जाए। दिल्ली सरकार की शक्तियों का ब्यौरा देते हुए अदालत ने कहा कि भारतीय प्रशासनिक सेवाओं या संयुक्त कैडर जैसी सेवाओं पर विधाई तथा शासकीय शक्तियां दिल्ली सरकार के पास ही रहेंगी। गौरतलब है कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 2015 में एक अधिसूचना जारी की थी कि उसके पास दिल्ली में सेवाओं पर नियंत्रण है। अरविंद केजरीवाल की सरकार ने इस अधिसूचना को दिल्ली उच्च न्यायालय में चुनौती दी थी। बाद में शीर्ष न्यायालय ने पिछले साल छह मई को दिल्ली में सेवाओं के नियंत्रण का मुद्दा पांच सदस्यीय संविधान पीठ को सौंपा था।

उप्र निकाय...

किया गया। मऊ जिले के एक मतदान केंद्र पर फर्जी वोट डालने के आरोप में करीब छह लोग पकड़े गए। समाजवादी पार्टी ने ट्वीट कर आजमगढ़ की नगर पंचायत महाराजगंज में पार्टी समर्थक मतदाताओं को वोट डालने से रोकने का आरोप लगाया। प्रदेश में नगरीय निकाय चुनावों के पहले चरण के तहत गत चार मई को मतदान हुआ था। चुनाव परिणामों की घोषणा 13 मई को होगी। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले नगरीय निकाय चुनाव को प्रदेश के शहरी मतदाताओं के बीच राजनीतिक दलों की स्थिति के आकलन की कसौटी के रूप में देखा जा रहा है।

ईपीएफओ की...

भुगतान करने का तरीका क्या होगा। सदस्य अभी इस बात से भी अवगत नहीं है कि बहुत ज्यादा राशि मांगे जाने की स्थिति उन्हें उच्च पेंशन योजना से बाहर होने का विकल्प मिलेगा या नहीं। परिपत्र में स्पष्ट किया गया है कि अतिरिक्त राशि का निर्धारण क्षेत्रीय अधिकारी करेंगे। जो भी राशि निर्धारित होगी ब्याज सहित उसके बारे में सूचना उच्च पेंशन का विकल्प चुनने वाले अंशधारकों को दी जाएगी। इसमें कहा गया है कि पेंशनभोगियोंसदस्यों को पैसा जमा करने और कोष के अंतरण के लिए सहमति देने को लेकर तीन महीने तक का समय दिया जाएगा। ईपीएफओ के क्षेत्रीय अधिकारी पेंशनभोगियों या सदस्यों को उच्च पेंशन के लिए अतिरिक्त कोष के भुगतान की जरूरत के बारे में सूचना देंगे। उल्लेखनीय है कि इस महीने की शुरुआत में श्रम मंत्रालय ने स्पष्ट किया था कि उच्च पेंशन का विकल्प चुनने वालों के मूल वेतन का 1.16 प्रतिशत अतिरिक्त योगदान ईपीएफओ की संचालित सामाजिक सुरक्षा योजना में नियोक्ता के योगदान से लिया जाएगा। फिलहाल सरकार कर्मचारी पेंशन योजना (ईपीएस) में 15,000 रुपए के मूल वेतन की सीमा पर 1.16 प्रतिशत का योगदान सब्सिडी के रूप में देती है। कर्मचारी ईपीएफओ की सामाजिक सुरक्षा योजना में 12 प्रतिशत का योगदान करते हैं। वहीं नियोक्ता के 12 प्रतिशत योगदान में से 8.33 प्रतिशत ईपीएस में जाता है। शेष 3.67 प्रतिशत कर्मचारी भविष्य निधि में जाता है।

पाक सुप्रीम...

में दाखिल हुए, उसके दरवाजे बंद कर दिए गए और उसके बाद पीठ ने मामले की सुनवाई शुरू की। प्रधान न्यायाधीश बंदियाल ने खान से कहा, आपको देख कर अच्छा लगा। अदालत ने संक्षिप्त सुनवाई में खान की गिरफ्तारी को गैर कानूनी करार दिया और आदेश दिया कि उन्हें रिहा किया जाए। शीर्ष अदालत ने खान को निर्देश दिया कि वह शुक्रवार को इस्लामाबाद उच्च न्यायालय में अर्जी दे और आगे की कानूनी प्रक्रिया का अनुपालन करें। न्यायाधीश ने कहा, उच्च न्यायालय जो भी फैसला दे आपको स्वीकार करना होगा। न्यायमूर्ति बंदियाल ने यह भी कहा कि प्रत्एक नेता की जिम्मेदारी है कि वह कानून व्यवस्था सुनिश्चित करे। सुनवाई के दौरान खान ने अदालत को बताया कि उनका अदालत से तब अपहरण किया गया जब वह अपील दाखिल करने के लिए बायोमेट्रिक हाजिरी देने की तैयारी कर रहे थे। खान ने दावा किया कि उन्हें हिंसा का शिकार होना पड़ा, उनकी नृशंसता से पिटाई की गई और इस तरह का व्यवहार किया गया जो अपराधियों के साथ भी नहीं होता है। जब प्रधान न्यायाधीश ने प्रदर्शनकारियों द्वारा की गई हिंसा की निंदा करने को कहा तो खान ने पूरे प्रकरण से खुद को अलग करते हुए कहा कि वह हिरासत में थे। उन्होंने कहा, मैं कैसे खूनी प्रदर्शनों के लिए जिम्मेदार हो सकता हूं? खान ने कहा कि उन्होंने कभी हिंसा का समर्थन नहीं किया। उन्होंने कहा, मैं सभी से अपील करता हूं कि वे सार्वजनिक संपत्तियों को नुकसान पहुंचाने से बचे। पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा कि वह केवल चुनाव कराने की मांग कर रहे हैं। खान के वकीलों ने अदालत के बाहर कहा कि उनके मुवक्किल ने भी प्रदर्शन रोकने की अपील की है। इससे पहले, सुनवाई शुरू होने पर प्रधान न्यायाधीश ने सवाल किया कि किसी व्यक्ति को अदालत परिसर से कैसे गिरफ्तार किया जा सकता है। न्यायमूर्ति मिनल्लाह ने कहा कि निश्चित रूप से खान अदालत परिसर में प्रवेश कर गए थे। उन्होंने कहा, न्याय के अधिकार से किसी को कैसे वंचित किया जा सकता है। इसके साथ ही न्यायालय ने कहा कि एजेंसी द्वारा किसी को भी अदालत परिसर में और रजिस्ट्रार की अनुमति के बिना गिरफ्तार नहीं किया जाना चाहिए।

पांच करोड़...

सुधार हुआ है और राजस्व बढ़ा है। ई-चालान शुरू में 500 करोड़ रुपए से अधिक के कारोबार वाली बड़ी कंपनियों के लिए लागू किया गया था और तीन साल के भीतर इस सीमा को घटाकर अब पांच करोड़ रुपए कर दिया गया है।

पवार-उद्धव...

कि क्या पवार विपक्षी गठबंधन का प्रमुख चेहरा होंगे, कुमार ने कहा, इससे ज्यादा सुखद कुछ नहीं होगा। मैंने उनसे कहा है कि उन्हें न केवल अपनी पार्टी के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए और अधिक जोश के साथ काम करना होगा।

तीसरे मोर्चे...

तीसरे मोर्चे के उभरने की संभावना के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, नहीं, जहां तक मेरा सवाल है, अभी नहीं। यह पूछे जाने पर कि क्या बीजद आगामी चुनाव अकेले लड़ेगा, उन्होंने कहा, हमेशा ऐसा ही होता रहा है।

भ्रष्टाचार के...

आंबेडकर, भगत सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के चेहरे भी हैं। कांग्रेस ने इस पदयात्रा को निजी बताते हुए कहा कि पार्टी का इससे कोई लेना-देना नहीं है। दूसरी ओर पार्टी ने अशोक गहलोत की तारीफ करते हुए कहा कि वह जन-जन के मुख्यमंत्री हैं। पार्टी ने अपने ट्विटर हैंडल पर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की तारीफ करते हुए एक वीडियो जारी किया गया है।

प्रौद्योगिकी प्रगति...

लगभग 4,000 पेटेंट पंजीकृत होते थे, लेकिन अब यह संख्या 30,000 से अधिक है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 में देश में करीब 100 स्टार्टअप थे आज इनकी संख्या एक लाख के करीब पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि पहले सालाना 70,000 ट्रेड मार्क पंजीकृत हुआ करते थे, यह आंकड़ा अब 2.5 लाख से अधिक है, जबकि इनक्यूबेशन केंद्रों की संख्या 2014 में 150 थी जो बढ़कर 650 हो गई है। मोदी ने कहा कि एक समय था, जब प्रौद्योगिकी सामान्य भारतीय की पहुंच से बाहर थी लेकिन भारत का यूपीआई आज आसान उपयोग की वजह से दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है। उन्होंने कहा कि आज रेहड़ी-पटरी वालों से लेकर रिक्शे वाले तक, डिजिटल लेनदेन का इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने कहा, आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इको-सिस्टम है और ए विकास उस समय में हुआ जब दुनिया आर्थिक अनिश्चितताओं के दौर से गुजर रही है। ये भारत की सामर्थ्य दिखाता है, भारत की प्रतिभा दिखाता है। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के 25वें वर्ष के समारोह के प्रारंभ का प्रतीक है जिसका आयोजन 11 से 14 मई तक किया गया है। मोदी ने कहा, आज 11 मई का ये दिन, भारत के इतिहास के सबसे गौरवमय दिनों में से एक है। आज भारत के वैज्ञानिकों ने पोकरण में वह उपलब्धि हासिल की थी जिसने मां भारती की हर संतान का सिर गर्व से उंचा कर दिया था।

जवाबी हमले में अभी वक्त लगेगा : जेलेंस्की

● फिलहाल ऐसा करने पर भारी जनहानि होगी

भाषा। कीव

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की का कहना है कि उनके देश की सेना को रूसी सेना को पीछे धकेलने और युद्ध में एक नया अध्याय खोलने के उद्देश्य से जवाबी हमला करने के लिए और समय चाहिए। जेलेंस्की ने बीबीसी को दिए साक्षात्कार में दावा किया कि मौजूदा समय में जवाबी हमला करने से भारी जनहानि हो सकती है।

गौरतलब है कि रूस और यूक्रेन के बीच करीब 14 महीने से युद्ध जारी है। बृहस्पतिवार को प्रसारित साक्षात्कार में जेलेंस्की ने कहा, जो कुछ भी हमारे पास है उसे लेकर हम आगे बढ़ सकते हैं और हम कामयाब होंगे। हालांकि, हम भारी संख्या में लोगों को खोना पड़ सकता है और

मुझे लगता है कि यह अस्वीकार्य है। यूक्रेन के राष्ट्रपति ने कहा, ... इसलिए हमे इंतजार करने की जरूरत है। हमें अभी और वक्त चाहिए। पिछले कुछ सप्ताह से रूस के खिलाफ यूक्रेन के आक्रामक जवाबी हमले की संभावना जताई जा रही है। यूक्रेन टैंक और वायु रक्षा प्रणाली समेत उन्नत पश्चिमी हथियार प्राप्त कर रहा है। साथ ही पश्चिमी देशों की तरफ से यूक्रेनी सैनिकों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। संभावना जताई जा रही है कि मौसम के हालात सामान्य होने पर यूक्रेन की तरफ से जवाबी हमला किया जा सकता है लेकिन इसके सही समय को लेकर कोई सटीक जानकारी सामने नहीं आई है।

यूक्रेन को लंबी दूरी की क्रूज मिसाइलें दान दे रहा ब्रिटेन : ब्रिटिश रक्षा मंत्री

लंदन। ब्रिटेन ने बृहस्पतिवार को पुष्टि की कि वह रूसी हमले के खिलाफ यूक्रेन की मदद के लिए उसे लंबी दूरी की क्रूज़ मिसाइलें भेज रहा है। ब्रिटिश रक्षा मंत्री बेन वालेस के मुताबिक, ब्रिटेन यूक्रेन को स्टॉर्म शैडो मिसाइलें दान दे रहा है। स्टॉर्म शैडो में लंबी दूरी तक लक्ष्य को भेदने की क्षमता है और इसकी मारक क्षमता 250 किलोमीटर से ज्यादा है। इसे विमान से दागा जा सकता है। ब्रिटेन ने कहा कि इन मिसाइलों की आपूर्ति से यूक्रेन को अपने क्षेत्रों से रूसी सेना को पीछे धकेलने में मदद मिलेगी। हाउस ऑफ कॉन्म्स में एक बयान में रक्षा मंत्री वालेस ने कहा, आज, मैं इस बात की पुष्टि कर सकता हूं कि ब्रिटेन ने यूक्रेन को स्टॉर्म शैडो मिसाइलें दान की हैं। उन्होंने कहा, इन हथियार प्रणालियों का दान यूक्रेन को रूस की निरंतर क्रूरता के खिलाफ खुद को बचाने का सबसे अच्छा मौका देगा। खासकर, यूक्रेन के असैन्य अवसंरचना को जानबूझकर निशाना बनाने के खिलाफ, जो अंततराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है। वालेस ने कहा, यूक्रेन को इसके (हमले के) खिलाफ अपना बचाव करने का अधिकार है। स्टॉर्म शैडो का उपयोग कर यूक्रेन अपने संप्रभु क्षेत्र से रूसी सेना को पीछे धकेलेगा। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की देश में पिछले साल संघर्ष शुरू होने के बाद से ही ऐसे हथियारों की मांग कर रहे थे लेकिन उनके अंतरराष्ट्रीय समर्थक लंबी दूरी के हथियार उन्हें प्रदान करने में संकोच कर रहे थे। उन्हें लग रहा था कि इससे कटुता बढ़ सकती है।

युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं के कारण 2022 में अपने ही देश में विस्थापित हुए रिकॉर्ड 7.1 करोड़ लोग

भाषा। ओस्लो

युद्ध या प्राकृतिक आपदाओं के कारण देश की सीमा में विस्थापित होने वाले लोगों की संख्या यूक्रेन युद्ध के कारण 2022 में रिकॉर्ड 7.11 करोड़ पहुंच गई है। नॉर्वेजियन रिफ्यूजी काउंसिल के इंटरनल डिस्प्लेसमेंट मॉनिटरिंग सेंटर की बृहस्पतिवार को जारी रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण 2022 के अंत तक करीब 59 लाख लोग यूक्रेन के भीतर ही विस्थापित होने (अपना घर छोड़कर दूसरी जगह जाने) को मजबूर हुए। इसके साथ ही युद्ध और हिंसा के कारण देश के भीतर ही विस्थापित होने वाले लोगों की संख्या बढ़कर दुनिया में 6.2 करोड़ से ज्यादा हो गई जो 2021 के मुकाबले 17 फीसदी ज्यादा है। सीरिया में एक दशक से भी लंबे गृह युद्ध के बाद वहां 68 लाख लोग विस्थापित हुए हैं। बाढ़, अकाल आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण देश के भीतर ही विस्थापित होने वाले लोगों की संख्या 2022 में 87 लाख थी जो 2021 के मुकाबले 45 प्रतिशत ज्यादा है। रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में देश के भीतर ही कुल 7.11 करोड़ लोग विस्थापित हुए और यह संख्या 2021 के मुकाबले 20 प्रतिशत ज्यादा है। देश के भीतर विस्थापित होने से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा किन्हीं कारणों से अपने ही देश में एक जगह से दूसरे जगह जाना है। इंटरनल डिस्प्लेसमेंट मॉनिटरिंग सेंटर ने अपनी रिपोर्ट में देश छोड़कर जा चुके लोगों को शामिल नहीं किया है। यूक्रेन, सीरिया, इथोपिया और अन्य जगहों पर साल भर से जारी युद्ध और संघर्षों से 2023 में भी कोई राहत नहीं है।

क्विक न्यूज

म्यांमा के घातक गृह युद्ध और संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई : आसियान नेता

लाबुआन बाजो (इंडोनेशिया)। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति जोको विडोडो ने बृहस्पतिवार को दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के नेताओं के सामने बड़ी ही उदासीनता के साथ स्वीकार किया कि म्यांमा में जारी गृह युद्ध और संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई है। जोको विडोडो ने म्यांमा में हिंसा को समाप्त करने के लिए नेताओं से नए सिरे से आह्वान किया। म्यांमा में हाल ही में एक हवाई हमला किया गया था, जिसे अधिकार समूह ने स्पष्ट युद्ध अपराध करार दिया था। इंडोनेशियाई बंदरगाह शहर लाबुआन बाजो में आयोजित दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के संगठन (आसियान) के दो दिवसीय शिखर सम्मेलन के अंतिम दिन विडोडो ने सदस्य देशों के नेताओं से कहा, मुझे ईमानदारी के साथ इसका जवाब देना चाहिए। म्यांमा मे गृह युद्ध की स्थिति और संघर्ष को समाप्त करने के लिए पांच सूत्री सहमति के कार्यान्वयन मे कोई महत्वपूर्ण प्रगति नही हुई है।

डेमोक्रेट पार्टी ने ग्रीन कार्ड के लिए देशों का कोटा खत्म करने संबंधी नागरिकता विधेयक पेश किया

वाशिंगटन। अमेरिका में सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक पार्टी ने बुधवार को नागरिकता विधेयक पेश किया जिसमे ग्रीन कार्ड के लिए देशो का कोटा खत्म करने तथा एच-1बी वीजा प्रणाली मे बदलावो का प्रावधान है। कांग्रेस सदस्य लिंडा सांचेज द्वारा पेश अमेरिकी नागरिकता कानून 2023 मे सभी 1.1 करोड़ अप्रमाणित आव्रजको को नागरिकता देने की रूपरेखा बनाई गई है। इसमें हर देश की सीमा को खत्म करके रोजगार आधारित आव्रजन प्रणाली मे बदलावो का भी प्रस्ताव दिया गया है। इस विधेयक से अमेरिकी विश्वविद्यालयो से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग तथा गणित मे डिग्री हासिल करने वालों के लिए देश में रहना आसान हो जाएगा। साथ ही इससे कम वेतन वाले उद्योग मे काम रह रहे लोगो के लिए ग्रीन कार्ड हासिल करने, एच-1बी वीजा धारको पर निर्भर लोगो को देश मे काम करने की मंजूरी देने तथा एच-1बी वीजा धारकों के बच्चों को इस प्रणाली से बाहर रखने से रोकने में मदद मिलेगी।

एससीओ के विदेश मंत्रियों की बैठक सफल रही, सुरक्षा सहयोग शीर्ष प्राथमिकता: महासचिव झांग मिंग

बीजिंग। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के विदेश मंत्रियो की हाल मे गोवा मे हुई बैठक सफल रही और यह इस आठ सदस्ईय समूह की प्रगति का नया मार्ग प्रशस्त करेगी जिसकी शीर्ष प्राथमिकता सुरक्षा सहयोग है। एससीओ के महासचिव झांग मिंग ने यह बात कही। भारत ने चार-पांच मई को गोवा के बेनौलिम मे एससीओ के सदस्य देशो के विदेश मंत्रियो की बैठक की मेजबानी की थी। बैठक की अध्यक्षता करते हुए विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा था कि इस सत्र ने एससीओ मे बहुपक्षीय सहयोग के स्तर पर ध्यान केंद्रित करने, आपसी हित के क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दो पर ध्यान देने और संगठन मे सुधार एवं इसके आधुनिकीकरण पर चर्चा करने का अवसर प्रदान किया है। एससीओ मे चीन, भारत, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, रूस, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उजबेकिस्तान शामिल है। भारत इस साल एससीओ की अध्यक्षता कर रहा है। एससीओ के महासचिव के रूप मे कामकाज संभालने से पहले वरिष्ठ चीनी राजनयिक की भूमिका निभा चुके झांग ने कहा, गोवा मे पिछले दिनो हुई विदेश मंत्रियो की बैठक सफल रही।

कराची की गोदी में चीनी नागरिकों पर हमले की साजिश नाकाम, संदिग्ध की मौत: पुलिस

कराची। सुरक्षा बलो ने कराची मे एक गोदी पर कार्यरत चीनी नागरिको पर घातक हमले की साजिश को नाकाम करते हुए एक संदिग्ध आत्मघाती हमलावर को मार गिराया। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।घटना बुधवार की है जब सुरक्षा बलो के अधिकारियो को पता चला कि एक संदिग्ध व्यक्ति पाकिस्तान के बंदरगाह शहर कराची के पोर्ट कासिम पर गोदी मे काम कर रहे चीनी नागरिको पर आत्मघाती हमले की साजिश रच रहा है।वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक हसन सरदार ने कहा कि जवानो ने संदिग्ध आतंकवादी को मार गिराया। पुलिस को खुफिया सूचना मिली थी कि एक प्रतिबंधित संगठन ने मंगलवार को आतंकवादी हमले की साजिश रची है जिसके बाद विदेशी कामगारो की सुरक्षा बढ़ाई गई और इस दौरान आतंकवादी को मार गिराया गया। सरदार के अनुसार, संदिग्ध को जब गोदी मे विदेशी नागरिको की ओर बढ़ते हुए देखा गया तो सुरक्षा बलो ने उसे रोकने का प्रयास किया और मुठभेड़ में संदिग्ध ने गोली भी चलाई।

प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा ऐतिहासिक , दुनिया के लिए अच्छी : संधू

वाशिंगटन। अमेरिका मे भारत के राजदूत तरणजीत सिंह संधू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगले महीने होने वाली अमेरिका यात्रा को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि इससे यह पता चलेगा कि दोनो देशो के बीच साझेदारी जन-केंद्रित और बड़े पैमाने पर दुनिया के लिए अच्छी है। प्रधानमंत्री मोदी की राष्ट्रपति जो बाइडन के निमंत्रण पर अमेरिका की आगामी आधिकारिक राजकीय यात्रा ऐतिहासिक है। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति बाइडन ने एक साथ मिलकर हमारे द्विपक्षीय संबंधो को नई ऊर्जा तथा गति प्रदान की है। भारतीय राजदूत ने कहा, यह यात्रा दोनो नेताओं के लिए एक साथ वक्त बिताने, प्रगति की समीक्षा करने तथा भविष्य की असंख्य संभावनाओ पर मार्गदर्शन करने का अवसर होगी। यह यात्रा दिखाएगी कि भारत-अमेरिका साझेदारी जन-केंद्रित है और न केवल दोनो देशो के लिए बल्कि बड़े पैमाने पर दुनिया के लिए भी अच्छी है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने बुधवार को नई दिल्ली मे एक बयान मे बताया था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अगले महीने राष्ट्रपति जो बाइडन और प्रथम महिला जिल बाइडन के निमंत्रण पर अमेरिका की आधिकारिक यात्रा पर जाएंगे। हालांकि, प्रधानमंत्री की यात्रा की अवधि का ब्योरा नही दिया।

फिनलैंड में पैदल पार पुल ढहने से 24 लोग जख्मी:

हेलसिंकी। फिनलैड के दक्षिणी शहर एस्पो मे बृहस्पतिवार सुबह अस्थाई पैदल पार पुल ढहने से दो दर्जन लोग जख्मी हो गए जिनमे से ज्यादातर स्कूली बच्चे है। पुलिस ने बताया कि यह पुल एस्पो के टैपिओला क्षेत्र मे एक निर्माण स्थल के ऊपर था और सुबह मे ढह गया। हादसे मे किसी की मौत नही हुई है लेकिन 24 लोग जख्मी हो गए है। एस्पो राजधानी हेलसिंकी से सटा शहर है। पुलिस ने एक बयान में कहा कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। हेलसिंकी विश्वविद्यालय अस्पताल ने कहा कि उसके यहां 15 घायलो को लाया गया है।

क्युटोन को ग्लोबल एक्सीलेंस अवॉर्ड

मुंबई। एक छत के नीचे नए नए इनोवेटिव टाइल समाधानों की पेशकश करने वाला एक लक्ज़री टाइल ब्रांड, क्युटोन टाईल्स ने ग्लोबल एक्सीलेंस अवॉर्ड 2023 में सबसे विश्वसनीय ब्रांड अवॉर्ड जीता है। इस पुरस्कार को न्यू दिल्ली में ब्रांड एम्पावर प्राइवेट लिमिटेड द्वारा आयोजित एक समारोह में विख्यात अभिनेत्री माधुरी दीक्षित नेने ने प्रस्तुत किया। क्युटोन टाईल्स, जो दुनिया भर में 60 से अधिक देशों में मौजूद प्रीमियम ब्रांड है, जो फर्श, दीवारें, काम सतहों और बाहरी विशालकायों के लिए विस्तृत उत्पादों की पेशकश करता है। सुनील मंगलुनिया, क्यूटोन टाईल्स के प्रबंध निदेशक ने कहा, हम जीईए 2023 में सबसे विश्वसनीय ब्रांड पुरस्कार प्राप्त करने पर अत्यंत गर्व महसूस कर रहे हैं। इस पुरस्कार से हमारे ब्रांड के विश्वास को मजबूत करने और हमारे ग्राहकों को उत्कृष्ट उत्पादों और सेवाओं की प्रदान करने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को समर्थन मिला है।

जापान में 5.4 तीव्रता का भूकंप, कई लोग घायल

तोक्यो। जापान की राजधानी तोक्यो तथा आसपास के इलाको मे बृहस्पतिवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए, जिसमे कई लोग घायल हो गए। अधिकारियो और मीडिया ने यह जानकारी दी। जापान की मौसम विज्ञान एजेंसी ने बताया कि भूकंप की तीव्रता 5.4 मापी गई और इसका केंद्र चीबा प्रांत मे था। भूकंप के बाद सुनामी की कोई चेतावनी जारी नही की गई है। जापान की क्योदो समाचार एजेंसी के अनुसार, भूकंप के कारण चार लोग घायल हो गए। इनमे से एक व्यक्ति छत पर लगी लाइट गिरने से घायल हो गया।

कार्टूनिस्ट जुंजी के कार्टूनों का प्रकाशन बंद करने का फैसला

हांगकांग। हांगकांग के एक अखबार ने शहर के एक प्रतिष्ठित कार्टूनिस्ट की रचनाओ के खिलाफ सरकार की शिकायतो के बाद उनके कार्टून नही छापने का फैसला किया है। मिंग पाओ अखबार के संपादकीय विभाग ने कहा कि वह पिछले चार दशक से साथ मे काम करने के लिए कार्टूनिस्ट जुंजी के प्रति आभार जताना चाहेगा। जुंजी को वोंग नाम से भी जाना जाता है। उनकी व्यंग्य रचनाओ मे हांगकांग के 1997 मे चीन के अधिपत्य मे आने के बाद से वहां के समाज की हताशा को दर्शाया जाता है। कार्टूनिस्ट ने इस बारे मे पूछे गए सवाल पर कोई प्रतिक्रिया नही दी।

विदेश मंत्री जयशंकर हिंद महासागर सम्मेलन में हिस्सा लेने ढाका पहुंचे

ढाका। विदेश मंत्री एस. जयशंकर हिंद महासागर सम्मेलन के छठे संस्करण मे भाग लेने के लिए बृहस्पतिवार को बांग्लादेश पहुंचे। सम्मेलन के दौरान क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओ पर विचार-विमर्श किया जाएगा। इंडिया फाउंडेशन ने बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय के सहयोग से सम्मेलन के छठे संस्करण का आयोजन किया है, जिसकी थीम शांति, समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य के लिए साझेदारी है। बांग्लादेश के विदेश कार्यालय के एक प्रवक्ता ने बताया कि विदेश राज्य मंत्री मोहम्मद शहरयार आलम ने जयशंकर के आगमन पर उनका स्वागत किया।

व्हाइट हाउस में नई भूमिका को लेकर काफी उत्साहित हूं : नीरा टंडन

भाषा। वाशिंगटन

जल्द ही व्हाइट हाउस की घरेलू नीति सलाहकार का पद संभालने वाली भारतीय-अमेरिकी नीरा टंडन ने कहा कि वह प्रशासन में अपनी नई भूमिका को लेकर उत्साहित हैं। सार्वजनिक नीति में विशेषज्ञता रखने वाली टंडन व्हाइट हाउस की घरेलू नीति सलाहकार के रूप में सुजैन राइस का स्थान लेंगी। टंडन (52) व्हाइट हाउस में इस प्रभावशाली पद पर नियुक्त होने वाली पहली एशियाई-अमेरिकी नागरिक हैं। वह अभी राष्ट्रपति जो बाइडन की वरिष्ठ सलाहकार तथा स्टाफ सचिव हैं। टंडन ने बुधवार को एएपीआई विक्ट्री फंड द्वारा आयोजित एएएनएचवीआई विमेंस सेलीब्रेशन में अपने संबोधन में कहा, मैं व्हाइट हाउस में अपनी नई भूमिका को लेकर बहुत उत्साहित हूं और मैं प्रशासन का हिस्सा बनकर काफी रोमांचित हूं जिसमें कई एएएनएचपीआई (एशियाई अमेरिकी, मूल हवाई और प्रशांत द्वीप वासी) नेता हैं, कई सारी एएएनएचपीआई महिला नेता हैं... कई सारे नेता हैं जो हमारे समुदाय की बड़ी विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इजराइल ने गाजा पट्टी में एक और आतंकी कमांडर को मार गिराया

भाषा। गाजा सिटी

इजराइली हवाई हमले में बृहस्पतिवार को गाजा पट्टी में एक और आतंकी कमांडर मारा गया और इसके साथ ही हालिया संघर्ष में अब तक फलस्तीनी पक्ष के 25 लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं, मिस्र द्वारा संघर्षविराम के प्रयासों के बीच गाजा की ओर से दक्षिणी इजराइल में रॉकेट दागे जाना जारी रहा। गाजा में इजराइल और फलस्तीनी आतंकियों के बीच पिछले कुछ महीनों में यह सबसे भीषण लड़ाई साबित हुई है। इजराइली सेना ने बृहस्पतिवार तड़के आतंकवादी समूह इस्लामिक जिहाद के खिलाफ हमले किए। सेना ने कहा कि हवाई हमले में आतंकी समूह के एक वरिष्ठ कमांडर अली घाली को मार गिराया गया। इजराइली हमले में उस अपार्टमेंट को निशाना बनाया गया, जिसमें अली रहता था। सेना के प्रवक्ता रियर एडमिरल डेनियल हागरी ने इजराइली आर्मी रेडियो को बताया कि हमले में दो अन्य आतंकवादी भी मारे गए हैं। हालांकि, किसी संगठन ने मारे गए दो लोगों के अपना सदस्य होने का दावा नहीं किया है। यह हमला दक्षिणी गाजा पट्टी के एक रिहायशी इलाके की इमारत के सबसे ऊपरी तल को निशाना बनाकर किया गया। हमले से निवासियों में दहशत फैल गई और सड़कों पर कांच के टुकड़े और मलबा बिखरा दिखाई दिया। स्थानीय निवासी अब्दुल्ला हिमेद ने कहा, मेरे बच्चे रोने लगे। धूल, टूटे शीशे और मलबे के कारण मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इस बीच, समूह इस्लामिक जिहाद ने कहा है कि वह तभी संघर्षविराम का पालन करेगा, जब इजराइल उसके लड़ाकों को निशाना बनाकर हत्याएं रोकने पर सहमत होगा।

एशियाई अमेरिकी मतदाता इस समुदाय की असल ताक्त दर्शाते हैं: जयपाल

वाशिंगटन। भारतीय अमेरिकी कांग्रेस सदस्य प्रमिला जयपाल ने कहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और जॉर्जिया में सीनेटर राफेल वारनॉक की जीत में एशियाई अमेरिकियों के वोट की भूमिका समुदाय की असली ताकत को प्रदर्शित करती है। डेमोक्रेटिक पार्टी की सदस्य प्रमिला (57) पहली दक्षिण एशियाई अमेरिकी महिला हैं जो अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की सदस्य हैं। उन्होंने कहा कि वारनॉक की बड़ी जीत में एशियाई अमेरिकियों, हवाई मूल के लोगों और प्रशांत द्वीपीय क्षेत्र के लोगों (एएएनएचपीआई) के मतदाताओं की बड़ी भूमिका रही जो किसी अन्य भौगोलिक क्षेत्र की तुलना में अधिक संख्या में उमड़े, वहीं एएएनएचपीआई मतदाताओं ने बाइडन बड़ी जीत में भी इसी तरह योगदान दिया। जॉर्जिया में मतदान करने वाले लोगों की संख्या साबित करती है कि इस क्षेत्र में हम जिस राजनीतिक शक्ति को आकार दे रहे हैं, वह वास्तविक, दीर्घकालिक है। आज हमारे पास अद्भुत नेता हैं, लेकिन आगे हर स्तर पर एएएनएचपीआई समर्थक और भी नेता होंगे।

जर्मनी के रिहायशी इमारत में धमाके से 12 लोग घायल : अधिकारी

बर्लिन। पश्चिमी जर्मनी में बृहस्पतिवार को एक रिहाइशी इमारत में हुए धमाके में कम से कम एक दर्जन लोग घायल हुए हैं जिनमें से कुछ की हालत गंभीर है। एक वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी ने यह जानकारी दी। नार्थ राइन वेस्टफेलिया के आंतरिक मामलों के मंत्री हेबर्ट रायल ने क्षेत्रीय विधायिका को बताया कि रांटिगन स्थित बहुमंजिला इमारत में हुए धमाके में 10 दमकल कर्मी और दो पुलिस अधिकारी घायल हुए हैं। रायल ने बताया कि दो निवासियों की संदिग्ध गतिविधियों की सुबह सूचना मिली थी जिसके बाद दमकल कर्मी व पुलिस कर्मी मौके पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि जब उन्होंने अपार्टमेंट का जबरन दरवाजा खोला तो एक व्यक्ति ने अज्ञात वस्तु का इस्तेमाल कर धमाका कर दिया। टेलीविजन चैनल द्वारा प्रसारित घटनास्थल की तस्वीरों में दिख रहा है कि पुलिस के निशानेबाज सड़क की दूसरी ओर मौजूद बिल्डिंग की बालकनी में तैनात हैं और इमारत की ऊपरी मंजिल से धुंआ निकल रहा है।

इटली: मिलान में ऑक्सीजन टैंक ले जा रही वैन में धमाका, चालक घायल

भाषा। मिलान(इटली)

इटली के मिलान शहर में बृहस्पतिवार को एक अस्पताल के लिए ऑक्सीजन टैंक ले जा रही वैन में धमाका हो गया, जिसकी वजह से नजदीकी नर्सरी स्कूल और रिहाइशी अपार्टमेंट के लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भेजना पड़ा। इटली की मीडिया ने यह जानकारी दी। मीडिया के मुताबिक इस हादसे में वैन का चालक मामूली रूप से घायल हुआ है। समाचार चैनल स्काई टीजी24 द्वारा प्रसारित तस्वीरों में दिख रहा है कि इटली की वित्तीय और फैशन राजधानी मिलान के मध्य हिस्से में स्थित पोर्टा रोमाना की तंग गलियों से काले रंग का धुंआ उठ रहा है और आग की लपटों ने नजदीक खड़ी कार और मोटरसाइकिल को अपनी चपेट में ले लिया है। तस्वीर में दिखाई दे रहा है कि स्कूल सहित नजदीकी

इमारतों की खिड़कियों के शीशे टूट गए हैं। अधिकारियों के मुताबिक दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पा लिया है। मौके पर मौजूद दमकल कर्मी कार्लो कार्डिनाली ने बताया कि वैन का चालक आग बुझाने के दौरान घायल हो गया है और उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है। आग लगने की वजहों की तत्काल जानकारी नहीं मिली है लेकिन कार्लो का कहना है कि तेजी से आग फैलने की वजह वैन में मौजूद ज्वलनशील सामग्री है व कानून प्रवर्तन एजेंसियां मामले की जांच कर रही हैं। मिलान के महापौर जुसेप्पे साला ने स्काई टीजी24 चैनल को बताया कि हादसे के समय नजदीक के प्राथमिक स्कूल और डे केयर परिसर में 200 से 300 बच्चे मौजूद थे जिन्हें बिना देरी किए सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया।

ट्रंप ने चुनावी झूठ का बचाव किया

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार रात एक विवादास्पद सीएनएन टाउन हॉल के दौरान, 2020 के चुनाव से जुड़े अपने झूठ का बचाव किया और छह जनवरी, 2021 को हुई हिंसा को बहुत महत्व नही दिया। इसके साथ ही ट्रंप ने उस महिला का बार-बार अपमान किया जिन्हे इस सप्ताह अदालत ने यौन शोषण और मानहानि को लेकर मुआवजे का हकदार करार दिया।

सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि मेरे मुवक्किल के पासपोर्ट संख्या A5380827 में उनका नाम हरीश चंदर मल्होत्रा लिखा है, लेकिन सही नाम हरीश मल्होत्रा है। ज्ञात रहे कि हरीश मल्होत्रा और हरीश चंदर मल्होत्रा, पुत्र श्री रोशन लाल मल्होत्रा निवासी बी–402, फखरुद्दीन मेमोरियल सी.जी.एच.एस. लिमिटेड, प्लॉट नंबर 18, सेक्टर–10, द्वारका, नई दिल्ली–110075 एक ही व्यक्ति हैं।

PREM PARKASH (ADVOCATE)
207, PLOT NO.1, CENTRAL MARKET, DWARKA, NEW DELHI -75 (M) 9871268399

PUBLIC NOTICE

Following share certificates of Jagan Nath Vasudeva (J. N. Vasudeva) and Sita Rani Vasudeva (Sita Rani) individually or jointly lost/misplaced. Oswal Greentech Folio No: 520070, Oswal Greentech Folio No: 517428 Oswal Greentech Folio No: 520081, Oswal Greentech Folio No: 520079 Oswal Greentech Folio No: 520069, ABB Folio No: J001143 GE Power Folio No: J0010715 Hitachi Energy Folio No: APS0154802 Kanpur Plastipacks Ltd Folio No: 13043 Finolex Industries Folio No: FIL 0000J0032256 Aditya Birla Capital Folio No: ABC0279257 Aditya Birla Capital Folio No: ABC0279263 Tata Coffee Folio No:CES0020470, SAB Industries Folio No: 549 UTI Mutual Fund Folio No: 50248130035, UTI MutualFund Folio No: 50248130046 UTI Leadership Equity Fund Folio No: 50244063953 Finder please contact Sanjay Vasudeva, C-2 (Ground Floor) Kalkaji, New Delhi-110019

दक्षिण अफ्रीका में सर्दियों की आहट

● घरों और खुद को गर्म तथा सुरक्षित रखने के कुछ उपाय

भाषा। जोहानिसबर्ग

कन्वरसेशन) अनुसंधानों से पता चलता है कि निसंदेह, दुनिया में गर्मी बढ़ रही है और वैश्विक औसत तापमान बढ़ते रहने से दुनिया के अधिकतर हिस्सों में गर्मी के मौसम की अवधि और तीव्रता बढ़ती जा रही है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि ठंड का मौसम पूरी तरह से गायब हो जाएगा। साल भर में अत्यधिक ठंड की घटनाएं लगातार कम और अपेक्षाकृत कम तीव्र होती जा रही हैं, जैसा कि आप एक गर्म दुनिया में उम्मीद करेंगे। वहीं अनुसंधानकर्ताओं का सुझाव है कि जलवायु प्रणाली जो असामान्य रूप से ठंड के मौसम को प्रभावित करती है, 21 वीं सदी में विश्व स्तर पर ठंड का कारण बनी रहेगी। जिस तरह हम गर्म दुनिया के लिए अभ्यस्त होते जा रहे हैं, हम इन सर्दियों के मौसम के कम आदी हो जाते हैं और इस तरह उसके प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। सर्दी के प्रभाव से शरीर का तापमान सामान्य से बहुत कम हो जाने (हाइपोथर्मिया) के साथ ही, शरीर के अंगों में गलन और श्वसन एवं हृदय संबंधी अन्य समस्याएं होती हैं। बेघर लोगों के लिए यह बात और सही साबित होती है जो हीटर जलाकर अपने घरों को गर्म नहीं कर सकते, बिजली से गर्म होने वाले कंबल का इस्तेमाल नहीं कर सकते। जब हम यह आलेख लिख रहे हैं तो दक्षिण अफ्रीका में सर्दियों की आहट हो चुकी है। देश में केपटाउन के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र में ठंड का पहला दौर असर दिखा रहा है और आसपास के क्षेत्रों में और इमारतों के अंदर ठंडक महसूस होने लगी है। तिस पर सर्दियों के मौसम में विद्युत ग्रिड पर अधिक दबाव बढ़ने से बिजली आपूर्ति में भी व्यवधान होता है क्योंकि लोग लंबे समय तक अंधेरे में रोशनी के लिए और गर्मी के लिए विद्युत उपकरणों

का इस्तेमाल करते हैं। दक्षिण अफ्रीका में अत्यधिक तापमान से जुड़े घटनाक्रम और तापमान पर शोध के बीच हम कुछ सलाह देना चाहते हैं कि सर्दियों के मौसम में राहत कैसे पाई जा सकती है। पर्यटकों के बीच दक्षिण अफ्रीका की छवि सामान्य तौर पर अधिक धूप वाले देश की है। गर्मियों और आसमान ज्यादातर साफ रहने से यह देश समुद्र तटों पर छुट्टियों के लिहाज से आदर्श माना जाता है। लेकिन इसकी सर्दियां भी बहुत ठिठुरन वाली हो सकती हैं। खासतौर पर ड्राकेन्सबर्ग-मालोटी और केप फोल्ड के पर्वतीय क्षेत्रों तथा उत्तरी प्रांत में सुदरलैंड जैसे शहरों में ठंड का प्रकोप दिखाई देता है।

इनमें निम्न तरीके शामिल हैं

जितना संभव हो, बाहर कम से कम रहे। अनुकूल परिधान पहने और हाइपोथर्मिया से बचने के लिए त्वचा को ढककर रखे। सर्दियो की शामो को गर्म रखने के लिए घरो की खिड़कियां बंद रखे और मोटे पर्दो का इस्तेमाल करे। दरवाजो और खिड़कियो और उनके फ्रेम के बीच अंतराल का पता लगाया जाए ताकि ठंड अंदर नही आ सके। शारीरिक गतिविधियो को बढ़ाया जाए। कुछ अतिरिक्त और मोटे कंबलो का इस्तेमाल किया जाए। बिजली की कटौती के ताजा कार्यक्रम की जानकारी रखे ताकि बिजली रहते हुए खाना पकाने जैसे जरूरी काम किए जा सकें। ताजा मौसम की जानकारी और चेतावनियो पर नजर रखी जाए।

सांकेतिक कब्जे की सूचना

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय :** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, प्लॉट नंबर– 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली– 110005

जबकि

अधोहस्ताक्षरी ने वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में तथा प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए नीचे वर्णित कर्ज़दारों को माँग सूचनाएँ निर्गमित की थीं, जिसमें उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर सूचना में वर्णित राशि का प्रतिभुगतान करने को कहा गया था।
कर्ज़दार/सह–कर्ज़दार/ज़मानतदार राशि का प्रतिभुगतान करने में विफल रहे हैं, अतएव एतद् द्वारा कर्ज़दार तथा जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि अधोहस्ताक्षरदाता द्वारा सांकेतिक अधिग्रहण किया गया है जो कि उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत नियम 8 में दर्शाया गया है। संपत्ति तथा अधिग्रहण की तिथि नीचे दर्शाई गई है। एतद् द्वारा विशेष रूप से कर्ज़दार एवं जनसाधारण को संपत्ति के संव्यवहार नहीं करने के लिए सचेत किया जाता है तथा संपत्ति के साथ कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभार के अधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार/ सह–कर्ज़दार का नाम/ ऋण खाता क्र.	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्जे की तिथि	डिमांड नोटिस की तिथि/ डिमांड नोटिस में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	मौमिता बागची/ मनोज कुमार/ LBDEL00004858033	फ्लैट नंबर ई– 204, द रोसेलिया, दूसरी मंज़िल, टॉवर ई, सेक्टर 95ए, हरियाणा, गुड़गांव (569.24 वर्ग फीट का क्षेत्रफल)/ मई 08, 2023	दिसम्बर 19, 2022 रु. 17,26,333/-	दिल्ली/ एनसीआर

उपरोक्त दर्शाए गए कर्ज़दार/सह–कर्ज़दार एवं ज़मानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो पूर्णत: नियम 8 और 9 प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।

दिनांक : मई 12, 2023
स्थान : दिल्ली/ एनसीआर

प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लि.

पायनियर
नई दिल्ली, शुक्रवार, 12 मई 2023

छत्तीसगढ़ शराब घोटाले में दो और गिरफ्तार

● ईडी ने होटल कारोबारी को पकड़ा, रायपुर के मेयर के भाई की हिरासत बढ़ी

भाषा। रायपुर, नई दिल्ली

प्रवर्तन निदेशालय ने छत्तीसगढ़ के धनशोधन मामले से जुड़े 2,000 करोड़ रुपए के कथित शराब सिंडिकेट घोटाले में एक और गिरफ्तारी की है। आधिकारिक सूत्रों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। राज्य की राजधानी रायपुर स्थित गिरिराज होटल के प्रवर्तक नितेश पुरोहित को बुधवार दोपहर को गिरफ्तार किया गया। एजेंसी ने पिछले सप्ताह रायपुर के महापौर एवं कांग्रेस नेता एजाज ढेबर के बड़े भाई अनवर ढेबर को गिरफ्तार किया था, जो इस मामले में की गई पहली गिरफ्तारी है। ऐसा बताया जा रहा है कि इस मामले में निदेशालय ने एक अन्य व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया है, जो राज्य का एक प्रमुख शराब कारोबारी है, लेकिन इस तीसरी गिरफ्तारी के संबंध में अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। एजेंसी ने बुधवार को अदालत से कहा कि पुरोहित अनवर ढेबर के अवैध कामों से अवगत थे और अनिल टुटेजा (छत्तीसगढ़ काडर के आईएएस अधिकारी) एवं एक अन्य व्यक्ति को अपराध से होने वाली आय के लेन-देन में स्वेच्छा से सहायता करते थे। सूत्रों ने बताया कि अनवर की चार दिन की हिरासत की अवधि समाप्त होने पर उन्हें बुधवार को रायपुर में एक विशेष धनशोधन निवारण कानून (पीएमएलए) अदालत के समक्ष पेश किया गया था, जिसने हिरासत पांच दिन के लिए और बढ़ा दी। अनवर के वकील राहुल त्यागी ने बुधवार को कहा कि अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश अजय सिंह राजपूत ने उनके मुवक्किल की हिरासत की अवधि पांच दिन बढ़ा दी है।

उन्होंने बताया कि अदालत ने जांच एजेंसी को निर्देश दिया कि आरोपी को किसी भी तरह से परेशान न किया जाए। उन्होंने बताया कि अदालत ने एजेंसी को यह भी निर्देश दिया कि आरोपी से की जाने वाली पूछताछ की ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग को सुरक्षित रखा जाए, ताकि यह पता लगाया जा सके कि आरोपी को किसी तरह से परेशान या प्रताड़ित तो नहीं किया गया।

त्यागी ने बताया कि अदालत ने उन्हें अपने मुवक्किल से रोजाना मिलने की अनुमति दी है। प्रवर्तन निदेशालय ने आरोप लगाया था कि छत्तीसगढ़ में बेची गई शराब की हर बोतल पर अवैध रूप से धन एकत्रित किया गया और अनवर ढेबर की अगुवाई वाले शराब सिंडिकेट द्वारा दो हजार करोड़ रुपए का भ्रष्टाचार और धनशोधन किए जाने के सबूत एकत्र किए गए हैं।

निदेशालय ने आरोप लगाया था कि उसने आयकर विभाग की ओर से भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी अनिल टुटेजा और अन्य के खिलाफ दिल्ली की एक अदालत में दायर आरोप पत्र के आधार पर धनशोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएएल) के तहत मामले की जांच के लिए पिछले साल एक मामला दर्ज किया था।

ईडी मुझे शराब घोटाले में फंसाने की कोशिश कर रही है : बघेल

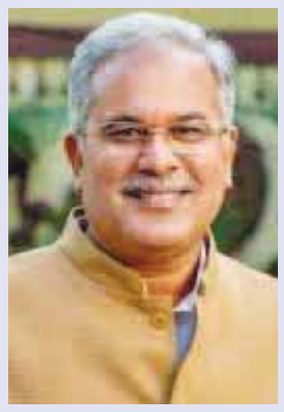

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि प्रवर्तन निदेशालय राज्य के कथित शराब घोटाले में उन्हें फंसाने की कोशिश कर रहा है। हेलीपैड पर संवाददाताओं से बातचीत में बघेल ने एक बार फिर कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एजेंट के रूप में काम कर रहा है। उन्होंने कहा, अभी तक हमलोगों ने बताया था कि ईडी भाजपा के एजेंट के रूप में काम कर रही है वह सही साबित हुआ है। झूठे केस बनाकर लोगों को डरा-धमका कर कथित आबकारी घोटाले में मेरा नाम डालने की कोशिश कर रहे हैं, इनका मूल उद्देश्य (बघेल नीत) सरकार को बदनाम करना है। बघेल ने कहा, भारतीय जनता पार्टी यहां टिक नहीं पा रही है तो ईडी का अपने अधीनस्थ संगठन की तरह दुरुपयोग कर रही है।

मुख्यमंत्री ने सवाल किया कि अगर डिस्टिलरों ने यहस्वीकार किया कि वे उत्पाद शुल्क दिए बगैर शराब बेच रहे हैं तो ईडी उनके खिलाफ कार्वाई क्यों नहीं कर रही है? उन्होंने कहा, ईडी मीडिया ट्रायल के तहत प्रेस विज्ञप्ति जारी कर रही है और उसमें यह भी कहा गया है कि डिस्टलर आबकारी शुल्क का भुगतान किए बगैर शराब बेच रहा है। अब सवाल यह उठता है कि बिना आबकारी शुल्क भरे यदि शराब बेच रहा है, तो क्या वह अपराधी गवाह बनेगा। सवाल यह भी है कि उनके खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं की गई? इसमें फायदा तो उन्हीं को मिला है और उन्होंने यह स्वीकार भी किया है। मुख्यमंत्री ने कहा, जिस प्रकार से मीडिया ट्रायल में जो बातें आई हैं तो उनके खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए। उनको कुछ कर नहीं रहे हैं। दूसरे लोगों को पकड़ रहे हैं। इसका मतलब यह है कि ईडी और डिस्टलरों के बीच या फिर डिस्टिलरों और भाजपा के बीच सांठगांठ हो चुकी है। बघेल ने कहा कि उपरोत तथ्य को संज्ञान में लेकर ही राज्य का एंटी करप्शन ब्यूरो कार्यवाही करेगा। मुख्यमंत्री ने कहा, हमारे राज्य में ईडी के अधिकारी पुलिस की तरह विवेचना कर रहे हैं। ईडी का यह कार्य संघीय ढांचे के मूल भावना के विपरीत है। ईडी के अधिकारियों द्वारा की गई समस्त अवैधानिक कार्यवाही को लेकर हम विधि विशेषज्ञों से सलाह मशविरा कर रहे हैं। जल्द ही समुचित कार्वाई करेंगें।

नीतीश कुमार के दाहिने हाथ रहे आरसीपी सिंह अब भाजपा में

नई दिल्ली। जनता दल-यूनाइटेड (जदयू) के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद सिंह उर्फ आरसीपी सिंह बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए। इस अवसर पर उन्होंने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर जमकर निशाना साधा और आरोप लगाया कि कुर्सी के मोह में वह अपराध और भ्रष्टाचार से समझौता कर रहे हैं। भाजपा मुख्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, पार्टी महासचिव अरुण सिंह और राज्यसभा सदस्य अनिल बलूनी की मौजूदगी में आरसीपी सिंह ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। कभी नीतीश कुमार के बेहद करीबियों में शुमार रहे आरसीपी सिंह ने पिछले साल अगस्त में जदयू से इस्तीफा दे दिया था। भाजपा से नजदीकियों के चलते जदयू ने उन्हें दोबारा राज्यसभा भी नहीं भेजा। इसके बाद उन्हें केंद्रीय मंत्री का पद भी गंवाना पड़ा था।

कुमार पर निशाना साधते हुए सिंह ने कहा, उन्हें अंग्रेजी के सी अक्षर से बहुत प्यार है। सी से क्राइम, करप्शन और चेयर यानी कुर्सी भी होता है। बिहार के मुख्यमंत्री को पलटू राम कहकर उनका मजाक उड़ाते हुए आरसीपी सिंह ने कहा, नीतीश पीएम थे, हैं और रहेंगे। पीएम यानी पलटू मार।

इस अवसर पर उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जमकर सराहना की और कहा कि उन्होंने गरीबों के लिए काम किया और देश को एक मजबूत नेतृत्व दिया है। सिंह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मंत्रिपरिषद के सदस्य रह चुके हैं। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार इन दिनों दावा करते फिर रहे हैं कि देश में कोई विकास नहीं हुआ है। उन्होंने कहा, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि काम नहीं हो रहा है तो भारत ऐसे ही दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया? मैंने उन्हें कई बार आईना दिखाने की कोशिश की।

उन्होंने कहा कि मोदी के नेतृत्व में देश कहां से कहां पहुंच गया जबकि बिहार आज भी वहीं है। उन्होंने कहा, बिहार में 2005 से पहले कानून-व्यवस्था की जो स्थिति थी, उससे भी बुरी स्थिति आज है। जदयू छोड़ने के बाद से ही आरसीपी सिंह के भाजपा में जाने के कयास लगाए जा रहे थे। वह कुर्मी समाज से आते हैं। कुर्मी मतदाता नीतीश कुमार के समर्थक माने जाते हैं क्योंकि वह खुद भी इसी समाज से ताल्लुक रखते हैं। भाजपा में शामिल होने को अपने लिए गौरव और गर्व का क्षण करार देते हुए सिंह ने नीतीश पर विपक्षी दलों को एकजुट करने के उनके प्रयासों के लिए भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि उन्हें जनादेश बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में काम करने का मिला है लेकिन वह एक राज्य से दूसरे राज्य का भ्रमण करने में व्यस्त हैं। उन्होंने सवाल किया नीतीश कुमार विपक्षी एकता की बात करते हैं लेकिन उसका नेता कौन है? उन्होंने कहा, बिना नेता के एकता होती है क्या? प्रधान ने इस मौके पर सिंह की तारीफ की और कहा कि उन्होंने जदयू को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई और अति पिछड़े वर्ग के बीच उनकी विश्वसनीयता है। उन्होंने कहा, भाजपा में जो काम संगठन महामंत्री करता है, वैसा ही काम सिंह ने जदयू के लिए किया। वह जदयू के संगठन की रीढ़ थे और पार्टी के पक्ष में अति पिछड़ों को संगठित करने में अहम भूमिका निभाई। सिंह एक नौकरशाह रह चके हैं और जब नीतीश कुमार केंद्र सरकार में मंत्री थे तब वह उनके अधीन काम कर चुके हैं।

गेहूं उत्पादन 11 करोड़ 21.8 लाख टन के अनुमान से हो सकता है पार

नई दिल्ली। खराब मौसम के कारण देश के कुछ हिस्सों में अनाज की गुणवत्ता प्रभावित होने के बावजूद प्रमुख उत्पादक राज्यों में फसल की पैदावार में संभावित उछाल की वजह से फसल वर्ष 2022-23 (जुलाई-जून) में भारत का गेहूं उत्पादन सरकार के रिकॉर्ड 11 करोड़ 21.8 लाख टन के अनुमान को पार कर सकता है। कृषि आयुक्त पी के सिंह ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। बेमौसम बारिश से हफ्तों पहले, सरकार ने फरवरी में जारी अपने दूसरे अनुमान में फसल वर्ष 2022-23 के लिए गेहूं उत्पादन 11 करोड़ 21.8 लाख टन होने की संभावना जताई थी।गेहूं उत्पादन का पिछला रिकॉर्ड फसल वर्ष 2020-21 में 10 करोड़ 95.9 लाख टन था।सिंह ने कहा, फसल की बेहतर पैदावार के कारण कुल मिलाकर गेहूं का उत्पादन 11.21 करोड़ टन के अनुमान को पार कर जाने की संभावना है। उन्होंने कहा कि पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में फसल की पैदावार में सुधार हुआ है, हालांकि मार्च-अप्रैल की अवधि में कटाई के चरण के दौरान बेमौसम बारिश से अनाज की चमक में कमी और अनाज में नमी की अधिकता के कारण नुकसान हुआ है। सिंह ने कहा कि जलवायु अनुकूल गेहूं की किस्मों के कारण पैदावार में सुधार हुआ है। इन किस्मों को सरकार पिछले पांच वर्षों में बढ़ावा दे रही है।

उन्होंने कहा कि हालांकि बेमौसम बारिश ने गेहूं उत्पादक राज्यों के कुछ हिस्सों में फसल को नुकसान पहुंचाया है, जिससे गुणवत्ता में कमी आई है, बारिश ने उन क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ने की संभावनाओं को बढ़ा दिया है जहां देर से बोई जाने वाली किस्मों को लगाया गया था। कुछ राज्यों में गर्मी की लू के कारण पिछले वर्ष में गेहूं का उत्पादन मामूली रूप से घटकर 10 करोड़ 77.4 लाख टन रहा था।

रेलवे ने अग्निवीर के लिए विभिन्न पदों पर आरक्षण, अन्य छूट देने का फैसला किया

नई दिल्ली। रेलवे ने सेना की अग्निपथ योजना के तहत सेवानिवृत्त अग्निवीरों को अपने विभिन्न विभागों के तहत सीधी भर्ती में अराजपत्रित पदों पर 15 प्रतिशत का आरक्षण प्रदान करने का फैसला किया है। साथ ही अग्निवीरों को आयु सीमा और शारीरिक दक्षता परीक्षा में भी छूट दी जाएगी। सूत्रों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) में भी अग्निवीरों के लिए एक आरक्षण नीति विचाराधीन है। सूत्रों ने बताया कि रेलवे अग्निवीरों को लेवल-1 और लेवल-2 के पदों पर क्रमश: 10 प्रतिशत और पांच प्रतिशत होरिजोंटल आरक्षण प्रदान करेगा। अग्निवीरों को शारीरिक दक्षता परीक्षा और आयु में छूट दी जाएगी। अग्निवीर के पहले बैच को तय आयु सीमा से पांच साल जबकि बाद के बैच को तीन साल की छूट दी जाएगी। सूत्रों ने बताया कि रेलवे बोर्ड ने सभी महाप्रबंधकों को जारी पत्र में विभिन्न रेलवे भर्ती एजेंसी को इन छूट का लाभ देने को कहा है।

क्विक न्यूज

कोटा में एक और छात्र ने आत्महत्या की, इस साल अब तक सातवीं मौत

कोटा (राजस्थान)। राजस्थान के कोटा में कोचिंग ले रहे 15 वर्षीय नीट परीक्षार्थी का शव उसके कमरे में लगे पंखे से लटका मिला है। कोचिंग हब कोटा में पिछले चार दिनों में संदिग्ध आत्महत्या का यह दूसरा मामला है। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के खुर्जा कस्बे के रहने वाले धनेश कुमार शर्मा को कुन्हारी इलाके के लैंडमार्क सिटी में स्थित उसके हॉस्टल के वार्डन ने मृत पाया। धनेश 11 वी कक्षा का छात्र था और एक महीने पहले ही कोटा आया था और एक कोचिंग सेंटर में राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (नीट-यूजी) की तैयारी कर रहा था। कुन्हारी के एसएचओ गंगा सहाय शर्मा ने कहा कि छात्र ने बुधवार की रात को खाना खाया और 110 नंबर के अपने कमरे में चला गया।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव में रिकॉर्ड 73.19 प्रतिशत मतदान हुआ

बेंगलुरु। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में 73.19 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। निर्वाचन अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को अंतिम आंकड़े साझा करते हुआ इसे रिकॉर्ड मतदान बताया। राज्य में 224 विधानसभा सीटों के लिए बुधवार को वोट डाले गए। कर्नाटक के मुख्य निर्वाचन कार्यालय (सीईओ) ने कहा, कर्नाटक ने अपने लिए एक नया रिकॉर्ड बनाया है। कर्नाटक विधानसभा चुनाव 2023 के लिए अंतिम मतदान 73.19 प्रतिशत दर्ज किया गया। चिक्कबल्लापुरा जिले में सबसे अधिक 85.56 प्रतिशत मतदान हुआ, इसके बाद बेंगलुरु ग्रामीण में 85.08 प्रतिशत मतदान हुआ, जबकि राज्य में सबसे कम 52.33 प्रतिशत मतदान बृहत बेंगलुरु महानगर पालिके (बीबीएमपी) दक्षिण सीमा (बेंगलुरु शहर के कुछ हिस्सों) में दर्ज किया गया।

पुंछ में दुर्घटनावश गोली चलने से जवान की मौत

पुंछ/जम्मू। जम्मू कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर हथियार से दुर्घटनावश गोली चलने की घटना में एक जवान शहीद हो गया। घटना कृष्णा घाटी सेक्टर में उस समय हुई जब लांस नायक जसबीर सिंह की रायफल से दुर्घटनावश गोली चल गई। सिंह को अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची और सभी कानूनी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद शव को अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया।

महिलाओं को हाइजीन पर किया जागरुक

नई दिल्ली। रामपुर में सफल साझेदारी के बाद रेडिको खेतान ने उत्तर प्रदेश के सीतापुर ज़िले में महिलाओं के लिए एक और सफल हेल्थ और हाइजीन जागरुकता शिविर के आयोजन के लिए शीविग्स फाउन्डेशन के साथ साझेदारी की। इस मौके पर माहवारी के दौरान हाइजीन के बारे में महिलाओं को जागरुक बनाने के लिए कई इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए गए उन्हें माहवारी से जुड़ी गलत अवधारणाओं के बारे में बताया गयाए साथ ही सैनिटरी नैपकिन भी बांटे गए। महिलाओं को माहवारी से जुड़ी गलत अवधारणाओं के बारे में जानकारी देनाए हाइजीन का महत्व समझाना इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य थाए ताकि लड़कियों और महिलाओं को अपने स्वास्थ्य के बारे में खुलकर बात करने के लिए प्रेरित किया जा सके। शीविग्स ने सीतापुर ज़िले में सैनिटरी नैपकिन भी वितरित किए। 8 मई को सीतापुर के इलिसया स्थित बाल वन उद्यान में आयोजित इस कार्यक्रम की शुरूआत श्रीमती सविता सिंह लखनऊ में एक प्रतिष्ठित इंटर कॉलेज की पूर्व प्रधानाध्यापिका और वरिष्ठ शिक्षकद्ध द्वारा स्वागत संबोधन के साथ हुई। इस मौके पर मिस रेखाए वरिष्ठ महिला सशक्तीकरण कार्यकर्ता भाजपा, मिस पूजा चौधरी, ग्राम प्रधान, सीतापुर और डॉ डी एम शुक्ला डीएफओ सीतापुर भी मौजूद थे। ग्राम प्रधान मिस पूजा चौधरी ने माहवारी के दौरान सफाई के महत्व पर ज़ोर दिया, उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए माहवारी के दौरान हाइजीन का विशेष ख्याल रखना चाहिए।

व्हाट्सऐप से मिलेगा ऋण

नई दिल्ली। अब लोग व्हाट्सऐप पर ऋण प्राप्त कर सकेंगे। आईआईएफएल फाइनेंस 10 लाख रु. तक का बिजनेस लोन देगा। एमएसएमई लेंडिंग उद्योग में अपनी तरह का पहला अभियान है, जहाँ लोन के आवेदन से डिस्बर्सल तक का पूरा काम 100 फीसदी डिजिटल होता है। भारत में व्हाट्सऐप के 450 मिलियन से ज्यादा ग्राहक आईआईएफएल फाईनेंस से 24/7 एंड-टू-एंड डिजिटल लोन की सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। आईआईएफएल फाईनेंस भारत में सबसे बड़े रिटेल-केंद्रित एनबीएफसी में से एक है, जिसके पास 10 मिलियन से ज्यादा ग्राहक हैं, जो अधिकांशतः बैंक सेवाओं से वंचित या बैंक सेवाओं की कमी वाले हैं। आईआईएफएल फाईनेंस भारत में छोटे उद्यमियों का लोन लेने के लिए पसंदीदा संस्थान है। व्हाट्सऐप के यूजर्स 9019702184 पर "हाय" लिखकर भेजकर व्हाट्सऐप पर आईआईएफएल फाईनेंस से लोन लेने की प्रक्रिया शुरू कर सकते हैं। उन्हें आवश्यक पेपरलेस प्रक्रिया पूरी करनी होगी और फंड तेजी से उनके खाते में आ जाएगा। हेड भरत अग्रवाल ने कहा, लोन के आवेदन और डिस्बर्सल की कठिन प्रक्रिया को व्हाट्सऐप पर आसान पेपरलेस प्रक्रिया द्वारा आसान बना दिया है। छोटे उद्यमियों पर केंद्रित होकर हमने व्हाट्सऐप उत्पाद पर यह अभिनव इंस्टैंट बिजनेस लोन शुरू किया है।

एनआईए ने मुंबई में छह स्थान पर छापे मारे

मुंबई। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने ठाणे से जाली नोट जब्ती के मामले में मुंबई में छह स्थानों पर तलाशी ली और आपत्तिजनक सामग्री जब्त की। एनआईए ने बृहस्पतिवार को एक बयान में कहा कि जाली नोट बांटे जाने में प्रथम दृष्टया डी कंपनी की भूमिका साबित हुई है। ठाणे पुलिस की अपराध शाखा ने नवंबर 2021 में 2.98 लाख रुपए मूल्य के जाली नोट जब्त किए थे। डी-कंपनी भगोड़े कुख्यात अपराधी और 1993 के मुंबई बम विस्फोट मामले के मुख्य आरोपी दाऊद इब्राहिम से जुड़े गिरोह को कहा जाता है। बयान के अनुसार, एनआईए की मुंबई शाखा के दल ने बुधवार को अनेक परिसरों पर छापे मारे थे जिनमें आरोपियों और संदिग्धों के घर और कार्यालय शामिल हैं। बयान में कहा गया कि जब्त की गई सामग्री में धारदार हथियार, डिजिटल उपकरण और दस्तावेज आदि शामिल हैं। इसमें कहा गया कि ए सामग्री जाली नोटों से जुड़े गिरोह से डी-कंपनी के सीधे तार जुड़े होने की बात साबित करने वाले एनआईए के पहले के निष्कर्षों की पुष्टि करती है। मामला 2,000 रुपए मूल्य के जाली भारतीय नोटों की जब्ती से जुड़ा है। एनआईए ने कहा कि महाराष्ट्र के ठाणे शहर में नौपाड़ा थाने में 18 नवंबर, 2021 को मूल रूप से दर्ज मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया था। उन्हें गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम और भारतीय दंड संहिता के संबंधित प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया गया। आरोपियों की पहचान रियाज और नासिर के रूप में हुई थी। दोनों मुंबई के रहने वाले हैं और इस समय न्यायिक हिरासत में हैं। ठाणे पुलिस ने तलाशी ली थी और आरोपियों के खिलाफ आरोपपत्र दायर किया था। इस मामले में एनआईए ने जांच संभाली थी और सात फरवरी, 2023 को मामला पुन: दर्ज किया था।

मुंबई में एनसीपी अध्यक्ष शरद पवार से मुलाकात करते व सुप्रिया सुले को गुलदस्ता भेंट करते हुए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार।

केरल में पुरोहिताई कर पुरुषों का वर्चस्व तोड़ रहीं मां-बेटी

त्रिशूर (केरल)। केरल में 24 वर्षीय ज्योत्सना पद्मनाभन और उनकी मां अर्चना कुमारी पुरोहिताई तथा तांत्रिक अनुष्ठान में सदियों पुराने पुरुष वर्चस्व की दीवारें तोड़कर खामोशी के साथ एक नया इतिहास रच रही हैं। दोनों महिलाएं केरल के त्रिशूर जिले में एक मंदिर में कुछ वक्त से पुरोहित की भूमिकाएं निभा रही हैं और पड़ोसी मंदिरों तथा अन्य स्थलों पर तांत्रिक अनुष्ठान कर रही हैं जिसे आम तौर पर पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता है। 47 वर्षीय अर्चना और उनकी बेटी अपनी पुरोहिताई को लैंगिक समानता की कोई पहल या समाज में व्याप्त लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने की कोशिश करार नहीं देती। कट्टूर के थरनेल्लूर थेक्किनएदातु माना के एक ब्राह्मण परिवार से आने वाली ज्योत्सना तथा अर्चना ने एक सुर में कहा कि वे समाज में कुछ साबित करने के लिए नहीं बल्कि अपनी भक्ति के कारण पुरोहिताई करने लगीं।

इसरो ने सेमी क्रायोजेनिक इंजन का सफल परीक्षण किया

भाषा। बेंगलुरु

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अपने सेमी क्रायोजेनिक इंजन का सफल परीक्षण किया है जिनका इस्तेमाल भविष्य में प्रक्षेपण यानों में होगा। बेंगलुरु स्थित इसरो के मुख्यालय से जारी बयान में कहा गया कि तमिलनाडु के महेंद्रगिरी के इसरो प्रोपल्सन कॉप्लेक्स (आईपीसीआर) में हाल में स्थापित सेमी क्रोयोजेनिक इंटीग्रेटेड इंजन ऐंड स्टेट टेस्ट फैसिलिटी में बुधवार को 2000 किलोन्यूटन ताकत वाले सेमी क्रायोजेनिक इंजन का मध्यवर्ती विन्यास पर पहला एकीकृत परीक्षण किया गया। यह 2000 किलोन्यूटन बल का इंजन विकसित करने की दिशा में पहला कदम है जो तरल ऑक्सीजन (एलओएक्स) और किरोसिन प्रणोदक के समिश्रण से काम करेगा जिसका इस्तेमाल भविष्य के प्रक्षेपण यानों में किया जाएगा। मध्यवर्ती विन्यास, जिसे पावर हेड टेस्ट आर्टिकल (पीएचटीए) नाम दिया गया है में, थ्रस्ट चैंबर को छोड़कर सभी इंजन प्रणाली होती है। बयान के मुताबिक यह कम दबाव और उच्च दबाव वाले टर्बो-पंप, गैस जनरेटर और नियंत्रण घटकों सहित प्रणोदक फीड प्रणाली के डिजाइन को परखने के लिए कई परीक्षण किए जाएंगे जिनमें से यह पहला था। इसरो ने बताया कि परीक्षण 15 घंटे तक चला और इस अवधि में इंजन ने शुरू होने के बाद से सभी मानकों को सफलतापूर्वक पूरा किया। एलओएक्स सर्किट के ठंडा होने के बाद, किरोसिन का फीड सर्किट भरा गया था, और एलओएक्स को इंजेक्शन वाल्व खोलकर गैस जनरेटर में प्रवेश कराया गया था। यह सफल परीक्षण आगे के परीक्षणों की श्रृंखला में मददगार साबित होगा।

एक्जिट पोल परिणामों से भाजपा, कांग्रेस की धड़कनें तेज

● जदएस को त्रिशंकु विधानसभा की उम्मीद

बेंगलुरु। कर्नाटक में विधानसभा चुनाव में ज्यादातर एक्जिट पोल में कांग्रेस और भाजपा के बीच कड़ी टक्कर का अनुमान जताए जाने के बीच नतीजों को लेकर दोनों दलों के नेताओं की धड़कने तेज गई हैं जबकि जनता दल (सेक्युलर) त्रिशंकु जनादेश की उम्मीद कर रहा है ताकि वह सरकार गठन में अहम भूमिका निभा सके। मतदान बाद आए अधिकांश सर्वेक्षणों में सत्तारूढ़ भाजपा पर कांग्रेस को बढ़त दिखाई गई है और राज्य में त्रिशंकु विधानसभा की संभावना जताई गई है। राज्य की 224 सदस्यीय विधानसभा के लिए मतों की गिनती 13 मई को होगी। राजनीतिक नेताओं को कई सप्ताह के प्रचार और बुधवार को हुए मतदान के बाद आखिरकार बृहस्पतिवार को कुछ आराम करने का मौका मिला।

दोनों राष्ट्रीय दलों के सूत्रों ने कहा कि उन्हें अपनी पार्टी के आसानी से जीतने का भरोसा है, लेकिन एग्जिट पोल ने निश्चित रूप से उन्हें एक हद तक चिंतित कर दिया है।

कोई नहीं चाहता कि इस बार भी 2018 जैसी स्थिति सामने आए। त्रिशंकु जनादेश की स्थिति में जद (एस) महत्वपूर्ण कारक होगा और 2018 की तरह वह किंग या किंगमेकर के रूप में उभर सकता है। खंडित जनादेश की स्थिति में गठबंधन सरकार के गठन की कुंजी रखने वाले पार्टी जद (एस) के नेता एच डी कुमारस्वामी स्वास्थ्य जांच के लिए सिंगापुर रवाना हो गए हैं और मतगणना के दिन वापस आ जाएंगे। जद (एस) नेता को चुनाव प्रचार के दौरान थकावट और कमजोरी के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जद (एस) के एक नेता ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, निश्चित तौर पर त्रिशंकु जनादेश का परिदृश्य है और जद (एस) की सक्रिय भूमिका के साथ गठबंधन सरकार की प्रबल संभावना है। परिणामों को औपचारिक रूप से सामने आने दें। उसके बाद चीजें सामने आएंगी कि कौन क्या भूमिका निभाएगा। साल 2018 के पिछले विधानसभा चुनावों में भाजपा 104 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी। इसके बाद कांग्रेस 80 सीटें और जद (एस) 37 सीटें जीतकर क्रमश: दूसरे और तीसरे स्थान पर रहीं। एक निर्दलीय सदस्य भी था, जबकि बसपा और कर्नाटक प्रज्ञावंत जनता पार्टी (केपीजेपी) के एक-एक सदस्य निर्वाचित हुए थे। तब किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने और कांग्रेस तथा जद (एस) के गठबंधन करने की कोशिश के बीच सबसे बड़ी पार्टी भाजपा ने सरकार बनाने का दावा पेश किया और वरिष्ठ नेता बी एस एदियुरप्पा के नेतृत्व में सरकार बनी हालांकि, विश्वास मत से पहले तीन दिनों के भीतर ही उनकी सरकार गिर गई। क्योंकि एदियुरप्पा आवश्यक संख्या नहीं जुटा सके थे।

कांग्रेस-जद (एस) गठबंधन ने सरकार बनाई और कुमारस्वामी मुख्यमंत्री बने। लेकिन 14 महीनों के भीतर ही यह सरकार भी गिर गई। क्योंकि 17 विधायकों ने इस्तीफा दे दिया और वे सत्तारूढ़ गठबंधन से बाहर आ गए। बाद में सभी भाजपा में शामिल हो गए और पार्टी की सत्ता में वापसी में मदद की। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव और कर्नाटक के प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला ने कांग्रेस विधायक दल के नेता सिद्धरमैया से यहां उनके आवास पर मुलाकात की और चर्चा की।

मुख्यमंत्री बोम्मई एग्जिट पोल को खारिज करते हुए भाजपा की आसान जीत को लेकर आश्वस्त दिखे। पिछली बार कर्नाटक चुनाव के दौरान एग्जिट पोल में कांग्रेस को 107 और भाजपा को 80 सीटें मिलने का अनुमान जताया गया था, वास्तव में यह उल्टा था। भाजपा को 104 और कांग्रेस को 80 सीटें मिली थीं। एग्जिट पोल के बारे में ऐसे कई उदाहरण हैं और यह एक बार फिर दोहराया जाएगा। यह पूछे जाने पर कि क्या पार्टी 150 सीटें जीतने के अपने लक्ष्य को हासिल करेगी, बोम्मई ने कहा कि मोदी का प्रचार अभियान भाजपा के लिए एक बड़ा कारगर था और इसका युवाओं और महिला मतदाताओं के बीच व्यापक प्रभाव पड़ा। मैंने 150 नहीं कहा है, मैं कहता रहा हूं कि भाजपा को पूर्ण बहुमत मिलेगा और हमें यह मिलेगा।

एचडी कुमारस्वामी स्वास्थ्य जांच के लिए सिंगापुर गए

बेंगलुरु। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एच डी कुमारस्वामी स्वास्थ्य जांच के लिए बृहस्पतिवार को सिंगापुर के लिए रवाना हुए। जनता दल (एस) के वरिष्ठ नेता को विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान थकान और कमजोरी के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, पूर्व प्रधानमंत्री एच डी देवेगौड़ा के बेटे कुमारस्वामी अपने निजी सहायक और कुछ अन्य लोगों के साथ सिंगापुर के लिए रवाना हुए हैं और वह शनिवार की सुबह वापस आएंगे। प्रदेश की 224 सदस्यीय विधानसभा के लिए बुधवार को मतदान हुआ और मतों की गिनती शनिवार को होगी।

चहल व जायसवाल ने दिलाई रॉयल्स को शाही जीत

● नाइटराइडर्स को 9 विकेट से रौंदा

भाषा। कोलकाता

आईपीएल में सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज बने युजवेंद्र चहल के चार विकेट के बाद टूर्नामेंट का सबसे तेज अर्धशतक जड़ने वाले यशस्वी जायसवाल की 47 गेंद में 98 रन की नाबाद पारी की मदद से राजस्थान रॉयल्स ने बृहस्पतिवार को कोलकाता नाइट राइडर्स को नौ विकेट से हरा दिया। टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन का फैसला सही साबित हुआ और उनके गेंदबाजों ने कोलकाता नाइट राइडर्स को आठ विकेट पर 149 रन पर रोक दिया। जवाब में रॉयल्स ने सिर्फ एक विकेट खोकर 13 .। ओवर में 151 रन बनाए। जायसवाल शतक से दो रन से चूक गए और 200 से ऊपर की स्ट्राइक रेट से खेलते हुए अपनी पारी में उन्होंने 12 चौके और पांच छक्के लगाए। उन्होंने आईपीएल के इतिहास का सबसे तेज अर्धशतक सिर्फ 13 गेंदों में लगाया। इससे पहले यह रिकॉर्ड केएल राहुल और पैट कमिंस के नाम था जिन्होंने 14 गेंद में पचासा पूरा किया था। कप्तान सैमसन ने उनका बखूबी साथ निभाते हुए 29 गेंद में नाबाद 48 रन बनाए जिसमें दो चौके और पांच छक्के शामिल थे। केकेआर के गेंदबाज एक भी विकेट नहीं ले सके और रॉयल्स का एकमात्र विकेट जोस बटलर (0) के रूप में गिरा जो रन आउट हुए थे। इस जीत के बाद अब रॉयल्स 12 मैचों में 12 अंक लेकर तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं जबकि केकेआर 12 मैचों में दस अंक लेकर दस टीमों में सातवें स्थान पर है और प्लेआफ की उसकी राह विकट हो गई है। इससे पहले चहल (187 विकेट) ने अपनी दूसरी ही गेंद पर केकेआर के कप्तान नितिश राणा को आउट करके ड्वेन ब्रावो (183) का रिकॉर्ड तोड़ा और आईपीएल के इतिहास में सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए। चहल ने बीच के ओवरों में तीन गेंद में दो विकेट लेकर केकेआर के लिए सर्वाधिक रन बनाने वाले वेंकटेश अय्यर (57) और शार्दुल ठाकुर (एक) को पवेलियन भेजा। उन्होंने चार ओवर में 25 रन देकर चार विकेट लिए। उन्होंने फॉर्म में चल रहे रिंकू सिंह (16) का भी विकेट लिया। इस सत्र में भी उनके सर्वाधिक 21 विकेट हो गए हैं। केकेआर के बल्लेबाजों ने अपने घरेलू दर्शकों को पूरी तरह निराश किया और अय्यर को छोड़कर कोई नहीं चल सका। अय्यर ने एक समय 12 गेंद पर दो रन बनाए थे लेकिन फिर हाथ खोलते हुए 39 गेंद में अर्धशतक पूरा किया। वह चहल की एक गेंद पर ट्रेंट बोल्ट को कैच देकर आउट हुए। आंद्रे रसेल पांचवें नंबर पर उतरे लेकिन दस गेंद में दस रन बनाकर केएम आसिफ की गेंद पर विकेट गंवा बैठे। नौ ओवर के बाद केकेआर का स्कोर दो विकेट पर 58 रन था। वेंकटेश ने इसके बाद आर अश्विन को दो छक्के लगाकर दबाव कम करने की कोशिश की। राणा ने इस ओवर की आखिरी गेंद पर छक्का लगाकर दस ओवर के बाद स्कोर 76 रन कर दिया। इससे पहले पावरप्ले के भीतर दो शानदार कैच से रॉयल्स ने दबाव बना लिया। पहले छह ओवर के बाद स्कोर दो विकेट पर 37 रन था। दोनों विकेट बोल्ट के ओवरों में गिरे जो वापसी वाले मैच में प्रभावी रहे और तीन ओवर में 15 रन देकर दो विकेट चटकाए। पहले शिमरोन हेटमाएर ने तीसरे ओवर में जैसन रॉय का शानदार कैच लपका। इसके बाद संदीप शर्मा ने बेहतरीन कैच लेकर पांचवें ओवर में रहमानुल्लाह गुरबाज को रवाना किया।

स्कोरबोर्ड

कोलकाता नाइट राइडर्स पारी : जैसन का हेटमाएर बो बोल्ट 10, गुरबाज का संदीप बो बोल्ट 18,अय्यर का बोल्ट बो चहल 57,राणा का हेटमाएर बो चहल 22,रसेल का अश्विन बो आसिफ 10, सिंह का रूट बो चहल 16,ठाकुर पगबाधा बो चहल।, रॉय नाबाद 6,नारायण का रूट बो संदीप 6, **अतिरिक्त** : तीन रन, **कुल योग** : 20 ओवर में आठ विकेट पर 149 रन, विकेट पतन :। . 14, 2 . 29, 3 . 77, 4 . 107, 5 . 127, 6 . 129, 7 . 140, 8 . 149, **गेंदबाजी** : बोल्ट 3 . 0 . 15 . 2, संदीप4 . 0 . 34 .।,अश्विन 4 . 0 . 32 . 0,रूट2 . 0 . 14 . 0, चहल4 . 0 . 25 . 4, आसिफ3 . 0 . 27 .।

राजस्थान रॉयल्स पारी : यशस्वी नाबाद 98,बटलर रन आउट 0,सैमसन नाबाद 48, **अतिरिक्त** : पांच रन, कुल योग : 13.1 ओवर मे एक विकेट पर 151 रन, **विकेट पतन** :।-30, **गेंदबाजी** : राणा । - 0 -26- 0, हर्षित 2-0 -22-0, ठाकुर 1.1-0 -18- 0,चक्रवर्ती 3-0-28 - 0,नारायण 2- 0-18- 0, शर्मा ,3- 0-22-0, अनुकूल । -0-20-0

आईपीएल-16 स्टेडियम से

तेंदुलकर का रिकॉर्ड तोड़ना मेरे लिए भावनात्मक पल होगाः कोहली

नई दिल्ली। भारत के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने स्वीकार किया है कि सचिन तेंदुलकर के 49 एकदिवसीय शतकों के रिकॉर्ड को तोड़ना वास्तव में उनके लिए एक भावनात्मक क्षण होगा। कोहली ने हालांकि 274 एकदिवसीय मैचो मे 46 शतक जड़ दिए है। यह 34 साल का बल्लेबाज तीन और शतक के साथ अपने बचपन के आदर्श खिलाड़ी की बराबरी कर लेगा।कोहली से इस मुकाम तक पहुंचने के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने तुरंत कहा, यह मेरे लिए बहुत ही भावुक क्षण होगा। कोहली, युवराज सिंह, एमसी मेरीकॉम, सुनील छेत्री, हरमनप्रीत कौर और पैरा-एथलीट अवनि लेखरा के साथ खेल परिधान एवं सामग्री बनाने वाली कंपनी प्यूमा ने डिजनी प्लस हॉटस्टर के साथ मिलकर छह-भाग वाली वृत्तचित्र श्रृंखला तैयार की है। इसमें इन खिलाड़ियों के जीवन यात्रा के साथ फिटनेस से जुड़े पहलुओ को शामिल किया गया है।

युवा धोनी की तरह हैं संजू सैमसनः स्वान

नई दिल्ली। इंग्लैड के पूर्व स्पिनर ग्रीम स्वान का मानना है कि राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन अपने धैर्य और खेल को पढ़ने की क्षमता के कारण दिग्गज महेंद्र सिंह धोनी के युवा प्रारूप की तरह लगते है। सैमसन ने 11 मैच मे 154.77 के स्ट्राइक रेट से 308 रन बनाए है और अपने खिलाड़ियो का अच्छी तरह इस्तेमाल करते हुए टीम को प्ले ऑफ की दौड़ मे बनाए रखा है। स्वान ने विज्ञप्ति मे कहा, मुझे संजू के बारे मे जो चीज पसंद है वह यह है कि वह नेतृत्वकर्ता बन गया है और लगातार प्रदर्शन करने वाला सीनियर खिलाड़ी जिसके पास प्रतिभा है। इसका सामना कीजिए, चार या पांच साल पहले, सभी को पता था कि वह कितना अच्छा है लेकिन वह छह से सात मैचो मे कुछ नही करता था और फिर शानदार पारी खेलता था। मुझे लगता है कि वह राजस्थान के लिए लगभग श्रीमान भरोसेमंद बन गया है। और वह बहुत शांत है, वह बहुत आश्वस्त है, मुझे लगता है कि अपनी कप्तानी के साथ वह युवा महेंद्र सिंह धोनी की तरह है। वह धैर्य नही खोता और उसे पता रहता है कि क्या चल रहा है और वह खेल को अच्छी तरह पढ़ता है।

रिंकू सिंह भारतीय टीम में जगह बनाने से बहुत दूर नहीः हरभजन

नई दिल्ली। पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह को उम्मीद है कि इंडियन प्रीमियर लीग के मौजूदा टूर्नामेंट मे शानदार प्रदर्शन के बाद कोलकाता नाइट राइडर्स के बाएं हाथ के बल्लेबाज रिंकू सिंह छोटे प्रारूप मे जल्द ही भारतीय टीम मे जगह बनाएंगे। बाएं हाथ के बल्लेबाज रिंकू ने 11 मैच मे 151 के स्ट्राइक रेट से 337 रन बनाकर खुद को फिनिशर के रूप मे स्थापित किया है। हरभजन ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा, भारतीय टीम की कैप (टीम के लिए पदार्पण) जल्द ही रिंकू के सिर पर होगी। वह प्रेरणादाई खिलाड़ी है। वह आज जहां है वहां पहुंचने के लिए उसने बेहद कड़ी मेहनत की है। अपने ऊपर यह विश्वास रखने के लिए उसे पूरा श्रेय जाता है। उसका यात्रा जीवन का एक सबक है और सभी युवा बच्चों को उससे सीखना चाहिए। एक अन्य पूर्व भारतीय क्रिकेटर मोहम्मद कैफ ने भी हरभजन के सुर मे सुर मिलाया। रिंकू सिंह मे वह परिपक्वता है। उसका फुटवर्क काफी अच्छा है और स्ट्राइक रोटेट करने की भी कोशिश करता है। रिंकू को पता है कि अपनी फॉर्म को अच्छी पारी मे कैसे बदलना है और उसे यह भी पता है कि जब तेजी दिखानी है। वह बड़े शॉट खेलने मे सक्षम है।

मुझे एंकर शब्द पसंद नहीं क्योंकि सभी खेल को अलग रवैए के साथ खेलते हैंः लिविंस्टोन

नई दिल्ली। लियाम लिविंगस्टोन को भले ही बड़े छक्के जड़ने की उनकी क्षमता के लिए पहचाना जाता हो लेकिन इंग्लैंड और पंजाब किंग्स के इस बल्लेबाज को नही लगता है कि टी20 क्रिकेट मे एंकर (एक छोर पर टिककर खेलने वाला बल्लेबाज) की भूमिका बेमानी हो गई है। लिविंगस्टोन को एंकर शब्द पसंद नही है लेकिन इस 29 वर्षीय बल्लेबाज का मानना है कि टीमो का बल्लेबाजी को लेकर रुख अलग होता है क्योंकि प्रतएक खिलाड़ी अलग रवैए के साथ खेलता है। दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच रिकी पोंटिग ने हाल मे कहा था कि सबसे छोटे प्रारूप मे एंकर की भूमिका संभवतः खत्म हो रही है। अब चोटिल हो चुके लोकेश राहुल और पूर्व भारतीय कप्तान विराट कोहली के मौजूदा आईपीएल मे रवैए पर सवाल उठे है जिन्होंने आक्रामक खेल दिखाने की जगह एक छोर पर टिककर रन बनाने की रणनीति के अनुसार बल्लेबाजी की। यह पूछे जाने पर कि क्या टी20 क्रिकेट मे एंकर की भूमिका बेमानी हो गई है, लिविंगस्टोन ने पीटीआई से कहा, यह प्रतएक टीम पर निर्भर करता है, सभी लोग अलग तरह से खेलते हैं। प्रतएक टीम मे अलग-अलग खिलाड़ी होते है और यह इस पर निर्भर करता है कि खिलाड़ी की टीम मे क्या भूमिका है। पिछले साल आईपीएल मे अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले लिविंगस्टोन घुटने की चोट के रिहैबिलिटेशन के कारण मौजूदा सत्र मे देर से पंजाब किंग्स के साथ जुड़े।

एनएचआरसी ने खेल मंत्रालय को नोटिस जारी किया

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) और चार अन्य खेल निकायो मे यौन उत्पीड़न के आरोपो से निपटने के लिए आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) की गैरमौजूदगी पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने गुरुवार को युवा मामलो और खेल मंत्रालय को नोटिस जारी किया। एनएचआरसी ने भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ), भारतीय क्रिकेट बोर्ड , भारतीय कुश्ती महासंघ और कई अन्य राष्ट्रीय खेल संघो को उन रिपोर्टो पर नोटिस भेजा है जिनमे कहा गया है कि उनके पास कानून के मुताबिक शिकायत की कोई आंतरिक समिति नही है और कुछ के पास समिति है तो वह उचित तरीके से काम नही कर रही है।

फुलटन को दबाव में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की उम्मीद

बेंगलुरु भारतीय पुरुष हॉकी टीम के मुख्य कोच क्रेग फुलटन को अपनी नई जिम्मेदारी से जुड़े भारी दबाव के बारे में अच्छी तरह पता है लेकिन दक्षिण अफ्रीका के इस पूर्व खिलाड़ी का मानना है कि इससे उन्हे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने मे मदद मिलेगी। फुलटन ने एक पखवाड़े पहले ऑस्ट्रेलिया के ग्राहम रीड की जगह भारतीय पुरुष टीम की कमान संभाली है। उनकी पहली चुनौती 26 मई से ब्रिटेन मे खेले जाने वाले प्रो लीग के मैच होगे। हॉकी इंडिया से जारी विज्ञप्ति मे फुलटन ने कहा, मै समझता हूं कि प्रदर्शन करने का दबाव होगा, जाहिर तौर पर प्रशंसको, मीडिया और खुद टीम को मुझ से उम्मीदे होगी।

जियो पर आईपीएल को 1300 करोड़ से अधिक बार देखा गया

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के मौजूदा सत्र के शुरुआती पांच हफ्तो मे इस लुभावने टी20 टूर्नामेंट को इसके डिजिटल स्ट्रीमिंग साझेदार जियो सिनेमा की ऐप पर 1300 करोड़ से अधिक बार देखा गया है। जियो सिनेमा ऐप पर इस दौरान प्रति दर्शक औसत समय 60 मिनट तक पहुंच गया। जियो सिनेमा पर इस बीच पांच दिन मे दो बार सर्वाधिक दर्शको का आईपीएल रिकॉर्ड भी टूटा।

अंडर-23, अंडर-17 कुश्ती चयन ट्रायल के नियमों को अंतिम रूप दिया गया

नई दिल्ली। एशियाई कुश्ती चैम्पियनशिप 2023 मे भाग लेने वाली अंडर-23 और अंडर-17 भारतीय टीमो को चुनने के लिए आयोजित होने वाले चयन ट्रायल के नियमो को अंतिम रूप दे दिया गया है। यह जानकारी गुरुवार को देश मे कुश्ती के संचालन के लिए भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) द्वारा गठित तदर्थ समिति ने दी। इस संबंध मे भूपेंद्र सिंह बाजवा की अध्यक्षता मे बैठक आयोजित की गई। समिति की ओर से जारी विज्ञप्ति के मुताबिक, अंडर-23 और अंडर- 17 एशियाई कुश्ती चैपियनशिप 2023 मे भाग लेने के लिए भारतीय कुश्ती टीमो के चयन के लिए चयन ट्रायल आयोजित से जुड़े नियमो और कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया गया है।

मेजबानी नहीं मिलने पर एसीसी छोड़ देगा पाकिस्तान

कराची। पाकिस्तान मे एशिया कप के कुछ मैचो की मेजबानी करने को व्याकुल पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड अब एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) को उसे पहले दौर के चार मैचो की मेजबानी देने के लिए मना रहा है वरना वह एसीसी से बाहर निकल जाएगा। पीसीबी अध्यक्ष नजम सेठी का हाइब्रिड मॉडल अन्य सदस्य देशो ने खारिज कर दिया जिसके तहत पाकिस्तान भारत के खिलाफ मैचो के अलावा अपने घरेलू मैच अपने देश मे ही खेलता। पीसीबी ने एशिया कप श्रीलंका मे कराने का प्रस्ताव खारिज कर दिया। एक विश्वस्त सूत्र ने बताया , नजम सेठी ने हाइब्रिड मॉडल के प्लान बी के तहत दुबई मे इस सप्ताह एसीसी के सामने प्रस्ताव रखा है कि उसे चार मैचो की मेजबानी दे दी जाए।

भारत तीसरे स्थान पर खिसका

● आईसीसी रैंकिंग

● ऑस्ट्रेलिया शीर्ष पर बरकरार

भाषा। दुबई

भारत अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की गुरुवार को जारी नवीनतम रैंकिंग में पाकिस्तान के बाद तीसरे स्थान पर खिसक गया जबकि ऑस्ट्रेलिया पहले पायदान पर बरकरार है। रैंकिंग में वार्षिक अपडेट के बाद पांच बार के विश्व चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया ने अपनी रेटिंग में पांच अंक का सुधार किया। टीम के नाम अब 118 रेटिंग अंक हैं। पाकिस्तान 116 रेटिंग अंक के साथ दूसरे और भारत 115 रेटिंग अंक के साथ तीसरे स्थान पर है। आईसीसी की विज्ञप्ति के मुताबिक, वार्षिक अपडेट से पहले ऑस्ट्रेलिया 113 अंक के साथ शीर्ष पर था और दशमलव के अंतर में भारत दूसरे स्थान पर था। पाकिस्तान 112 अंक के साथ तीसरे स्थान पर था लेकिन न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच मैचों की श्रृंखला के चौथे एकदिवसीय में जीत के बाद वह कुछ समय के लिए शीर्ष पर पहुंचा था। पाकिस्तान अगर पांचवें एकदिवसीय मैच को जीत लेता तो वह तालिका में शीर्ष पर बरकरार रहता लेकिन न्यूजीलैंड ने इस मुकाबले को जीत कर उसे सूपड़ा साफ करने से रोक दिया। आईसीसी की वार्षिक रैंकिंग में मई 2020 से पूरी हुई सभी एकदिवसीय श्रृंखलाओं को शामिल किया गया है। इसमें मई 2022 से पहले पूरी हुई श्रृंखलाओं के लिए 50 अंक प्रतिशत दिए गए हैं जबकि इसके बाद की सभी श्रृंखलाओं को 100 अंक प्रतिशत दिए गए हैं। आईसीसी ने कहा, इसका मतलब यह हुआ कि पाकिस्तान की इंग्लैंड के खिलाफ 0-4 की हार के अंक को इस रैंकिंग से हटा दिया गया जबकि 2021 में इसी टीम के खिलाफ मिली 0-3 की शिकस्त का 50 प्रतिशत रेटिंग अंक ही गणना में आया। भारत को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ।-2 की हार का खामियाजा इस रैंकिंग में भुगतना पड़ा। न्यूजीलैंड (104) इस रैंकिंग में चौथे जबकि इंग्लैंड 10 रेटिंग अंक के नुकसान के साथ पांचवें स्थान पर है। उसके नाम 101 रेटिंग अंक है।

आत्मविश्वास से भरे इंडियन्स व टाइटंस के बीच रोमांचक मुकाबले की उम्मीद

भाषा। मुंबई

आत्मविश्वास से भरी मुंबई इंडियन्स की टीम इंडियन प्रीमियर लीग के महत्वपूर्ण मुकाबले में शुक्रवार को यहां जब अंक तालिका में शीर्ष पर चल रहे गत चैंपियन गुजरात टाइटंस के सामने होगी तो दोनों के बीच रोमांचक मुकाबले की उम्मीद है। आईपीएल के मौजूदा सत्र में पहली बार मुंबई इंडियन्स की टीम प्रभावी नजर आ रही है और मंगलवार को यहां रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) को छह विकेट से हराकर अंक तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गई। मुंबई ने आरसीबी के 200 रन के लक्ष्य को 17 ओवर के भीतर ही हासिल कर लिया जो दर्शाता है कि टीम का बल्लेबाजी क्रम कितना मजबूत है। टीम ने हालांकि नेट रन रेट में इजाफा करने के लिए लगातार दूसरे मैच में बल्लेबाजी क्रम में बदलाव किया। टीम के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज

और कप्तान रोहित शर्मा खराब फॉर्म से जूझ रहे हैं और पिछली पांच पारियां में दोहरे अंक में भी पहुंचने में नाकाम रहे हैं लेकिन इसके बावजूद मुंबई के बल्लेबाजों ने वानखेड़े स्टेडियम में तीन प्रयास में दो बार 200 या इससे अधिक के लक्ष्य को हासिल किया। यहां तक कि पंजाब किंग्स के खिलाफ भी मुंबई ने 215 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए छह विकेट पर 201 रन बनाए थे। मुंबई के लिए मौजूदा सत्र में सबसे बड़ी चिंता रोहित की फॉर्म नहीं बल्कि टीम की गेंदबाजी है। टीम के खिलाफ लगातार चार मैच में 200 से अधिक रन बने जबकि आरसीबी की टीम भी 199 रन बनाने में सफल रही। पिछले तीन मैच में विरोधी टीमों ने सपाट विकेट और बल्लेबाजी के अनुकूल हालात का फायदा उठाते हुए मुंबई इंडियन्स के खिलाफ आठ विकेट पर 214, सात विकेट पर 212 और छह विकेट पर 199 रन बनाए और गुजरात टाइटंस की नजरें भी बड़े स्कोर पर टिकी होंगी।

दीपक, हुसामुद्दीन व निशांत की नजरें फाइनल में

● मुक्केबाजी विश्व चैंपियनशिप

भाषा। ताशकंद

दीपक भोरिया (51 किग्रा), मोहम्मद हुसामुद्दीन (57 किग्रा) और निशांत देव (71 किग्रा) की तिकड़ी मुक्केबाजी विश्व चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में शुक्रवार को यहां रिंग में उतरेगी तो उसकी कोशिश भारत के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को और बेहतर करने की होगी। इन तीनों मुक्केबाजों ने सेमीफाइनल में पहुंच कर पहले ही कांस्य पदक सुनिश्चित कर लिए हैं। पदकों के संख्या के लिहाज से यह भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। भारतीय मुक्केबाजों के लिए अच्छी बात यह भी है कि तीनों पदक ओलंपिक श्रेणी में सुनिश्चित हुए हैं। सितंबर अक्टूबर में एशियाई खेलों का आयोजन होना है, जो ओलंपिक क्वालीफाइंग टूर्नामेंट होगा। अमित पंघाल (रजत पदक) 2019 में फाइनल में पहुंचने वाले भारत के पहले पुरुष मुक्केबाज बने थे और अब दीपक, हुसामुद्दीन और निशांत के पास पंघाल की बराबरी और उनसे बेहतर करने की चुनौती है। यह हालांकि इतना आसान नहीं होगा क्योंकि फाइनल में जगह पक्की करने के लिए तीनों को मुश्किल चुनौती का सामना करना होगा। दीपक के सामने विश्व चैम्पियनशिप के दो बार के पदक विजेता बिलाल बेनामा की चुनौती होगी। फ्रांस के बेनामा यूरोपीय चैम्पियन है और वह भी अपने दो कांस्य पदक के रंग को बदलने के लिए आतुर होंगे। हुसामुद्दीन क्यूबा के साइडेल होर्टा से भिड़ेंगे। होर्टा ने क्वार्टर फाइनल में विश्व और एशियाई चैम्पियनशिप के रजत पदक विजेता शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी सेरिक तेमिरझानोव को हराया था। निशांत फाइनल में जगह बनाने के लिए कजाखस्तान के एशियाई चैंपियन शिमबेरगेनोव से भिड़ेंगे ।यह दीपक के लिए शानदार मौका है कि वह दुनिया के पूर्व नंबर एक पंघाल के रजत पदक जीतने के कारनामे को दोहराएं या बेहतर करें। पंघाल लंबे समय से इस भार वर्ग में पहली पसंद रहे हैं। दीपक का पहला बड़ा पदक 2019 एशियाई चैंपियनशिप में आया था। उन्होंने वहां रजत पदक जीता था। वह 2021 में प्रतिष्ठित स्ट्रैंड्जा मेमोरियल टूर्नामेंट में उपविजेता रहे। इस 25 साल के मुक्केबाज ने 2021 और 2023 के राष्ट्रीय खिताब जीते और नए चयन मानदंडों के आधार पर उन्हें इस टूर्नामेंट के लिए पंघाल की जगह चुना गया।

ओलंपिक के लिए इंडोनेशियाई कोच की सेवाएं लेंगे श्रीकांत

भाषा। नई दिल्ल

पेरिस ओलंपिक को ध्यान में रखकर भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी किदाम्बी श्रीकांत ने इंडोनेशिया के कोच विम्पी नाहार्डी की सेवाएं लेने का फैसला किया है। पेरिस ओलंपिक 2024 की क्वालीफिकेशन अवधि एक मई से शुरू हो रही है। खराब फॉर्म से जूझ रहे श्रीकांत ने अपने खेल में सुधार के लिए यह फैसला लिया है। मैं दिसंबर 2021में एगस के जाने के बाद से एक कोच की तलाश में था। अब मेरे पास इंडोनेशियाई कोच विम्पी नाहार्डी हैं। मैं उनसे तब मिला था जब तीन सप्ताह के लिए इंडोनेशिया गया था। वह अप्रैल के आखिरी सप्ताह में भारत आ गए हैं। इंडोनेशिया के एगस द्वि संतोसो के जाने के बाद से भारतीय पुरूष एकल टीम के पास विदेशी कोच नहीं है। पी वी सिंधू ने फरवरी में पार्क ताए सांग से अलग होने का फैसला किया जो पुरूष एकल खिलाड़ियों की भी मदद कर रहे थे। मैं टॉप्स के जरिए कोच की सेवाएं लेना चाहता था लेकिन यह हो नहीं सका। मैने जनवरी में साइ को प्रस्ताव भेजा जिस पर कोई अमल नहीं हुआ। ओलंपिक क्वालीफिकेशन अवधि शुरू होने के कारण अब मैं और इंतजार नहीं कर सकता तो मैने खुद की कोच की सेवाएं लेने का फैसला किया।

दिलेरी और असाधारण कौशल शमी को बनाती है खास गेंदबाजः सोलंकी

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की टीम गुजरात टाइटंस के निदेशक विक्रम सोलंकी ने अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी की तारीफ करते हुए कहा कि असाधारण कौशल के साथ दिलेरी उन्हें इस प्रारुप में विशेष बनाती है। शमी 11 मैचों में 19 विकेट के साथ इस साल सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले शीर्ष गेंदबाजों में शामिल है। सोलंकी ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच की पूर्व संध्या पर कहा, गेंदबाजों के लिए इस समय (आईपीएल) मुश्किल है। विकेट बल्लेबाजी के लिए बेहतर हैं, बल्लेबाज आसानी से बाउंड्री लगा रहे है। जहां तक हमारी गेंदबाजी का सवाल है तो हमारे पास मोहम्मद शमी के नेतृत्व में एक बहुत ही अनुभवी समूह है और वह बाकी खिलाड़ियों और दूसरी टीमों उदाहरण प्रस्तुत करता है।

एशियाई कप फुटबॉल में भारत की मुश्किल राह, ऑस्ट्रेलिया के साथ ग्रुप बी में

दोहा। एएफसी एशियाई कप (जनवरी 2024) में भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम को गुरुवार को कठिन ग्रुप बी में जगह मिली जिसमें ऑस्ट्रेलिया, सीरिया और उज्बेकिस्तान जैसे दमदार टीमें है। यह पहली बार है जब भारत ने इसके लगातार दो सत्र के लिए क्वालीफाई किया है। टीम पांचवीं बार इसमें हिस्सा लेगी। फीफा (फुटबॉल की वैश्विक संचालक) रैंकिंग में भारत 101वें स्थान पर है जबकि ऑस्ट्रेलिया 29वें, उज्बेकिस्तान 74वें और सीरिया 90वें पायदान पर है। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ के अध्यक्ष कल्याण चौबे, सीनियर पुरुष राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच इगोर स्टिमक और महिला टीम की राष्ट्रीय कोच मेमोल रॉकी आधिकारिक ड्रॉ समारोह के आयोजन स्थल पर मौजूद थे। ड्रॉ से पहले एशियाई फुटबॉल महासंघ के अध्यक्ष शेख सलमान बिन इब्राहिम अल खलीफा ने कहा, कतर में पिछली बार 12 साल पहले इस टूर्नामेंट को खेला गया था। हमने तब से अब तक काफी सुधार किया है।

लखनऊ करेगा द्वितीय राष्ट्रीय हैपकिडो चैंपियनशिप की मेजबानी

● 20 से 22 मई 2023 तक होगा भव्य आयोजन

लखनऊ। नवाबों का शहर लखनऊ दक्षिण कोरिया की परंपरागत मार्शल आर्ट हैपकिडो की राष्ट्रीय प्रतियोगिता की मेजबानी करेगा। यहां द्वितीय राष्ट्रीय हैपकिडो चैंपियनशिप.2023 का आयोजन 20 से 22 मई 2023 तक होगा। इस चैंपियशिप के सुचारु आयोजन के लिए गठित आयोजन समिति की केडी सिंह बाबू स्टेडियम में बुधवार को हुई बैठक में आयोजन को लेकर रुपरेखा तैयार की गई। चैंपियनशिप की आयोजन समिति के चेयरमैन श्री सुधीर गर्ग ;वरिष्ठ आईएएसद्ध बनाए गए है। लखनऊ के नगर आयुक्त श्री इंद्रजीत सिंह व जेबीआर होटल्स के चेयरमैन विवेक सिंह को वाइस चेयरमैन बनाया गया है। आयोजन सचिव हैपकिडो एसोसिएशन इंडिया के अध्यक्ष डाण्आनन्देश्वर पाण्डेय होंगे। इसके अलावा विनय कुमार सिंह को कोषाध्यक्ष बनाया गया है। सुधीर गर्ग वरिष्ठ आईएएस व डाण्आनन्देश्वर पाण्डेय ने बताया कि हैपकिडो एसोसिएशन इंडिया के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश हैपकिडो एसोसिएशन द्वारा आयोजित की जाने वाली इस चैंपियनशिप के मुकाबले आगामी 20 से 22 मई 2023 तक केडी सिंह बाबू स्टेडियम के बहुउद्देश्यीय हाल में आयोजित किए जाएंगे।आयोजन समिति के चेयरमैन श्री सुधीर गर्ग ;वरिष्ठ आईएएसद्ध ने कहा कि यूपी के लिए ये गर्व का विषय है कि यहां द्वितीय राष्ट्रीय हैपकिडो चैंपियनशिप होगी जिसमें कई राज्यों के खिलाड़ी प्रतिभाग करेंगे। हम इस चैंपियनशिप के सफल आयोजन में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। आयोजन सचिव डाण्आनन्देश्वर पाण्डेय ने बताया कि चैंपियनशिप के सफल आयोजन के लिए तैयारी चल रही है और उत्तर प्रदेश चैंपियनशिप की सफल मेजबानी के लिए तैयार है। जिसमें विभिन्न प्रदेश इकाइयों के लगभग 200 खिलाड़ी अपने हुनर का प्रदर्शन करेंगे।

अतनु और मेहुली फिर टॉप्स में शामिल, तिलोतमा सेन को डेवलपमेंट ग्रुप में जगह

नई दिल्ली। ओलंपियन और विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता तीरंदाज अतनु दास को घरेलू स्तर और इस साल अंताल्या में तीरंदाजी विश्व कप में प्रभावी प्रदर्शन के बाद दोबारा टारगेट ओलंपिक पोडिम योजना (टॉप्स) में शामिल किया गया है। पुरुष रिकर्व व्यक्तिगत रैंकिंग में 673 अंक के साथ चौथे स्थान पर रहे अतनु ने लगभग डेढ़ साल बाद अंतरराष्ट्रीय आउटडोर प्रतियोगिता में वापसी की। इसके अलावा महिला राइफल निशानेबाज मेहुली घोष और 15 साल की तिलोतमा सेन को भी टॉप्स में शामिल किया गया है। मेहुली ने इस साल राष्ट्रीय निशानेबाजी ट्रायल में 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा जीती। तिलोतमा ने सीनियर सर्किट में पदार्पण करते हुए इस साल काहिरा विश्व कप में 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा का कांस्य पदक जीता। वह जूनियर विश्व चैंपियनशिप में व्यक्तिगत कांस्य और टीम स्वर्ण पदक भी जीत चुकी हैं।

दिव्या और सरबजोत का स्वर्णिम निशाना

● बाकू विश्व कप मे मिश्रित टीम पिस्टल स्पर्धा

भाषा। बाकू (अजरबेजान)

दिव्या सुब्बाराजू थाडिगोल और सरबजोत सिंह की भारतीय जोड़ी ने गुरुवार को यहां आईएसएसएफ निशानेबाजी विश्व कप में 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा का स्वर्ण पदक जीतां। इससे पहले काहिरा और भोपाल में विश्व कप चरण में दूसरे स्थान पर रही भारतीय जोड़ी ने स्वर्ण पदक के मुकाबले में सर्बिया के जोराना अरुनोविच और दामिर मिकेच की जोड़ी को 16-14 से हराया। प्रतियोगिता के दूसरे दिन भारतीय जोड़ी ने 55 टीम के क्वालीफिकेशन में 581 अंक के साथ शीर्ष पर रहते हुए स्वर्ण पदक के मुकाबले में जगह बनाई और पदक सुनिश्चित किया। क्वालीफिकेशन में तीन जोड़ियों का स्कोर 581 था लेकिन दिव्या और सरबजोत 10 अंक के अंदरूनी हिस्से में 24 निशाने लगाकर शीर्ष पर रहे। दामिर और जोराना की जोड़ी 10 अंक के अंदरूनी हिस्से में 19 निशाने लगाकर दूसरे जबकि तुर्की की जोड़ी 16 निशाने लगाकर तीसरे स्थान पर रही। भारतीय जोड़ी ने फाइनल की शुरुआत पहली सीरीज में 10.5 अंक के दो समान स्कोर के साथ करते हुए 2-0 कर बढ़त बनाई। हालांकि इसके 13 सीरीज के बाद दोनों जोड़ियां 14-14 से बराबर थीं। पंद्रहवीं सीरीज के विजेता के नाम खिताब होना था। सरबजोत ने 10.6 के शानदार स्कोर से शुरुआत की जबकि दिव्या ने 9.9 अंक जुटाए। दामिर ने 10.3 अंक से सर्बिया की जोड़ी की उम्मीद जगाई लेकिन जोराना 8.6 अंक ही जुटा सकीं जिससे भारतीय जोड़ी ने स्वर्ण पदक जीता। सरबजोत ने लगातार दूसरे आईएसएसएफ विश्व कप में स्वर्ण पदक जीता। इससे पहले मार्च में उन्होंने भोपाल में व्यक्तिगत एयर पिस्टल का स्वर्ण पदक अपने नाम किया था। दिव्या का इस स्तर पर सीनियर वर्ग का यह पहला पदक है। सिमल यिलमाज और इस्माइल केलेस की तुर्की की जोड़ी ने सारा कोस्टेनटिनो और पाउलो मोना की इटली की जोड़ी को 17-9 से हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया।